आजी माँ

श्रीरामदेवझा

आजीमाँ चरित्रप्रधान कथा अछि । कथामे घटना सब छैक, आजीमाँक उदारताक रहस्योद्घाटन छैक, प्रारम्भ, मध्य आ अन्त छैक । संरचनाक दृष्टिसँ कथामे जीवनक एकटा कतरा मात्र नहि छैक, एकटा सम्पूर्ण जीवने छैक जकरा कथाक छोट जमीनमे कलात्मकताक संग विन्यस्त कयल गेलैक अछि । कथा एकटा उपन्यासक 'सिनोप्सिस' जकाँ छैक । प्रसिद्ध अंग्रेज कथाकार समरसेट मॉम एहने झमटगर कथा लिखैत छलाह – चरित्र केन्द्रित, नाम, गाम, ठाम आ घटना बहुल कथा लिखबाक प्रसंग ओ चेखवसँ ठीक उनटा बात कहने छथि । ओ कहैत छथि, "A short story should be a finished work of art" (कथामे आदि, मध्य आ अन्त रहबाक चाही जाहिसँ कलाकृतिमे पूर्णताक बोध हो) । श्रीरामदेवजीक अनेक कथा मॉमक कथाकारितासँ मिलैत छनि, कम-सँ-कम **आजीमाँ** तँ अवश्य ।

श्रीरामदेवजीक एहि कथा संग्रहमे विषयक विविधता अछि जे रोमांचित करैत अछि, पाठकक मर्मकेँ छुबैत अछि । हिनक कथाक दृष्टि स्थूलसँ लऽ कऽ सूक्ष्मतम विषय धरि दौड़लनि अछि, एहिमे कतहु उपन्यास जकाँ जीवनक व्यापकता भेटैत अछि तँ कतहु जीवनक किछु पल ओ क्षण मात्रक कलात्मक चित्रण भेल अछि जे मानस पटलपर जा कऽ अंकित भऽ जाइत अछि ।

श्रीरामदेवजीक कथा हमरा कोनो आयातित रूप-रेखा (model)क आधारपर रचित नहि लगैत अछि । कथा सबमे गाम घरक परिवेशमे अहाँकेँ निम्न, मध्य वर्ग आ सर्वहारावर्गक पात्र भेटत। नगरीय संस्कृति आ परिवेशसँ ई पात्र आ कथा-स्थिति कम चुनैत छथि । सर्वहारा वर्गक पात्र आ परिवेशसँ हिनका ओहने लगाव छनि जेना ललितकेँ रहनि । हिनक कथा-विषय आ वर्णनक दृष्टिसँ सर्वथा सुरुचिपूर्ण अछि । संग्रहमे एहन कोनो कथा नहि जकरा पढ़ि मनमे जुगुप्साक भाव उत्पन्न [illegible] हो ।

प्रो. श्री रमाकान्तमिश्र

आजी माँ

श्रीरामदेवझा



मिथिला रिसर्च सोसाइटी
दरभंगा

Āj ī Mā̃ : A Collection of Maithili Stories
by **Shree Ramdeo Jha**

प्रकाशक - **मिथिला रिसर्च सोसाइटी**
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001

वितरक - **श्रीशंकरदेवझा**
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001
दूरभाष- 06272-245223
मोबाइल- 9430639249

संस्करण - 2009 इ.

मूल्य - **150/-**

मुद्रक - **प्रिंटवेल**
टावर, दरभंगा

भूमिका

भूमिकाकेँ 'मधुमती' होयब भूमिका लेखकक नैतिक दायित्व । भूमिका, आलोचना नहि हो, समीक्षा भऽ सकैछ । अपनाकेँ भूमिका-लेखकक भूमिकामे पाबि, लगैछ जेना साँढ़क दुनू सींघक बीचमे फँसि गेल होइ । (Between the horns of dilemma) । ताहूमे श्रीरामदेवजी सन विशिष्ट विद्वान् कथाकारक कथा-संग्रहक भूमिका लिखब तँ आओर कठिन ।

श्रीरामदेवजी मैथिलीक विशिष्ट कोटिक शोधकर्त्ता, भाषाविद्, पंडित प्राध्यापक आ सर्जनात्मक प्रतिभासँ सम्पन्न साहित्यकार छथि । रमानाथबाबू शोधकार्य कयलनि, आलोचना, समीक्षा आ सम्पादनक कार्य कयलनि मुदा, सर्जनात्मक साहित्यक रचना नहि कयलनि । श्रीरामदेवजी रमानाथबाबूक, उपर्युक्त सब प्रकारक कार्य करबाक अतिरिक्त, साहित्यमे मौलिक सर्जनक कार्य सेहो कयलनि अछि ।

प्रस्तुत पोथी हुनक कथाक चारिम संग्रह थिकनि । ओ नाटक सेहो लिखने छथि आओर ओहिपर साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृतो भेल छथि । किछु कवितो कयने छथि मुदा, जाहि एक विधामे मौलिक रचना अपना रुचिसँ कयलनि ओ कथे अछि ।

श्रीरामदेवजी विगत शताब्दीक छठम दशकसँ अर्थात् 1950क बाद लिखऽ लागल रहथि, ओही समयसँ जहिया ललित, राजकमल आ मायानन्द लिखलनि । कालक दृष्टिसँ ई, मैथिलीक ओहि दिग्गज कथाकार लोकनिक समकालीन छथि । छठम दशकमे ललितक कथाक सुवास मैथिलक छोट-छीन फुलवारीक (मिथिलामिहिर, वैदेही) कोन-कोनमे पसरि गेल रहैक । श्रीरामदेवजी ओही कालावधिमे कथा लिखऽ लगलाह । एतऽ एकटा बात स्पष्ट कऽ दी जे ओहि कालमे मैथिलीक सर्जनात्मक साहित्यक फुलवारी बड़ छोट छलैक । जे एक-दूटा कथाकार, पाठकक रुचिक खुट्टीपर लटकि गेलाह तनिके नोटिस लेल जाइत रहलनि । ओही अवधिमे कथाक मंचपर सहसा कल्पनाशरणक **रंगीन परदाक** विस्फोट भेल । लगलैक जेना लिलीरेक ओहि कथासँ कथाक परिदृश्ये बदलि गेल होइक । मैथिली कथाक पाठक मध्य **रगीन परदोक** धूम मचि गेलैक आ लोक

(पाठक) ओही कथाक सामिष सामग्रीक सन कथाक पुन: परिवेशनकलेल लालायित भऽ गेल । पश्चात् जखन राजकमल ओहि प्रकारक सामिष कथा परसऽ लगलाह तँ ओहिसँ धर्म-कर्म आ शालीनतामे आस्था रखनिहार वयसगर पाठकक भावना आहत भेलैक । ललित सेहो **मुक्ति** लिखलनि आ ताहूपर टीका-टिप्पणी होअऽ लगलैक । ललित आ राजकमलक बीच प्रछन्नरूपक प्रतिद्वन्द्विता चलैत छलनि, ओना दुनू गोटे एक-दोसरक प्रतिभाक कायल छलाह जकर साक्षी हम स्वयं छी । ललितक **मुक्तिक** उत्तरमे राजकमल **फुलपरासवाली** लिखलनि । कोनो कथाक लोकप्रियताक एकटा 'पोख्ता' कारण अवस्से रहैत छैक । ललितक कथा सब (**रमजानी, कंचनियाँ**, ओ **ओभरलोड**) किएक हिट भेलनि ? तँ तकर कारण तँ ठेकनाबहिँ पड़त । 'रंगीन परदा'कें ख्याति, सामन्ती समाज मध्य पसरल भ्रष्ट यौनाचार (सासु-जमायक बीच 'सेक्स') विषयकेँ मंच मध्य (Centre stage) करबासँ भेटलैक । अन्यथा एहि कथामे, ओहि निषिद्ध विषयक अतिरिक्त संरचनाक ओ सब गुण कहाँ छैक जाहि कारणेँ **रमजानी ओभरलोड** आ **कंचनियाँ** पाठककेँ ओतेक नीक लगलैक ? गम्भीर भऽ कऽ पढ़बैक तँ ओतऽ एकटा सपाट आख्यान छोड़ि किछु नहि भेटत । ई कथा किछु वर्गक पाठकक नैसर्गिक पशुत्व भावकेँ गुदगुदबैत छैक । अर्थात् लोक सेक्से-केन्द्रित कथाकेँ चीखि-चीखि कऽ पढ़ैत अछि ।

ललितक कथा संसारमे सामन्त आ यौन नहि छनि । हुनक कथाक पात्र सब सर्वहारा वर्गक अछि, दलित-वंचित वर्गक अछि; जतऽ पसेनाक गन्ध छैक, संडासक गन्ध छैक, इत्र-फुलेलक नहि । हुनक कथामे आधुनिक कथाशैलीक ओ सब गुण अछि जाहि लऽ कऽ रूसी कथाकार चेखव आ फ्रांसीसी कथाकार मोपासाँ ओतेक प्रसिद्धि पौलनि । उपर्युक्त ई दुनू विदेशी कथाकार आख्यायिका किसिमक कथा नहि लिखलनि जाहि मध्य पात्रक परिचयक अतिरिक्त आदि, मध्य आ अन्त रहैत छैक । चेखव अपन कथाकेँ "Slice of Life" - **जीवनक एकटा कतरा** कहैत छलाह । हुनक कथामे भूमिका नहि रहैत छनि । ओ, सोझे-सोझ अपन कथा-संभार (Story's burden) अर्थात् कथ्यकेँ पाठकक समक्ष रखबामे विश्वास रखैत छलाह । हुनक कथामे अनावश्यक वर्णन-विवरण नहि भेटत । कथा विधापर विचारक कोनो अवसरपर चेखब कहने छथि जे कथामे वर्णन मध्य लेखक जँ बन्दूकक उल्लेख कयने छथि तँ ओहिसँ कखनहुँ गोली छूटब आवश्यक छैक । मोपासाँक विधि सेहो चेखवे सन छलनि, फरक एतबहि जे मोपासाँक कथामे अहाँकेँ चौकाबऽवला अन्त (Surprise ending) भेटत । जे पाठक बी.ए.मे मोपासाँक **दि नेकलेस** कथा पढ़ने होयताह से एहि तथ्यक जाँच करथु । ललितक कथामे सेहो बात चेखबेवला सोझे विषयपर आबि जायवला (directness) विधि भेटत । हुनकहुँ कथामे चेखबे जकाँ भूमिका बान्हब नहिएँ-ना छनि । हुनकहि जकाँ ललितक कथा सेहो आख्यायिका (Pure narrative) नहि अछि । बस, जीवनक एकटा कतरा (slice) अछि । चेखवे जकाँ ललितोक कथामे दलित-वंचित वर्गक सुख-दुखक कथा अछि । चेखव, अपन कथाकेँ

प्रयत्नपूर्वक रोचक नहि बनबैत छथि । हुनक कथा कतहुसँ उपदेशमूलक (Parable like) नहि अछि । ललितोक कथा उपर्युक्त दुनू विदेशी कथाकार जकाँ संक्षिप्त (brief) अछि ।

कथा विधा, आधुनिक स्वरूपमे – आकार, संरचना आ उपस्थापन शैलीक दृष्टिसँ मूलरूपमे पाश्चात्य अछि । प्राच्य आ पाश्चात्य दुनू ठामक लोककथा (folklore), नीतिकथा (parable), मानव-मानवेतर पात्रवला उपदेश मूलक कथा (Fable) समाने रूपक छैक ।

मायानन्दमिश्रक कथाक संरचना ललितसँ भिन्न छनि से नहि, मुदा, ललित जतऽ, कथास्थिति आ पात्र, सर्वहारा समाजसँ बिछने छथि (**रमजानी, कंचनियाँ, ओभरलोड**) ओतहि, मायानन्दमिश्र निष्ठा आ यथार्थक अनुभूतिक आधारपर अपन कथाक पात्र आ परिवेश, गृहस्थक परिवार आ दाम्पत्य जीवनक तीत-मीठ अनुभवसँ तकने छथि । विडम्बना आ करुणा (Irony & Pathos) जहिना ललितक कथामे भेटत (कंचनियाँ) तहिना मायानन्दोक कथामे । मायानन्द भाषाक प्रति सचेत छथि । कवि भावेँ हिनक भाषा कने-मने अलंकार युक्त अछि । ललितक भाषामे अहाँकेँ कविताक लेसो नहि भेटत ।

विषयक दृष्टिसँ ललित आ मायानन्दक कथा जतऽ सर्वथा संयत आ शालीन छनि ओतहि राजकमलक कथामे एहन कोनो कथा नहि छनि जतऽ 'सेक्स' माँझेठाम नहि होइन । राजकमलक कथामे, संरचनाक दृष्टिसँ, हमरा चेखब आ मोपासाँ नहि भेटैत छथि । हुनक कथाक विषय आ शैली अपनहिँ ढंगक आ बेछप छनि । पात्रक दृष्टिसँ हिनक कथामे स्त्रीपात्रक प्रधानता अछि । भाषाक स्वरमे, गम्भीरताक स्थानपर उपहास आ हास्य अछि । हिनक विषय 'सेक्स' निर्भीक तँ अछिए । राजकमल जानि-बूझि कऽ अपन कथाकेँ सनसनीखेज (Sensational) बनौने छथि । हुनक कथाक उद्देश्य पाठककेँ क्षुब्ध (shocked) आ चकित (surprise) करब रहलनि । 'सेक्स'क बर्जित क्षेत्रक विषयकेँ छोड़ि, हुनक कथामे, मानव मनक कोमल भाव आ सामाजिक आन कोनो समस्या आ सरोकारक भाव नहि अछि । हुनक **साँझक गाछ** कथा अछिओ वा नहि ताहिमे हमरा सन्देह अछि । ओ, विषयक दृष्टिसँ उत्तेजक कथा लिखबामे रुचि रखैत छलाह । ओ मानव मनक निषिद्ध क्षेत्रमे विचरण करऽवला, इतर ब्याजेँ पाखण्डकेँ देखार करऽवला, देहगाथा गावऽवला मूर्त्तिभंजक (iconoclastic) कथाकार छलाह । मुदा उपर्युक्त सब आपत्तिक अछैत, लोकप्रियताक ग्राफमे जतेक ऊपर राजकमल गेलाह ततेक मैथिलीक आन कोनो कथाकार नहि ।

समयक दृष्टिसँ श्रीरामदेवजी विगत शताब्दीक पचाससँ साठिक दसकक कथाकार छथि जाहि समयमे ललित, मायानन्द आओर राजकमल लिखब सुरू कयने रहथि । यद्यपि 1953-54मे लिखल हिनक किछु आरम्भिक कथा **मुदा आब की ?, दू ठोप नोर, माय भूख लागल** अछि जे एहि संग्रहमे संकलित अछि से कथा संरचनाक दृष्टिसँ खिच्चा

आ भावुक अछि । तथापि एकर अपन महत्त्व छैक । मुदा एही दसकमे श्रीरामदेवजीक बहुतो कथा सब अयलनि जे हिनका चर्चित बनौलकनि जेना **भैया** (वैदेही, मइ 1956), **पथ-पाँतर** (मिथिला दर्शन, अगस्त 1956), **पहुना** (वैदेही, अगस्त 1957), **नकली कनिआँ : नकलीआदमी** (वैदेही, सितम्बर 1959), **एक खीरा : तीन फाँक** (मिथिला दर्शन, 1960), **दुतिया चान : तुलसी दल** (मिथिला दर्शन 1960), **दोहरी दीप** (इजोत, 1960), **बट गाछक छाहरि** (अभिव्यंजना-1, 1960) इत्यादि । अवश्ये **एक खीरा : तीन फाँक** सन कथा जे मैथिलीक किछु उत्कृष्टतम कथा सबमे परिगणित कयल जाइछ ताहिसँ हिनक परिचिति एकटा परिपक्व कथाकारक रूपमे स्थापित भेलनि । एहि दसकक बाद श्रीरामदेवजी औरो जमि कऽ कथा सब लिखलनि जे **मनुक सन्तान, एक खीरा : तीन फाँक** आ **धरतीमाता** नामक संग्रह सबमे संकलित छनि ।

एहि संग्रहक कथासब-बेसी आठम आ नवम दशकक अछि आ तेँ औरो बेसी परिपक्व अछि ।

संग्रहक पहिल कथा **आजीमाँ** चरित्रप्रधान कथा अछि । कथामे घटना सब छैक, आजीमाँक उदारताक रहस्योद्घाटन छैक, प्रारम्भ, मध्य आ अन्त छैक । संरचनाक दृष्टिसँ कथामे जीवनक एकटा कतरा मात्र नहि छैक, एकटा सम्पूर्ण जीवने छैक जकरा कथाक छोट जमीनमे कलात्मकताक संग विन्यस्त कयल गेलैक अछि । कथा एकटा उपन्यासक 'सिनोप्सिस' जकाँ छैक । प्रसिद्ध अंग्रेज कथाकार समरसेट मॉम एहने झमटगर कथा लिखैत छलाह – चरित्र केन्द्रित, नाम, गाम, ठाम आ घटना बहुल कथा लिखबाक प्रसंग ओ चेखवसँ ठीक उनटा बात कहने छथि । ओ कहैत छथि, "A short story should be a finished work of art" (कथामे आदि, मध्य आ अन्त रहबाक चाही जाहिसँ कलाकृतिमे पूर्णताक बोध हो) । श्रीरामदेवजीक अनेक कथा मॉमक कथाकारितासँ मिलैत छनि, कम-सँ-कम **आजीमाँ** तँ अवश्य ।

संग्रहक दोसर कथा **शहीद चौक** अछि जाहि मध्य दूटा पात्र छैक बंगाली रिफ्यूजी चिन्तूदा आ शहीद चौक । कथामे चिन्तूदाक लहेरियासराय आगमन, सड़कक कातमे पत्नीक संग विश्राम, दूध बेचऽवला सब द्वारा चूड़ा-दहीसँ सत्कार, खोपड़ी बना कऽ निवास, झिल्ली-कचरी बेचब आ पश्चात् ओही ठाम 'स्वदेशी जलपान गृह' खोलि लेबाक विवरण छैक । चिन्तूदा अपन अतीतक कथाक प्रसङ्ग चुप्पे रहैत छथि, मुदा कखनहु काल काजी नजरुल इस्लामक क्रान्तिकारी गीत उच्च स्वरेँ गाबऽ लगैत छथि । घुरती साल, 15 अगस्त कऽ ओ चौकक बीचमे बाँस गाड़ि गान्धी, नेहरू आ सुभाषचन्द्रबोसक फोटो लटका दैत छथि आ ओकर नाम 'शहीद चौक' रखैत छथि । किछु दिन बाद जखन चिन्तूदा, अपनाकेँ आश्वस्त अनुभव करऽ लगैत छथि तखनहिँ आपातकालक समयमे एक दिन मुनिसपल अधिकारी हुनक खोपड़ी आ जलपानगृह

उजाड़ि दैत छनि । एकबेर फेर चिन्तूदा रिफ्यूजी भऽ कतऽ विलीन भऽ जाइत छथि से ककरहुँ पता नहि चलैत छैक । कथाक अन्तमे लेखकक व्यंग्यभावक प्रश्न छनि जे 'शहीद चौक' नामक पाछाँ तात्पर्य की ? एहि चौकपर चिन्तूदाक कोनो स्वजन वा बन्धु तँ नहि शहीद भेल छलनि ? निर्जीव खोपड़ी तँ शहीद नहि होइत छैक ? तखन 'शहीद चौक' कोना ? असलमे चिन्तूदा एहि चौकक नाम 'शहीद चौक' बंगालक क्रान्तिकारी सभक स्मृतिमे वा अपन ओहि स्वजन सभक स्मृतिमे रखने छलाह जकरा सबकेँ मुसलमान दंगाइ सब मारि देने छलनि । तकरो जाय दियौक, की, एकटा विपन्न आ असहाय शरणार्थी–दम्पतीक आवास आ जीविकाकेँ निर्ममतापूर्वक नष्ट कऽ देब ओहि व्यक्तिक जीवनेकेँ नष्ट कऽ, ओकर शहीद बना देब नहि भेलैक ?

एहि ठाम कथाकारक इंगिति शहादतक तात्विक अर्थ दिस छनि । ई, चिन्तूदाक शहादतक कथा अछि नहि कि शहीद चौक वा कामर्सियल चौकक । कथामे जँ अन्तिम तीन चारि पाँती नहि रहितैक तँ वहुलांशमे विवरणात्मक ई कथा सत्यनारायणक कथा भऽ कऽ रहि जैतैक ।

पाश्चात्य आलोचक लोकनि कहैत छथि आ हमरो लोकनि बूझैत छिऐक जे कोनो कथा लिखबाक पाछाँ एकटा अवाध आतुरता (compelling orge /motive) रहब आवश्यक छैक । Elizabeth Bowen नामक एकटा कथा लेखिका एकरा कथाक Necessariness कहलनि अछि । ओ कहैत छथि– The first necessity of a short story is its necessariness.

सियावरमिश्र जमीन्दार छलाह । ओहि समयक सब जमीन्दार अंग्रेजक खैरखाह होइत छल । स्वतन्त्रताक आन्दोलन चलैत छलैक । अंग्रेज एस.पी. हिनको आन्दोलनकारी बूझि लठिया देलकनि । सियावरमिश्रक स्वाभिमान एहि रूपेँ आहत भेलनि जे ओ लहेरियासरायक एही टावर लग अंग्रेजसँ भीड़ गेलाह । ई स्वतन्त्रता आन्दोलनक पीठिकामे रचल देशप्रेमक कथा अछि । जाहि स्थलपर सियावरमिश्र विद्रोहक झण्डा बुलन्द कयने रहथि, पछाति ओहि ठाम ई टावर बनलैक । ई ओना एकटा सोझ साझ घटना प्रधान कथा अछि मुदा एकर रोचकता एकर विवरणे धरि सीमित नहि छैक ।

संग्रहक चारिम कथा **परस्पर** 1998 केर अछि, छोट मुदा मनोग्राही । इहो कथा अपन टुरनीपर मानवीय स्नेह–संवेदनाक एकटा बहुमूल्य हीरा जड़ने अछि । एकटा वयसाहु दम्पती, बससँ बेटाक ओतऽ राँची जा रहल छथि । बूढ़ीकेँ बूढ़ाक चिन्ता आ बूढ़केँ बूढ़ीक । पारस्परिक चिन्ता ई जे 'हिनका' सर्दी ने लगनि । रस्ता भरि एक–दोसरकेँ साल ओढ़बैत अबैत छथि । बहुलांश विवरणात्मक रहनहुँ कथा मनकेँ स्नेहक भावसँ तुष्ट करैत छैक ।

आधुनिक कथाक स्वरूप नित–नूतन होइत गेलैक अछि । कथा, सोझ–साझ

आख्यानसँ लऽकऽ **साँझक गाछ** सन गद्यालाप भऽ गेलैक अछि । कथामे कतहु वाचक स्वयं रहैत छैक तँ कतहुँ ओकर कैमरा (हम जे देखलियै से अहूँ देखू) कथाक विषय किछु भऽ सकैत छैक । कहि सकैत छी जे कथाक विषय अनन्त छैक– कूड़ेदानीसँ लऽ कऽ तारा धरि (from a dustbin to the stars) आ कथा कहबाक ढंग सेहो विविध । कथाक सफलताक कसौटी मात्र ओकर रोचकता आ ओकर पठनीयता (readability) छैक । जे कथा मानव मनकेँ भीतर धरि छूबय नहि से कथा कथा नहि । कथामे आब इहो आवश्यक नहि जे ओहिमे घटना वा दुर्घटना रहले ताकय । **परस्पर** मे कोनो घटना नहि, किछु विवरण मात्र छैक ।

मुदा, एहि संग्रहक सबसँ चममत्कारिक कथा हमरा **मकुआ छड़ी** लागल अछि । जीवनकालमे पत्नी अपन पतिसँ छड़ी छीनि लैत छथिन । पति कहैत छथिन जे– छड़ी रहैछ तँ सहारा रहैछ ।' एहिपर पत्नीक उत्तर होइत छनि जे– आब तँ हम अहाँक सहारा छी, तखन छड़ीक कोन काज ?' आ से कहि पत्नी सन्दूकमे छड़ीकेँ बन्द कऽ दैत छथिन । समय बीतैत छैक, धीयापूता बालिग होइत छनि आ बूढ़ी रोगग्रस्त भऽ मरि जाइत छथिन । बेटासब पिताकेँ श्मशान नहि जाय दैत छनि । प्रयत्नो करैत छथि तँ बोध होइत छनि जे रस्तामे कहूँ तलमला कऽ खसि ने पड़ी । छड़ी स्मरण भऽ अबैत छनि आ बूढ़ा छड़ी तकबाक लेल सन्दूक खोलैत छथि । पुतोहु सब अनुमान करैत छथिन जे बूढ़ी गहना–गुड़िया आ कैंचाक कोनो मोटरी तँ ने नुका कऽ रखने छलीह ? तावत बूढ़ाकेँ बुढ़ारीक सहारा, अपन छड़ी भेटि जाइत छनि आ ओ श्मशान दिस थाहि–थाहि विदा भऽ जाइत छथि ।

कथामे एकटा चमत्कारिक क्लाइमेक्स छैक । करुणाक लेल मकुआ छड़ी छैक । वाचकक अपन 'कमेन्ट्री' कतहु नहि छैक । एहन वस्तुनिष्ठ आ भावप्रवण कथा एहि संग्रहमे कोनो आन नहि अछि ।

चिन्हार गाम : अनचिन्हार लोक, पूर्ण परिचित स्थिति आ चरित्रपर लिखल एकटा प्रभावशाली मनोग्राही कथा अछि । भैयनि दीदी, बीसो वर्षक बाद नैहर अबैत छथि तँ गाम वैह रहनहुँ लोक आ परिवेश अनचिन्हार बुझाइत छनि । भातिजक धीया–पूताक संग गाम बूलऽ जाइत छथि तँ कुभेलिया धोबिन मन पड़ि अबैत छनि आ ओ अपन किशोरावस्थाक स्मृतिलोकमे चल जाइत छथि । अपन संगी सभक संग बेँग कूटि कऽ आ ओकरा कोहामे राखि कऽ कोना कुभेलियाक आँगनमे फेँकि आयलि रहथिन आ कुभेलिया कोना विखिन–बिखिनक गारिये नहि पढ़ने रहनि आँगनो आबि कऽ उलहन दऽ गेल रहनि । से मन पड़लनि दुरागमनक समय जखन कतका घरमे अनमनायल बैसल रहथि । कुभेलिया आयलि रहैक आ दुनू गोटे कोना गर्दनि पकड़ि कऽ कानल रहथि सेहो भैयनि दीदीकेँ मन पड़लनि ।

हमरहु एकटा पीउसि एहिना काज-करतेबतामे दस वर्षपर गाम अबैत छलीह आ कोनो टेल्हक हाथ पकड़ि आँगने-आँगन बूलि अबैत छलीह ।

पूर्वदीप्तिक उपयोगवला ई कथा हमरा बड़ रोचक, प्रतीति आ प्रीतिपरक लागल अछि ।

ढहैत पुरान घर सन कथा लिखबाकलेल एहि विषय कोटिक वस्तुक प्रचुर अनुभवक आवश्यकता छैक । एहन कथा वैह रचि सकत जकरा मठ, महन्थ, नव-पुरान कीर्त्तनक पद, ओकर गायन शैली आ संगीतसँ आत्मिक सम्बन्ध आ सम्पर्क रहल हो । एहि कथाक वर्णन-विवरणमे यथार्थक अनुकरण कलात्मक रूपेँ विन्यस्त छैक । जहिना बूढ़ भेलाक संग लोकक रुचि, प्रतिक्रिया आ आग्रह सेहो समय गुने ठमकि जाइत छैक तहिना ओ नव रुचिक प्रचलनकेँ अपन आचार-विचार ओ संस्कारपर प्रहार बूझऽ लगैत अछि । नव लोक बूढ़ भऽ जाइत छैक तहिना नव लोकक रुचिओ बदलैत छैक । एकरे कहैत छैक- generation gap अर्थात् नव आ पुरान पीढ़ीक बीचक अन्तर । पुरान पीढ़ीक लोककेँ अपन जुआनी कालक गीत, संगीत आ रागभास नीक लगैत छैक, लगनी, बटगवनी, पराती आ नचारीक रागभास नीक लगैत छैक मुदा नव लोककेँ फिल्मी गीत । कथा, मूलरूपमे विवरणात्मक रहितहु एहिमे गीत, संगीत आ एकटा मनोग्राही रूपक चल-चित्रात्मकता छैक । महनजीकेँ, जाहि प्रकारक कीर्त्तनक बोल आ लय-भाससँ रसोद्रेक होइत छलनि से, नवयुवक लोकनि द्वारा फिल्मी गीतक तर्जपर गाओल गीतसँ नहि होइत छनि । महनजीक मन जतऽ भगवत भक्तिसँ विह्वल होइत छलनि ओतहि आजुक युवक अपन मनकेँ भाँग-गाँजासँ आकुल-व्याकुल कऽ लैत अछि । तेँ महनजी उदास भऽ जाइत छथि । एहि कथाक संसार एकटा विरल आ विशिष्ट कोटिक अनुभवक संसार अछि, रोचक आ सर्वथा प्रभावपूर्ण ।

विद्यार्थी तेज अछि, भोँथ अछि वा भुसकौल अछि तकरा पाछाँ अनेक कारण भऽ सकैछ- शारीरिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, गलत संगति इत्यादि । ई अनुभव प्रत्येक शिक्षककेँ भेल होयतनि जे, उपर्युक्त कोनो कारणे, किछु विद्यार्थी स्कूल छोरुआ (school dropouts) भऽ जाइत अछि । एहिमे किछु गुण्डा, सीटी बॉस वा डौन (Don) बनि कऽ प्रचुर रूपेँ धनोपार्जन करबामे सेहो सक्षम भऽ जाइत अछि । एकटा एहने 'सिटी बॉस'केँ जीवनमे पछाति ग्लानि होइत छैक । शिक्षक सब डरेँ ओकर बेटाकेँ अहगर कऽ नम्बर दैत छैक । मुदा ओ बेटा, आगाँ जखन इन्जीनियर-डॉक्टर नहि बनि पबैत छैक तखन सिटी बॉस, प्रायश्चित्तमे स्कूलक ओहि शिक्षककेँ पुरस्कृत करैए जे ओकर छोट बेटाक नम्बर ओकर डरेँ नहि बढ़बैत छैक । ओकर सेहन्ता कथाक यथार्थ आ वर्णन प्रतीतिपरक आ रोचक छैक ।

जेठाँस इतिवृत्तात्मक अछि । चारू भाइमे राम 'रामे' जकाँ, पिताक उपदेशकेँ

आदेश मानि, लोकहितक लेल त्याग करैत छथि । अन्तमे उत्सुकता छैक जे राम की निर्णय लेताह आ जे निर्णय ओ लैत छथि से आजुक युगक लेल आदर्श छैक । एहन निर्णय साधारण कोटिक लोक, नहि लैछ तेँ रामक निर्णय कने चौंकाबऽवला छैक । कथामे चौंकाबऽवला अन्तक प्रयत्न भेलैक अछि मुदा से कनियेँ-मनिएँ ।

पुत्रमोह कने पुरान विषयपर लिखल कथा छैक जाहिमे पूर्वक आचार-विचारवला गुणेश्वरकेँ पुत्र-मोहक कारणे मुर्गी अण्डा छूबऽ पड़ैत छनि । आजुक लोक मुर्गी अण्डाकेँ पौष्टिक आहार बूझैत अछि मुदा, पचास वर्ष पूर्व धर्मभीरु हिन्दू मुर्गी अण्डाकेँ अवश्य अखाद्य बूझैत छल । एखनहुँ आचार-विचारवला पंडित लोकनि एकरा अखाद्य बुझितहिँ छथि ।

फड़िच्छ भऽ गेल छलै सर्वहारा वर्गक कथापात्रकेँ लऽ कऽ लिखल साँङ्गोपाङ्ग रूपक एकटा आख्यान अछि जाहिमे बियाहलि बेटी चनरमा एसगर असहाय आ रुग्ण बापक सेवा-सुस्त्रुषा करैत अछि आ से पतिक घरसँ चल आबि कऽ । बहुत अन्तरालक बाद जखन चनरमाक घरवलाक मिजाज शान्त होइत छैक आ ओकरा इहो स्मरण होइत छैक जे ससूरे ओकर 'ओस्तादो' छलैक तखन ओ अपन घरवाली चनरमा लग चल अबैत अछि । यैह छैक **फड़िच्छ भऽ गेल छलैक** हैप्पी एन्डिङ्गवला कथा जाहिमे पिताक प्रति चनरमाक दायित्ववोध भाव आ ओकर पतिक अहंकारक क्षय आ मनमे कृतज्ञताक मानवीय भावक उदय पाठकक ध्यान आकृष्ट करैत छैक ।

हलुमाना हौरन जन्मेसँ बौक एकटा एहन बालकक कथा अछि जे बस स्टैन्डपर छूटि जाइत छैक । बस स्टैन्डक एकटा पान-बीड़ीक कठघरावला ओकरा राखि लैत छैक । पछाति ओकरा माय-बापसँ कोना भेँट होइत छैक तकरा मात्र दैवी घटना कहि सकैत छी ।

कथामे अलौकिकता आ आविष्कारक प्रधानता छैक । एहि दुनू तत्त्वसँ रचल कथा प्रतीतिपरक नहि कहल जाइछ ।

संग्रहमे तीनटा कथा एहनो अछि जाहि मध्य पात्र पशु छैक- **कहाँ छेँ रे नुनुआँ** पढ़ि हमरा अपन जीवनक एकटा अनुभव मन पड़ि आयल । खरहा पोसलहुँ जकरा चारि-पाँचटा बच्चा भेलैक । ओहि शावक सबमेसँ किछु बड़ दुर्बल रहैक । मायक दूधो ने धयल होइक । हमर पत्नी दूटाकेँ ड्रॉपरसँ दूध पिया कऽ पोसि देलथिन आ ओ दुनू खरहाक बच्चा कूदऽ-फानऽ लगलैक । एहनेमे एक दिन एकटा बिज्जी, ओहि दुनू बच्चाकेँ मारि देलकैक । हमर पत्नीक आँखि नोरा गेल रहनि ।

एहि कथामे मातृविहीन एकटा पठरूकेँ एकटा स्त्रीगण अपन दूध पिया कऽ पोसैत छैक । मात्सर्यक भावकेँ आ सेहो एकटा बकरीक बच्चाक लेल, जाहि बिन्दु धरि घीचि कऽ लऽ गेल गेलैक अछि से सम्भव रहनहुँ बड़ प्रतीतिपरक नहि बुझाइत छैक । विरल सम्भावनावला घटनाकेँ केन्द्रमे राखि कथा लिखब, नट सब जकाँ आकाशमे डोरी बान्हि

ओहिपर चलब जकाँ भेल । कथा जँ स्पष्टतया Fable (मित्रलाभ कथा)रहितैक तँ विश्वसनीयताकेँ कोनो खतरा नहि छलैक । एतऽ कथाकेँ बड़ यत्ने 'प्राणी मित्र'सँ जोड़ल गेलैक अछि आ ओहि बकरीक बच्चाकेँ मारि आ ओकरा ओही सरकारी मुलाजिम सबकेँ खुआय जे बकरीकेँ दूध पिआबऽवालीकेँ प्राणी मित्र घोषित करबाकलेल आयल छलैक, कथाकेँ विडम्बनापूर्ण (ironically) बनबैत छैक । अन्यथा कथामे रोचकताक सब गुण छैक ।

एकटा निमूधनक आत्मकथाकेँ हम एकटा सफलकथा मानैत छी । एहिमे यथार्थक बहाना छैके नहि । ई एकटा बरदक मनोभावक काल्पनिक कथा अछि आ से बरदक मुहेँ स्वयं । मानि लिअऽ जे अहाँ बरद छी आ, 'निमूधन नहि छी । मानि लिअऽ जे अहाँकेँ बाक अछि । बरद जे तखन बाजत आ अपन मनोभाव प्रकट करत से एतऽ मार्मिकतासँ वर्णित छैक । एकटा बरद बेचि देल जाइत छैक मुदा, ओ अपन बथान आ पूर्वक मालिकलेल स्नेहसँ ततेक ने व्याकुल भऽ जाइत अछि जे रस्सी तोड़ा कऽ पुनः अपन पुरना बथानपर घूमि अबैत छैक । अनेक जानवरमे अपन पूर्वक ठाम आ मालिककलेल अवाध स्नेहक भाव देखल गेलैक अछि, कुकुरमे सबसँ बेसी । स्वानक स्वामीभक्तिक भावक अनुभव तँ हमरा अपनहुँ अछि ।

आइ-काल्हि विद्यार्थी सबसँ प्रश्न पूछल जाइत छैक "कल्पना करो कि तुम मेलामे माँ-बापसे बिछुड़ गये हो"..... इत्यादि ।

ई कथा हमरा बड़ मार्मिक लागल ।

उपकारक बदला कथाक मुख्य पात्र एकटा बानर अछि । एकटा हथपंखा बेचऽवला ओहि बानरकेँ प्रतिदिन किछु ने किछु खाय लेल दैत छैक । मुदा एक दिन जखन ओहि पंखावलाक पंखा नहि बिकाइत छैक, ओ भूखले रहि जाइत अछि तखन ओ बानर पंखावलाक मनोभाव बुझैत एकटा पाकल अड़रनेवा तोड़ि कऽ खयबा लेल आनि दैत छैक । पशुक भीतर उत्पन्न मानवीय भाव ओ संवेदनाकेँ व्यक्त करैत ई कथा रोचक होयबाक संग-संग उपदेशमूलक अछि ।

गुलंजर दृष्टान्तमूलक- पैरेबुल जकाँ अछि जाहिमे विश्वसनीयताक कोनो आग्रह नहि छैक । बच्चा-बुदरुककेँ ई कथा अवश्य रोचक लगतैक ।

आइ धरि हमरा प्राच्य वा पाश्चात्य एहन कोनो आलोचक-समीक्षक नहि भेटलाह अछि जे कथाक स्वरूपकेँ सम्पूर्ण रूपेँ आ सन्तोषप्रद ढंगसँ परिभाषित कयने होथि । एहू ठाम 'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिना, तुण्डे-तुण्डे सरस्वती' वला बात छैक । कथा, 'साँझक गाछ' सन गद्यक काव्य भऽ सकैछ, 'मुट्ठीमे बन्द' आ 'गुलंजर' सन रोचक चाणक्य कथा भऽ सकैछ, 'उपकारक बदला', 'कहाँ छेँ रे नुनुआँ' सन प्राणी मित्रवला फेवुल

(Fable) भऽ सकैछ वा बड़दक आत्मकथा भऽ सकैछ । जहिना पहिनहि कहि चुकल छी कथाक विषय किछु भऽ सकैछ, कथामे दूटा गुण रहब अत्यावश्यक छैक, 'रोचकता' आ 'प्रतीतिपरकता' । जँ कथामे से नहि अछि तँ ओ किछु 'आर' वस्तु अछि जेना भूत-प्रेतवला कथा, दन्तकथा वा 'जादूइ यथार्थ' (Magic realism) वला कथा । आजीमाँ शीर्षकवला संग्रहक एहि अन्तिम ग्रूपक कथाक प्रचलन, आधुनिक काल, विशेष कऽ पाश्चात्य देशक साहित्यमे जोर पकड़ि रहलैक अछि ।

एहि प्रकारक कथाकेँ जादूइ यथार्थक कथा कहल गेलैक अछि । एकर बड़का उदाहरण विश्व ख्यातिप्राप्त सलमान रुशदीक उपन्यास सब अछि । नोवेल पुरस्कार प्राप्त जर्मनीक उपन्यासकार गुंथर ग्रास छथि ।

श्रीरामदेवजीक एहि कथा संग्रहमे विषयक विविधता अछि जे रोमांचित करैत अछि, पाठकक मर्मकेँ छुबैत अछि । हिनक कथाक दृष्टि स्थूलसँ लऽ कऽ सूक्ष्मतम विषय धरि दौड़लनि अछि, एहिमे कतहु उपन्यास जकाँ जीवनक व्यापकता भेटैत अछि तँ कतहु जीवनक किछु पल ओ क्षण मात्रक कलात्मक चित्रण भेल अछि जे मानस पटलपर जा कऽ अंकित भऽ जाइत अछि ।

श्रीरामदेवजीक कथा हमरा कोनो आयातित रूप-रेखा (model)क आधारपर रचित नहि लगैत अछि । कथा सबमे गाम घरक परिवेशमे अहाँकेँ निम्न, मध्य वर्ग आ सर्वहारावर्गक पात्र भेटत । नगरीय संस्कृति आ परिवेशसँ ई पात्र आ कथा-स्थिति कम चुनैत छथि । सर्वहारा वर्गक पात्र आ परिवेशसँ हिनका ओहने लगाव छनि जेना ललितकेँ रहनि । हिनक कथा- विषय आ वर्णनक दृष्टिसँ सर्वथा सुरुचिपूर्ण अछि । संग्रहमे एहन कोनो कथा नहि जकरा पढ़ि मनमे जुगुप्साक भाव उत्पन्न [illegible] हो ।

हिनक कथाक भाषा, पात्र आ परिवेशक उपयुक्त अछि । जाहिमे कतहुसँ 'साहित्यिकता'क गन्ध नहि छैक । भाषा एतेक सहज लगैत छैक जेना केओ कथा सुना रहल हो, लिखल कथा नहि पढ़ि रहल होइक । एहि प्रकारक कथाकेँ अंग्रेजीमे, "strong human yarn of the old faishoned type" कहल गेल छैक ।

प्रो. श्री रमाकान्तमिश्र

18 दिसम्बर 2008

कथा-क्रम

आजी माँ

कथा ठीक भऽ गेलै। जयनाथ मास्टर कते दिनसँ फिफिया रहल छलाह। कतहु गऽरे ने बैसै छलनि। मुदा ई समाचार जँ एक दिस कतोक गोटेकेँ नीक लगलै तँ बहुत गोटेकेँ अविश्वसनीय जकाँ बूझि पड़लै। विश्वास नहि होयबाक कारण ई छलैक जे कहाँदन घर बड़ पैघ छलै आ वर डाक्टर छलै। तिलक एको पाइ ने मङलकै। एहन बातपर आइ-काल्हुक समाजमे विश्वास कोना होइतैक ?

मुदा जयनाथ मास्टर उत्साहसँ तैयारी कऽ रहल छलाह आ ओमहर रंग-विरंगक चर्चा गाममे चलि रहल छल। गुलंजर उड़ि रहल छल। केओ बाजय-धुत ! डाक्टर की रहतै ? कतहु कम्पोटरी करैत हेतै, ने तँ दवाइ बेचनिहार एजेंट हेतै। जयनाथ मास्टर डाक्टर जमायक सपना देखैए। अरे ! एखन डाक्टरक किम्मति दस लाख टाका.......प्लस चौपहियासँ कम की हेतै ?'

कतहु चर्चा होइक जे- मानल जे जयनाथक कन्या सरस्वती वास्तवमे सरस्वतीक अवतार छै। देखै-सुनैमे सेहो बड़ भव्य। मुदा मेडिकल वर तँ बेसी मेडिकलक कनिञा तकै छै आ एहि पब्लिक स्कूलक मास्टर, जिनगी भरि ट्यूशन करैत रहनिहार जयनाथकेँ ओकाति कतऽसँ अओतै जे एहन वर करत !'

सभसँ बेसी चर्चा मौगी सबमे चलि रहल छल- वर बूझि पड़ैए पयदार छै, तेँ ने एना मङनीएमे तैयार भऽ गेलै ! ने तँ कुले-खन्दानमे कोनो अएब लागल हेतै। जयनाथ अपन बेटीकेँ गरदनि काटि रहल छै।'

ई बात सब सरस्वतीक कानमे, ओकरा मायक कानमे पड़ितहि रहैक। दुनू माइ-धी अपना-अपना मनमे विषाद-अवसादसँ भरल जाइत रहय। उत्साह आ उल्लास जेना बिला गेलै।

सरस्वतीक मोनमे अनेक तरहक शंका सब उठैत रहैक मुदा ककरो लग ओ बजबाक साहस नहि कऽ पबैत छलि। सदिखन चेहरापर उदासी छाड़ने रहैत छलै। ओकर बाजब-भूकब कम भऽ गेलै। सखी-सहेलीसँ सेहो कनछी कटैत रहैत छलि। ओ माय लग सेहो नहि जाय चाहैत छलि।

ओमहर ओकर माय राजमणिकेँ सेहो टोल-पड़ोसक दाइ-माइसब की-कहाँ आबि

कऽ कहि जाइत छलनि । राजमणि सोचैत-छगुनैत रहैत छलीह- कहै छै, बड़ धनाठ घर छै । वर डाक्टर छै आ से हाथ धऽ कऽ कथा करै लय अपनेसँ राजी भऽ गेलै । बात तँ किछु जरूरे छै । लोक सब ओहिना नहि बजै छै । ठीके, वर पयदार हेतै । लुल्ह-नाङर, बौक-बहीर, रोगाह-घबाह....... जानि नहि कोन ऐब छै । अपना जातिक छै कि अनजाति छै...... राजमणि सोचैत-सोचैत गह्वरित भऽ उठलि ।

राजमणिकेँ भितरे-भीतर कूही होइत रहलनि । ओ जयनाथक हुलास देखि वितृष्ण भऽ उठैत छलीह । जयनाथकेँ साते-आठ दिनमे सब व्यवस्था करबाक छलनि । राजमणिसँ स्थिर चित्तसँ गप्प करबाक जेना ओफा नहि होइत छलनि । ओहि दिन ओ राजमणिकेँ आलमारीसँ टाका बहार कऽ कऽ देबाक लेल कहलथिन । राजमणि गुम-सुम भेल घर गेलीह । घर जा कऽ जयनाथकेँ कहलथिन- एम्हरे आउ ने ।'

जयनाथ सहटि कऽ घर गेलाह । राजमणि केबाड़ लगा देलथिन आ कानऽ लगलीह ।

–आहि रे बा एना किए कनै छी ?' जयनाथ चकित होइत बजलाह ।

–एना बाप भऽ कऽ सरस्वतीक घेँट किए कटै छिऐ ? बरु माहुरे खुआ कऽ मारि दियौ ।' राजमणिक स्वरमे करुणा आ आक्रोश मिज्झर छलनि- हमरा बेटीलय धनाठ घर नहि जुगलतगर वर चाही । एहि गामक तँ पुरना ढाठी छलै जे टाका गना कऽ बेटीकेँ भसा दैत छलै । सैह अहूँ करब की ?'

जयनाथ बजलाह- लोक सब की कहाँ बजैत अछि ताहिपर ध्यान नहि दिअऽ । एहन कथा तँ हमरा सन लोकलय आकाश-कुसुमे अछि । सन्देह हमरो होइत रहैत अछि । वरकेँ हम ठीके नहि देखलिऐक मुदा ओहि नब्बे-पंचानबे बरखक वृद्धा, वरक प्रपितामहीक बात-विचारपर अवश्विास कोना करी ? ओ एहि वयसमे ठकपनी किएक करतीह ?'

जयनाथ दस-पन्द्रह दिन पहिने अपन पिसियौतक संग कथा-वार्त्ताक टोहमे जाइत रहथि । ट्रेनसँ उतरलाह तँ जेठ मासक रौद बेस तबठि गेल रहैक । कोनो सवारी नहि भेटलनि तँ दुनू ममियौत-पिसियौत छत्ता तानि पैदले विदा भऽ गेलाह । साँझमे आबि फेर गाड़ी पकड़बाक छलनि । बात सीझत-पाकत नहि से बुझैत छलाह, तैयो पिसियौतक आग्रहेँ जाइत छलाह जे एक धक्का दऽ कऽ देखियैक ।

बाटमे दुहू गोटेकेँ बड़ जोर पियास लगलनि मुदा ओहि पाँतरमे जल कतऽ भेटितनि ! सोचलनि, अगिला गाममे कोनो इनार वा कलपर पानि पीबि लेब ।

अगिला गाममे प्रवेश करितथि, ओही ठाम सड़कक एक कातमे एकटा बड़काटाक दलान आ ओकरा तीनू दिस पक्काक मकान । कोनो पैघ धनवानक घर बूझि पड़लनि । खरिहानक एक कातमे चापाकल देखलथिन । भीतर जयबामे कनेक संकोच भेलनि मुदा

पियास हुनका सभक संकोचकेँ जेना सोखि लेलकनि। जयनाथ दुनू भाइ फाटक खोलि भीतर गेलाह। मोनमे भेलनि जे कलमे मुँह सटा कऽ पानि पीबि ली मुदा दोसरे क्षणमे सोचलनि– लोक देखत तँ अभद्र बूझत। घटकैतीमे चलल छी, पता नहि के कतऽसँ देखि लिअय।

ओ सहटि कऽ सीढ़ी लग गेलाह। ओहि ठाम एकटा बूढ़ झुनकुट चर्खा सनक बूढ़ी कुर्सीपर चस्मा पहिरने बैसलि छलीह। कुर्सीसँ ओठङल एकटा छड़ी। लगमे एकटा खवासनी हुनक पैर जतैत छलनि। जयनाथ धखाइत बजलाह– दाइ ! एकटा लोटा की गिलास भेटितै तँ जल पिबितहुँ।'

वृद्धा आँखि निराड़ि कऽ पुछलथिन– के छी अहाँ ?'

–हम बटोही छी, जल पीबालेल जलपात्र चाही।'

–जल पीब तँ आउ, बैसू। बड़ तऽस छै। कने जिरा लियऽ तखन जल पीब।' बूढ़ी ई बाजि खवासनीकेँ कहलथिन– बिन्दा ! जो, छोटकी बहुड़ियाकेँ कहुन जे दूटा अभ्यागत आयल छथि। पियासल छथि, जल पिउताह।'

खवासनी लगक चौकी परक ओछाओनकेँ झाड़ि कऽ अन्दर गेलि। जयनाथ दुनू भाय संचमंच चौकीपर बैसि गेलाह।

बूढ़ी पुछलथिन – बौआ, अइ चण्डाल रौदमे कतऽ, विदा भेल छी ? ई बाट चलैक बेर छिऐ ?'

जयनाथ बजलाह – कन्यादानक प्रसंगमे कथा–वार्त्ताक अन्वेषणमे जा रहल छी।'

– की, कतहु ठीक भेल अछि ?'

– नहि, ओहिना गामे–गामे बौआइ छी।'

– हँ, जकरा घरमे कन्या कुमारि छै तकरा चयन कहाँ ?' बूढ़ी बजलीह– की गोत्र ? गाम कतऽ अछि ?'

जयनाथ सूग्गा जकाँ अपन गोत्र, गामक नाम कहैत अपन समस्त परिचय बाजि गेलाह। फेर अपन कन्याक वयस, रूप–रंग आ शिक्षाक वर्णन कऽ गेलाह।

बूढ़ी जयनाथक परिचय सूनि जेना गम्भीर भऽ गेलीह, आँखि मूनि लेलनि।

तावत बिन्दा खवासनी आगाँ टेबुल घीचि ओहिपर दू प्लेटमे विस्कुट, दू ग्लास आ एकटा जगमे जल राखि देलकनि। जयनाथ बजलाह– एकर सभक कोन प्रयोजन छलै ?'

बूढ़ी आँखि खोलि बजलीह – नेना छी अहाँ सब। खाली पेटमे जल कोना पीब ? खा लियऽ।'

जयनाथ दुनू भाइ आग्रहकेँ टारि नहि सकलाह । ओ सब विस्कुट खा कऽ जखन जल पिउलनि तँ ओ अत्यन्त शीतल जलमे बनाओल शर्बत छलनि । बिन्दा हुनका सबकेँ आग्रह कऽ कऽ जगवला शर्बत सेहो ढारि कऽ पिया देलकनि । हुनको सबकेँ बेजाय नहि लगलनि ।

जल पिउलाक बाद जयनाथ दुनू भाइ उठबालय सुरफुराइत छलाह कि बूढ़ी पूछि बैसलथिन-बच्चा, अपन प्रपितामहक नाम नहि कहलहुँ ?'

जयनाथ वास्तवमे अपन प्रपितामहक नाम कहब छोड़ि देने छलथिन । ओ अपन प्रपितामहक नाम कहैत कहलथिन जे– ओ बड़ पैघ प्रतिष्ठित जोतखी, कर्मकाण्डी आ धर्मशास्त्री छलाह । हम सब देखने नहि छियनि मुदा सुनै छियनि ।'

बूढ़ी फेर पुछलथिन – केहन कथा तकैत छी ?'

–केहन ?' जयनाथ अँटकि-अँटकि कऽ बजलाह – हम सब साधारण आस्थापातक लोक छी । वरकेँ धन–बीत नहियोँ होइक मुदा पढ़ल–लिखल, छोट–छीन नोकरी–चाकरी होइक । परिवारक भरण–पोषणक योग्यता होइक । खर्च–बर्चमे जे सकर्त्ता हैत ताहिमे पैर पाछाँ नहि करबैक । एहिसँ ऊपर इंजीनियर–डाक्टरक तँ सपनो ने देखै छी ।'

–किए सपना नहि देखै छी ?' बूढ़ी चस्माकेँ उतारि कऽ आँचरसँ पोछैत बजलीह– बेटी लय तँ नीकसँ नीक वर–घर लोक तकैत अछि ।'

–जयनाथ आब उठबा लय कछमछाय लागल छलाह । ओ बजलाह – से हमरा सभक बेटीकेँ ने से भाग्य, ने हमरा ओ सामर्थ्य ।' ई कहि उठऽ लगलाह ।

बूढ़ी कुर्सीपर कने सोझ होइत बजलीह– धड़फड़ाइ छी किए ? रौद खसऽ दियौ तखन जायब । हमर जेठ पौत्र अबैते हेताह । ओ अपन गाड़ीसँ अहाँ सबकेँ जतऽ जायब ततऽ पहुँचबा देताह ।'

जयनाथ थुस दऽ बैसि गेलाह । बूढ़ी फेर बाजऽ लगलीह– जँ इंजीनियर–डाक्टर भेटत तँ किएक ने करब ?'

जयनाथ बनौआ हँसी हँसैत बजलाह – हम सब ओहिमे सकबै ?'

– चाहब तँ किए ने सकब ?'

जयनाथकेँ भेलनि जे विस्कुट–शर्बत दऽ कऽ ई बुढ़िया आब चौलि कऽ रहल अछि । असम्भव बातपर सोचनाइए बेकार ।

बूढ़ी टँसगर स्वरमे बाजऽ लगलीह – बच्चा ! हमरा दूटा बालक, चारिटा पौत्र और सबकेँ सेहो धिया–पुता सब छनि । जेठ बेटा घरक कारबार देखैत छथि आ छोट बेटा

इंजीनियर छथि । नोकरीसँ रिटायर भेलोपर बाहरे रहैत छथि । जेठ पौत्र गामेपर रहैत अछि आ तीनटा पौत्रमे एकटा इंजीनियर, दोसर डाक्टर आ तेसर प्रोफेसर छथि । हमर परपोता सब सेहो नीके जकाँ पढ़ि रहल अछि । दुनू बेटा आ चारू पोताक अपन-अपन हवेली छनि । अपन-अपन रुचिलय सब फराक रहितो सब एके ठाम साझी छथि । मोटर, ट्रैक्टर, स्कूटर आ मोटर साइकिल- सब किछु अछि । मिरचाइ, तमाकुल आ गहूम सम्हरि कऽ नहियो उपजलापर लाख-दू-लाखक आमदनी बड़ थोड़ कहब । हमरा कथूक कमी नहि । परिवार भरल पुरल अछि ।'

जयनाथ आ हुनक पिसियौत आँखिए आँखि एक दोसराकेँ देखि संकेत कयलनि- भाइ ! बुढ़िया भसिया रहलि अछि, नाहक फसि गेलहुँ ।'

मुदा बूढ़ी बजिते रहलीह- हमर जेठ पौत्रक जेठ बालक सभ भाइमे जेठ छथि । डाक्टरी पास कऽ पटनाक अस्पतालमे एक बरखसँ काज करैत छथि । छब्बिस-सत्ताइसक वयस छनि । देखबा-सुनबामे नीके छथि । अहाँ ई कथा करब ?'

जयनाथ बूढ़ीक प्रस्ताव सूनि स्तब्ध भऽ गेलाह । कोनो उत्तर देबामे अकबका गेलाह । अविश्वाससँ बूढ़ीक मुँह ताकऽ लगलाह ।

बूढ़ी कनेक चुप रहि बजलीह- चुप किए छी, बाजू ने !'

जयनाथ उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलाह । बूढ़ीक आगाँ कऽल जोड़ि बजलाह- मइया ! अहाँ सभक आगाँ हम बड़ छोट हस्तीक लोक छी । एतेकटा भार सम्हारक हमरा सामर्थ्य नहि अछि । हमरा माफ करू ।' ई कहि ओ बूढ़ीक पैर पकड़ि लेलथिन ।

बूढ़ी कहलथिन- पैर छूलहुँ तँ आशीर्वाद दैत छी जे मनोरथ पूर होअय । मुदा एना डेराइ छी किएक ? अहाँकेँ कोनो खर्च नहि लागत । वरकेँ एक जोड़ धोती आ कनियाँकेँ एक खण्ड साड़ी आ दूबि-धान दऽ कऽ विदा कऽ देबैक । नीक लोकक बरियाती तँ पहिने पाँच, सात, नओ, तेरह होइत छलैक । हमर परिवार नमहर अछि तेँ किछु बढ़ि जायत । मुदा, पन्द्रह-एकैससँ फाजिल नहि । सेहो एके साँझ असिद्ध भोजन करताह । आब की चाही ? अहाँ गामपर जाउ । अपन कनियाँसँ सेहो विचारि लेब । पन्द्रहम दिन आबि वरकेँ पहिने देखि लेबनि । जँ पसिन्न पड़ताह तँ सगून दऽ देब आ ओकर तेसरा दिन विवाहक शुद्ध छै । विवाह भऽ जेतै ।'

जयनाथ गुम्मे रहलाह । बूढ़ी फेर बजलीह - अहाँकेँ विश्वास नहि होइए । होइए जे बुढ़िया फुसिए कहैत अछि । हम अहाँकेँ वरक बापेसँ गप्प करा दैत छी ।'

ओ बिन्दा खवासनीकेँ आदेश देलथिन जे- गे बिन्दा ! बड़की बहुड़ियाकेँ कहुन जे गद्दीपर बड़का बच्चाकेँ फोन कऽ देथिन, जल्दी अबै लय ।'

बिन्दा अन्दर गेलि आ बूढ़ी फेर बाजऽ लगलीह ।

जयनाथ दुनू गोटे मूरुत जकाँ बैसल रहलाह ।

थोड़बे कालमे मोटर साइकिलसँ एकटा अधवयसू पुरुष अयलाह आ बूढ़ी लगमे बैसैत कहलथिन- आजी ! किएक फोन कयने छलहुँ ?'

बूढ़ी जयनाथ दिस इसारा करैत कहलथिन - ई कन्यागत छथि ।' आ जयनाथ दिस ताकि कहलथिन - ई हमर जेठ पौत्र आ वरक पिता छथि ।'

दुनू एक दोसराकेँ हाथ जोड़ि नमस्कार कयलथिन ।

बूढ़ी अपन पोताकेँ जयनाथक परिचय दैत कहलथिन- हिनका हम अतुलक प्रसंग वाक दऽ देलियनि । अहाँक की विचार होइए ?'

पोता सहज भावसँ उत्तर देलथिन- अहाँ वचन दऽ देलियनि तँ भऽ गेलै, एहिलय हमरा बजा कऽ पुछबाक कोन प्रयोजन छल ?'

राजमणिकेँ ई समस्त वृत्तान्त सुनबैत जयनाथ कहलथिन- आब अहीँ कहू जे कोन बातपर शंका अविश्वास करी । हम पता लगौलहुँ, बालक ठीके पटनाक अस्पतालमे हाउस-सार्जन छै । सगून लेबासँ पहिने वरकेँ देखि लेबै । जँ कोनो तेहन बात देखबै तँ अस्वीकार कऽ आपस चल आयब । एहिमे बिखिन्न हेबाक कोन काज ?'

राजमणि ततमतक लछुमन झूलापर झूलैत रहलीह । कथा ठीक करऽमे वरवला कतेक नखरा करै छै, दौड़बै छै ! मुदा ई तँ कनियाँ देखबाक तँ बाते नहि, फोटो सेहो ने मङलकै । किए, किए, किए ?

राजमणिकेँ एकर उत्तरमे शंकाक बड़का पहाड़ आबि कऽ ठाढ़ भऽ जाइत छलनि । फेर होइत छलनि जे एहि शंका-समाधानमे कथा हाथसँ बेहाथ ने भऽ जाय । एही क्रममे सगूनो आबि गेलनि आ तेसरा दिन वर-बरियाती सेहो ।

पड़िछनि बेरमे जतेक महिला छलि से वरक खोद-बेद कऽ कऽ जाँचऽ लागलि छलि । वरक सुभग-सुन्दर काँति, बाजब-भूकब अत्यन्त संयत, स्वभाव सुशील, व्यवहार सौम्य । कतहु कोनो खोट नहि । तखन एना हाथ धऽ कऽ वियाह किएक कऽ रहल छल ? जरूर कोनो भितरिया खोट छैक । आ यैह बात सरस्वतीक माथमे सेहो लोक भरि देने छलै .... । विवाहक सौँसे अवधिमे सरस्वती अतुलकेँ भितरे-भीतर जँचैत-परखैत रहलि । जँ यैह वर सामान्य योग्यता वा सामान्य घरक रहितै, अथवा यैह जँ दस-बारह लाख गना कऽ आयल रहितै तँ ककरो कोनो शंका नहि होइतै । सब सन्तुष्टे नहि कृत-कृत्य रहितय । मुदा अतुलकेँ लोक शंका आ सन्देहसँ देखैत छलैक ।

अतुल सरस्वतीकेँ जतबा देखि सकल छल ताहिसँ सन्तुष्ट छल मुदा वातावरणमे पसरल ओ लोकक आँखिमे भरल शंका आ अविश्वासक अनुभव कऽ रहल छल । चारि दिन धरि लोकक कनफुसकी सुनैत-सुनैत मोन उबिया गेल छलै ।

चतुर्थीक राति सरस्वतीकेँ अतुलक स्वरूप ओ अतुलकेँ सरस्वतीक स्वरूप नीक जकाँ देखबाक अवसर भेटलैक । अतुलकेँ सरस्वतीक मुखमंडलपर एकटा अज्ञात भयक छाया आ आँखिमे वैह भाव भेटलैक जे चारि दिनसँ आन-आन लोकमे देखैत रहल ।

अतुल देवाल दिस तकैत बाजल- अहाँक नाम सरस्वती थीक ? हमरो आजीमाँक अपन नाम सरस्वतीए छनि । मुदा हमर आजीमाँ सरस्वतीक संग महालक्ष्मीयो छथि ।'

सरस्वती माथ झुकौने नीचाँ दिस तकैत आँचरक खूटकेँ आङुरमे लपेटैत-उघारैत रहलि ।

अतुल फेर आगाँ बाजऽ लागल - हमरा परिवारमे आजीमाँ सुप्रीम कोर्ट छथि । हुनका मुहसँ जे बहार भऽ गेल से अन्तिम । ओहिपर केओ तर्क नहि करैत छैक । ओतेक टाक राजपाट तँ जोड़लो हुनके छनि । जीवनमे हुनका बड़ संघर्ष करऽ पड़ल छलनि । हमरा परिवारक एक-एक व्यक्तिकेँ मूर्त्तिकार जकाँ तरासि कऽ बनौने छथि आजी माँ ।'

सरस्वती साकांक्ष भऽ कनछिया कऽ अतुलकेँ देखऽ लागलि ।

अतुल अपन आजीमाँक अतीतक कथा सुनाबऽ लागल-

आजीमाँ पन्द्रह-सोलह बरखक भऽ गेल रहथि । माय-बाप नहि रहनि । पित्ती रहथिन । घरक दरिद्र मुदा भलमानुस ।

हमर परबाबा माधवमिसर रहथि, हुनको माय-बाप नहि । थोड़-बहुत जमीन-जथा छलनि सेहो देयाद-वाद हड़पि लेने छलनि । पित्तीक आश्रममे रहि हुनके खेती-बाड़ी कयल करथि । अवस्था तीस-पैंतिस बरखक भऽ गेलनि । अपना कबजामे एकटा घराड़ी, एकटा बाड़ी आ पाँच-सात कट्ठा खेत बचल छलनि । एकटा लङोटिया यारक विचारसँ खेत बेचि आ पुरना काठक बाकसमे राखल मायक किछु गहना बेचि पाँच सय टाका लऽ कऽ ओही यारक संग सौराठ गेलाह । ओतहि पाँच सय टाका कन्याक प्रति गनि कऽ हुनकर विवाह हमर आजीमाँक संग ठीक भेलनि ।

आजीमाँ चतुर्थी रातिमे हमर परबाबा माधव मिसरकेँ पुछलथिन जे- अहाँ अपन गामपर हमरा लऽ जायब तँ गुजर कोना हैत ?'

-भगवान भरोसे ।' माधवमिसर कहलथिन ।

-खेती-बाड़ी करऽ अबैए ?'

–वैहटा अबैए ।'

आजीमाँ ओहू समयमे बोधगरि छली । टुगर बच्चाकेँ अपन स्थितिक बोध अपन तुरिया सबसँ पहिनहि भऽ जाइत छैक । ओ चुपचाप गेलीह, पित्तीक बाकसमेसँ माधव मिसरक देल काटरक पाँच सय टाका निकालि अनलनि आ हुनका दैत कहलथिन– राता-राती निकलि चलू अपना गाम ।'

'दुनू गोटा अपना गाम अयलाह तँ ओहि गाम कहियो घूरि कऽ नहि गेलाह । केओ खोजो नहि कयलकनि । आजी माँ आइ धरि अपन नैहरक नाम ककरो नहि कहलथिन । हमर बाबा सबकेँ सेहो पुछबाक साहस नहि भेलनि जे हमर मातृक कतऽ अछि ?' अपन गामक लोक माधवमिसरकेँ व्यंग्य करनि जे कहाँ-कतऽसँ एकटा मौगीकेँ उठा अनलक अछि !'

आजीमाँ ई सब बूझथि मुदा किछु नहि बाजथि । हुनका सोझाँ पहाड़ सनक निरवलम्ब जिनगी मुह बओने ठाढ़ छलनि । ओ पाँच सय टाकाकेँ पूजी बना कऽ अपन बाड़ीमे दुनू बेकती तमाकुल रोपलनि । पाछाँ बटैयापर सेहो तमाकुल-मिरचाइक खेती करऽ लगलाह । पूजी बढ़ैत गेलनि । पूजीमेसँ अपना लय किछु खर्च नहि करथि । दू गोटेक भोजन कोना चलतनि से समस्या रहनि । आजीमाँ जाँत, चकरी आ उक्खरि-समाठक जोगाड़ कयलनि आ गाममे जे भोज-भात होइक तकर मनक मन राहड़ि, खेसाड़ी, चाउर आदि माधव मिसर उघि कऽ लऽ आनथि । आजीमाँ ओकरा सबकेँ दरड़ि-फटकि, छाँटि बना देथिन आ माधव मिसर माथपर उठा कऽ दऽ अबथिन आ ओकरे बोनि आ गुण्डा-कोड़ाइ बेचि कऽ पेट चलाबथि । एक-दूटा माल पोसियाँ लऽ लेलनि । ओहूसँ आय होअऽ लगलनि ।'

'एहिना पूजी-पगहा बढ़बैत-बढ़बैत ततबा भऽ गेलनि जे दस-पाँच कट्ठा कऽ जमीन सेहो कीनऽ लगलाह । उस्सर-खासर, परती-पराँत, डोभा-डाबर जे भेटि जाइन से कीनि लेथि । सहे-सहे चालिस-पैंतालिस वर्षक अवधिमे सत्तरि-अस्सी विघा जमीन अरजि लेलनि । अनकालेल जे जमीन उस्सर छल से सभ हिनका सभक परिश्रमसँ सोना उझिलऽ लागल । आइ हमरा परिवारमे लक्ष्मी आ सरस्वती दुहूक अजस्र कृपा छनि । हमर परबाबा माधव मिसर परम वृद्ध भऽ कऽ स्वर्गवासी भऽ गेलाह मुदा हमर आजीमाँक आँचरक शीतल छाया हमर बाबा-बाबी, माय-बाप, काका-काकी आ हमरा सभ भाइ-बहीनकेँ भेटि रहल अछि ।'

कहैत-कहैत अतुल भाव विह्वल भऽ उठल । सरस्वतीक एकाग्रता सेहो टूटि गेलैक । ओ आब अतुलकेँ सोझाँ-सोझी देखऽ लागलि । बूझि पड़लै जेना अतुल चीर-फाड़ करऽवला डाक्टर नहि शब्दचित्र उरेहऽवला भावुक कवि हो ।

अतुल कनेक दम धऽ कऽ सरस्वतीकेँ कहऽ लागल –हमरा परिवारमे बेटीक बियाहमे तिलक देल जाइ छै मुदा बेटाक बियाहमे तिलक कहियो ने लेल गेलै । हमरा जे चारि दिनसँ शंका–सन्देहक दृष्टिसँ देखल जा रहल अछि से हमर बाबा, बाबू आ काकाकेँ सेहो भेल छलनि । आजीमाँ ई बात हमरा बुझा देने छलीह, तेँ कोनो नव बात नहि ।'

अतुलक एहि बातपर सरस्वती अपराध बोधसँ जेना संकुचित भऽ गेलि । अतुल फेर आगाँ कहऽ लागल– आजीमाँ अपन बेटा–पोता सभक वियाह बेरमे बड़ खोद–बेद करथिन–कन्याक रूप–रंग, शुचि–आचार, कुल–शील, गाम–ठामपर बड़ विचार करथिन ! मुदा हमरा वियाहमे से किछु नहि कऽ सोझे स्वस्ति दऽ देलथिन । किएक, से बूझव ?

–किएक ?' सरस्वती पहिल बेर अपन मुँह खोललक ।

अतुलो पहिले बेर सरस्वती दिस गहिँकी नजरिसँ तकैत बाजल – हम पटनासँ अयलहुँ, आजीमाँकेँ पुछलियनि – आजीमाँ ! सुनै छी, पहिने अहाँ बेटा–पोताक वियाहमे बड़ जाँच–पड़ताल करै छलिऐ आ हमरा बेरमे केओ अनेरो दरवज्जापर चल अयलाह तँ विनु विचारनहि हमरा भसा देलहुँ, कम मानै छी, तेँ की ? मुदा आजीमाँ हमरा सबसँ बेसी मानैत छथि, तेँ अपन जीवनक दू–तीनटा रहस्यक कथा कहलनि, जे आइ धरि ककरो ने कहने छलथिन ।'

–से की ? 'अतिशय उत्सुकतासँ सरस्वती बाजलि ।

आजीमाँ कहलनि– बौआ ! कन्याक नाम सरस्वती सूनि हमरा कतेक युगक बाद अपन नाम मोन पड़ि गेल । दोसर, ई कन्या ओही गामक थीक जतऽ हमरो जन्म भेल छल आ जकरा हम बिसरि गेल छलहुँ । ई कन्या हमरा अपन नैहर मोन पाड़ि देलक । तेसर, ई कन्या ओहि जोतखीजीक सन्तान थिकथि जे हमर विवाह करौने छला आ माथ ठोकि आशीर्वाद देने छलाह – जाह हे सरस्वती ! भगवती चाहथुन तँ एही घर–वरसँ तोरा एकसँ एकैस हेतह । हुनकहि आशीर्वादक फल थिक ई परिवार, ई राज–पाट । तोहर परबाबा विवाह आ चतुर्थी कर्मक दक्षिणा जोतखीजीकेँ नहि दऽ सकल छलथिन । जोतखीजीक प्रपौत्र जयनाथकेँ तोहर बियाहक वाक् दऽ हुनक दक्षिणा चुका रहल छियनि । बौआ ! हमरासँ गलती भेल होउ तँ बुढ़िया जानि माफ कऽ दिहेँ ।'

सरस्वतीक सौँसे देह भुलुकि गेलैक । ओ सहटि कऽ अतुलसँ सटि गेलि । अपन दुनू हाथक बीचमे आँचर राखि माथमे सटबैत बाजलि – हम ओहि महादेवीकेँ प्रणाम करैत छियनि ।'

[लेखन- 8 सितम्बर 2000, प्रकाशन- रचना, अक्टूबर-दिसम्बर 2001]



शहीद चौक

चिन्तूदादाक स्वदेशी जलपान घरकेँ लोक बिसरि गेल अछि । ओकर मालिक चिन्तूदादा कतऽ गेलाह, की भेलनि, जिबितहु छथि वा नहि, तकर पता आब ककरो नहि छैक । मुदा, हुनका द्वारा साजल-समारल, नामकरण कयल, एखनो जीबैत अछि शहीद चौक, माने कमर्सियल चौक ।

साँझुक पहर चकचक-झकझक करैत दोकान आ ठाम-ठाम जमा भेल नगरक भद्र पुरुष लोकनिक छोट-छोट गोष्ठी सभ पानक दोकानक आगाँ अथवा चाहक दोकानमे वा सड़क कातमे कोनो खाली स्थानमे; दिन भरिक नगरक घटना सभक खबरिक आदान-प्रदान करैत, नगर, प्रान्त, देश ओ विदेश पर्यन्तक नवीन घटना-चक्रक समीक्षा करैत, ओहिपर वाद-विवाद करैत सहजहि देखल जा सकैत अछि ।

एहि ठाम उत्तरसँ दच्छिन आ पूबसँ पच्छिम जाइत बाट एक दोसराकेँ कटैत अछि । पच्छिमबला बाट चल जाइत छैक गुदड़ी बाजार होइत बाकरगंज । दच्छिनवला सड़क आगाँ कचहरी दिस चल जाइत अछि । पूब दिसक बाट आगाँ मुख्य सड़ककेँ कटैत भद्र समाजक महल्लामे प्रवेश कऽ जाइत अछि । उत्तर दिस जाइबला बाट पछिमाहुत होइत आगाँ दरभंगा जाइवला मुख्य बाटमे मिलि जाइत छैक । जेँ ई चौक केन्द्रमे पड़ैत अछि तेँ लोक चारू कातसँ आबि जमा होइत अछि । साँझुक पहर बजारो-हाट कयलक आ दस गोट हित-अपेक्षित लोकसँ भेंट-घाँट, नमस्कार-पाती सेहो भऽ जाइत छैक । किछु नव हाल-चालक सेहो जनतब भऽ जाइत छैक । कतोक लोक तँ बिनु प्रयोजनहुँ सन्ध्याकाल कऽ, अतएव कऽ एहि ठाम नित्य अबितहि अछि ।

आब तँ चौक बड़ प्रसिद्ध भऽ गेल अछि, मुदा एकर पहिल नाम शहीद चौक तऽर पड़ि गेलैक आ कमर्शियल चौके नाम बेसी प्रसिद्ध भऽ गेल छैक । अवश्ये चिन्तूदादा द्वारा चलाओल परम्पराक अनुसार पन्द्रह अगस्त आ छब्बिस जनवरीकेँ बड़े समारोहसँ भारतक राष्ट्रिय तिरंगा झंडा फहराओल जाइत छैक आ तखन एकटा कूटक तखतीपर चौकक नाम 'शहीद चौक' लीखि कऽ टाङि देल जाइत छैक । आ एहि तरहेँ एहि चौकक पुरान नाम वा पहिल नाम लोककेँ मोन पड़ि जाइत छैक । मुदा एहि नामक कर्त्ता चिन्तूदादाक नाम लोककेँ मोन नहि पड़ैत छैक ।

एहि शहीद चौक उर्फ कमर्शियल चौकक एकटा छोट-छीन अतीत आ एकटा छोट सन इतिहास छैक, जे बेसी लोककेँ जानल नहि छैक आ जकरा जानल छैक तकरो बिसरा गेल छैक। मोन रखबा योग्य इतिहास छैको नहि। वास्तवमे जाहि ठाम देशक आजादीक लेल केओ शहीद भेल छल, ताहू स्थानके आ ओहि ठाम शहीद भऽ गेल लोकके जखन अनावश्यक बूझि समाज बिसरि गेल वा बिसरने जा रहल अछि, तखन एहि शहीद चौकपर तँ प्रत्यक्षतः कहियो केओ शहीदो ने भेल छल।

आइसँ बहुतो वर्ष पूर्व चौकक दच्छिन-पच्छिम कोनपर छल बड़क एकटा पुरान गाछ आ ओकरा पाँजरमे पच्छिम दिस एकटा छोट सन शिवालय। और चारू कात सुनसान। गुदड़ी बजारक मुँहथरि होयबाक कारणे बजारक सड़ल तरकारी, फल, बहारन सोहारन, कूड़ा-कस्तर, गोदउस इत्यादि फेकबाक सभसँ सुभितगर आ खुसफैल जगह छल ई चौक। एतबे नहि, मुनिसपलेटीक मजूर सब नगरोक कूड़ा-कस्तर सब गाड़ीपर लादि कऽ एही ठाम फेकि जाइत छल। से, बाटक कातवला खत्तामे, बाटक काते-कात आ बाटोपर, बिच्चहिमे गोनउड़ाक बड़क-बड़का ढेरी सभ लागल रहैत छल। बजारक लोकके आ बजार करबा लेल आयल लोकके सेहो निकास-बातलय गोनउड़ाक ओ ढेरी सब बेपर्द नहि होबऽ दैत छलैक। बरखा-बुन्नीक समयमे सड़ाइन गन्ध आ थाल-कादोसँ ओहि ठाम ठाढ़ो होयब सम्भव नहि होइत छलैक।

बड़क गाछ तर थोड़ेक दूर साफ अवश्ये रहैत छल जतऽ देहातसँ आयल दूधवला, तरकारीवाली, कीन-बेसाह कयनिहार लोक सभ बजार जाइत काल वा बजारसँ अबैत काल सुस्ताइत छल। खास कऽ तऽसक समयमे ई बड़क गाछ बड़का आश्रय बनि जाइत छलैक। दूधवला सब सीक-पटइपर टीन, चपइ, डाबा, झबहामे दूध लऽ कऽ अबैत छल; गाछ तरमे थोड़ेक सुस्ताइत छल, तखन अपन-अपन उठओनामे जाइत छल। फेर ओमहरसँ आपस आबि एहि ठाम जमा होइत छल। हिसाब-बारी करैत छल आ अपन-अपन गाम विदा भऽ जाइत छल।

ओहि साल भारतके आजादी भेटलैक। लोकके भेलैक जे अवश्ये कोनो पैघ घटना भेलैक अछि। लोक देखलक, सौंसे शहरमे अनजान लोक सभक बाढ़ि आबि गेल होइक। कच्छी, सिन्धी, पंजाबी आ बंगाली लोक सभक समूह शहरमे आबि कोनहुना कतहु-कतहु टिकल। अपन गाम-नगर, प्रान्त-परिवेशसँ ओ सब एकहि दिनमे बेदखल भऽ गेल। अपन धरतीसँ उजड़ल-उपटल, मारल-झमाड़ल, बौखल-विपतल जन-समूह जेना देशक आन भागमे गेल, तहिना एहू शहरमे आबि गेल छल। अपन आ अपन परिवारक एक साँझक रोटी आ अंग झपबाक वस्त्रक लेल छोट-छोट बच्चा सब लेमनचूस आ बिस्कुट घूमि-घूमि कऽ बेचऽ लागल छल। किछु सेयान-समर्थ लोक कचहरी, टीसन, अस्पताल आ एहने-एहन स्थान सबमे छोट-छोट वस्तु सभक पथार लगा कऽ

बेचऽ लागल छल 'हर माल साढ़े तीन आनामे' 'हर माल साढ़े छबे आनामे' । अपने देशक एहि भाइ-बन्धुलय एकटा शब्द प्रचलित भऽ गेल छल– रिफ्यूजी ।

एहने रिफ्यूजीक रूपमे चिन्तूदादा अपन पत्नी संग अबैत-अबैत एहि चौकक बड़क गाछ तर आबि कऽ बैसल छलाह । संगमे एकटा फुटलो कौड़ी नहि छलनि । कय दिनुक भूखल-पियासल, असोथकित भेल बैसल छलाह । आँखिमे शोक-सन्तापक पीड़ाक अथाह सागर लहराइत । ओही समयमे दूधवाला सब उठओना दऽ बड़क गाछतर आबि सुस्ताय लागल । थोड़ेक दूरपर एहि दम्पतिकेँ बैसल देखि अपनामे गप्प करऽ लागल छल जे– ई तँ अपन देसवाली लोक नहि छी । कोनो बङाली रिफ्यूजी छिऐ ।'

वास्तवमे चिन्तूदादा बंगालक दक्षिणपूर्वक निवासी छलाह जे पूर्वी पाकिस्तान बनि गेल आ ओहि ठाम जे दंगा पसरल ताहिमे चिन्तूदादाक परिवारक, गामक बहुतो लोक मारल गेल । जे दहो-दिस जान लऽ कऽ पड़ा सकल तकरा अपन लोकक संग-साथ छूटि गेलैक । चिन्तूदादा पत्नीक संग पड़यलाह तँ बौखैत-बौखैत एहि ठाम पहुँचि गेलाह । की करथि से फुरि नहि रहल छलनि ।

दूधवला सभ अनपढ़ आ गमार तँ छल मुदा अपन देशमे भेल उथल-पुथलसँ अपरिचित नहि छल । मानवीय संवेदनासँ शून्य नहि छल । ओ सब पहिने बजार जा कऽ थोड़ेक चूड़ा-दही आनि कऽ एहि दुनू प्राणीकेँ खयबाक आग्रह कयलकनि । एहि प्रकारक आपकतासँ चिन्तूदादा जेना अभिभूत भऽ गेलाह । भरल-पुरल, सुखी-सम्भ्रान्त परिवारक अतीतक प्रतिष्ठा आ मान-मर्यादा जेना रोकि रहल छलनि जे ई तँ भीख माङब भेल । दादाकेँ तँ ई कल्पनोमे ने आयल छल होयतनि जे कहियो ककरोसँ भीखक अन्नसँ पेट भरऽ पड़तनि । मुदा करितथि की ? कोनहुना कऽ ओकरा सभक आग्रहपर दही-चूड़ा सानि कऽ खयलनि । मुदा समस्या छल जे एहि अनचिन्हार शहरमे जयताह कतऽ ? रहताह कतऽ ? गुजर कोना करताह ?

दूधेवाला सब सुझाओ देलकनि जे एही शिवालयमे राति-बीच काटू । काल्हि हम सब किछु व्यवस्था करब । दोसर दिन ओ सब किछु बाँसक बाती, एक बोझ खरही, किछु जौड़ लेने अयलनि । एमहर भोरे उठि कऽ चिन्तू दादा चौकक उत्तर-पूब दिस, नालासँ उपर, अपना हाथसँ गोनउड़ाक ढेरीकेँ साफ कयलनि । दूधवला सब जखन बजारसँ घूमि कऽ आयल तँ ओ सब मीलि कऽ हाथे-पाथे एकटा लगउड़ी ठाढ़ कऽ देलकनि ।

देश-विभाजनक समाचार पसरिते पाकिस्तानमे जायवला प्रदेश सबमे भयानक खूना-खतरी मचि गेल छल । जे लोक विभाजन-विरोधी छल तकरा सबपर विपत्तिक पहाड़ खसि पड़लैक । सब अपन-अपन धन-सम्पत्ति, खेत-पथार, घर-द्वार छोड़ि-छाड़ि

पड़ाय लागल । बहुतो मारल गेल, जे बाँचि सकल से सीमाक एहि पार आबि जहाँ-तहाँ शरण लेलक । चिन्तूदादा सेहो अपन ओ पत्नीक जानमात्र बचा कऽ पड़ा सकल छलाह । गामसँ पड़यबाकाल किछु संग नहि लऽ सकलाह । पत्नी किछु टाका, सोनक गहना सब, एक खंड धोती, एक खंड साड़ी मात्र एकटा छोट सन पोटरीमे बान्हि लेने छलथिन । मुदा सेहो सीमापर अबैत-अबैत अताइ सब छीनि लेलकनि । संजोगसँ चिन्तूदादाक हाथमे एकटा औंठी पोखराज जड़ल आ एकटा घड़ी बाँचि गेल छलनि । चिन्तूदादा ओकरा बेचि कऽ लोहिया, छोलनी, झाँझ इत्यादि बासन, थोड़ेक चिक्कस, घाठि, पेयाजु इत्यादि कीनि कऽ अनलनि । ईंट जोड़ि कऽ चूल्हा बनौलनि आ कचुरीक दोकान ठाढ़ कऽ देलनि । नाम देलथिन 'स्वदेशी जलपान घर' ।

ओहि समयमे अपना सभक इलाकामे टीसनक लग पासमे वैष्णव भोजनालय रहैत छलैक । हलुआइक दोकानमे दही-चूड़ा आ मिठ-मधुरक नामपर चीनीक लड्डू, बतासा, कटबी, मेहीदानाक लड्डू आ बहुत भेल तँ कतहु-कतहु जिलेबी आ बालूसाही भेटैक ।

निम्न वर्गक हेतु झिल्ली, कचुरी, मुरही, भटबड़क दोकान होइत छलैक । होटल, केबिन, रेस्ट्रा इत्यादि तँ तखन कदाचित् देखबामे अबैत छल जतऽ चाह पिउनिहारक संख्या बड़ अल्प ।

दादा अपन दोकानमे नित्य नव-नव व्यंजनक प्रयोग करऽ लगलाह । लोकक रुचि बढ़ैत गेलैक । गाहकक भीड़ बढ़ैत गेल । आब ओहि लगउड़ीमे दोकानक सरंजाम अँटैत नहि छलनि । तखन थोड़ेक और जगह साफ कऽ देलथिन । थोड़ेक देवदारक तखता आ अलकतराक ड्राम उपर कयलनि आ ओहीसँ उतरे-दछिने नामा-नामी पच्छिम मुँहक घर बनौलनि । भीतरमे पेंटसँ रङि देलथिन । किछु हल्लुक टेबुल-कुर्सी लगा देलथिन । एकटा टीनपर साइन-बोर्ड लिखबा कऽ टाङि देलथिन । ओहिमे स्थानक नाम देलथिन-शहीद चौक ।

आब दादाक 'स्वदेशी जलपान घर' कचुरी मात्रक दोकान नहि रहि गेलनि । आब ओहिमे बंगाली रीतिक हीङ-कचौरी, बदामक दालि, टमाटर कोफ्ता, रसगुल्ला, सन्देश, छेना-जिलेबी इत्यादि बनऽ लागल । ओकरा संगहि चाह सेहो चलाबऽ लगलाह । जे ग्राहक दोकानपर एक बेर आबय तँ अबितहि रहि जाय । खास कऽ दादाक सौजन्यपूर्ण व्यवहार ओ आभिजात्य संस्कारसँ बड़ आकर्षित होअय लोक ।

दोसर दिस, चिन्तूदादा चौकपर लागल गोनउड़ाक ढेरी सबकेँ नित्य प्रातःकाल साफ करथि । हिनका अपने हाथसँ साफ करैत देखि ओहि ठाम कूड़ा-कस्तर फेकऽमे लोककेँ संकोच होअऽ लगलैक । ओहि ठामक आब संस्कारे बदलि गेलैक । आब साफ चौरस स्थानमे नीको लोक ठाढ़ भऽ गप्प कऽ सकैत छल । बैसबाक लेल, ककरो

प्रतीक्षाक लेल अथवा ककरोसँ किछु काल गप्प करबाक लेल स्वदेशी जलपान घर छल । लोक आबय आ किछु खाय, एक-दू कप चाह पीबय आ सुनैत रहय चिन्तूदादाक रोचक गप्प सब । चिन्तूदादाक गप्पमे बेसीकाल बंगालक क्रान्तिकारी सभक खिस्सा-वृत्तान्त रहैत छलनि । से एहन सन जेना बहुतो घटना अपना आँखिसँ देखने होथि अथवा ओहिमे संग रहल होथि । कखनो काल आवेशमे आबि काजी नजरुल इसलामक अग्निमुखी कविता ओजस्वी स्वरमे पाठ करऽ लागथि आ दोकानमे बैसल लोक मन्त्रमुग्ध जकाँ सुनैत रहय । बहुतो लोक तँ चिन्तूदादाक यैह खिस्सा आ कविता सुनबाक लेल आबि गेल करय ।

मुदा कहियो केओ ई नहि जानि सकल, चिन्तूदादा कतऽक निवासी छलाह, परिवारमे के सब छनि वा छलनि, ओकर सभक की हाल भेलनि, ओ पहिने कोन व्यवसायमे छलाह, की शिक्षा-दीक्षा छनि ? एहि बात सभक जिज्ञासा कयलापर ओ सहसा गुम्म भऽ जाथि । कखनो दीर्घ निश्वास छोड़ैत बाजथि - आब हमर अतीत की ? वर्त्तमानमे जे छी, से छी । एकटा शरणार्थीमात्र । जँ हमहूँ अपन बन्धु क्रान्तिकारीक संग शहीद भऽ गेल रहितहुँ तँ नीक भेल रहैत । दंगेमे मारल जैतहुँ, सेहो प्राणक मोहक कारणे नहि भेल !

साल पुरैत-पुरैत अगस्त मास आयल तँ चिन्तूदादा एहि चौककेँ नीक जकाँ साफ-सुथरा कयलनि । खत्तामे गुड़कल सड़क कूटऽवला रौलरक पाथरक पहिया छलैक, ओकरा चारि गोटेसँ मीलि चौकक बीचमे राखि देलथिन । पन्द्रह अगस्तकेँ खुट्टा-खुट्टी गाड़ि ओहिमे गान्धी, नेहरू, पटेल, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजादक फोटो सब टङलनि । एकटा कूटपर अंगरेजी, देवनागरी आ बंगलामे हाथसँ 'शहीद चौक' लीखि कऽ टाङि देलथिन । पाथरक पहियाक बीचमे धूरीवला भूर छलैक, ओहिमे एकटा बाँस पैसा देलथिन आ ओहिमे तिरंगा झंडा फहरा देलथिन । आ एहि चौकपर साले-साल एहिना होअऽ लागल । बादमे गणतन्त्र दिवस घोषित भेलापर छब्बिसो जनवरीकेँ शहीद चौकपर झंडा फहराओल जाय लागल । चिन्तूदादा एकर व्यवस्थापक रहैत छलाह ।

शहीद चौकक स्वरूप बड़ तेजीसँ बदलऽ लागल । सहे-सहे अनेको प्रकारक दोकान सब फूजैत गेलैक । दस-पन्द्रह वर्षक अभ्यन्तरे शहीद चौक गुलजार भऽ गेल । नगरक प्रमुख व्यावसायिक केन्द्र, चहल-पहलक स्थान । कोनो पूजीवला एकटा कमर्शियल कम्पनी खोलि देलक । ओ कम्पनी तँ नहि चलल किन्तु ओकर नाम चलैत रहि गेलैक ।

चिन्तूदादाक दोकानसँ पूब, नालाक ओहि पारक परती जमीन एकटा पूजीवला ठिकेदार कीनि लेलक । ओ ओहिमे बेस नमहर मकान बना लेलक । मकानक अगिला भागमे दोकान सब खोलबाक छोट-छोट कोठली सब बनौलक । मुदा ओकरा सामने छल स्वदेशी जलपान घर । तेँ कोठली सब किरायापर नहि लागि पबैत छलैक । दोसर, मकानक साइट सेहो मारल जाइत छलैक ।

ठिकेदार चिन्तूदादासँ स्वदेशी जलपान घर कीनि लेबाक हेतु अथवा हटबा देबाक हेतु प्रयत्न करऽ लागल । ओहिमे सफल नहि भेल मुदा जोगाड़ भिड़बैत रहल । ताही बीच एमरजेन्सी लागि गेलैक । एक दिन अकस्मात् नगरक सौन्दर्यीकरणक आ इनक्रोचमेंट हटयबाक नामपर एक ट्रक सरकारी मजदूर ओ सिपाही आबि हिनक दोकानकेँ तोड़ऽ लागल । चिन्तूदादा घबड़ा गेलाह । कार्पोरेशनक चेयरमैन ओतऽ गेलाह, शहरमे रहनिहार एक-दूटा एमेले ओतऽ गेलाह, कलक्टर ओतऽ गेलाह । अपन दुखड़ा आ विवशता कहलथिन । जे बात ओ अपना मुँहसँ कहियो नहि बाजल छलाह, से ओहि दिन रिफ्यूजी आ स्वतन्त्रता सेनानी होयबाक तर्क देलथिन । मुदा फल किछु नहि भेलनि ।

साँझ कऽ निराश भऽ शहीद चौकपर अयलाह तँ देखलनि, ओहि ठाम एकटा खऽढ़ पर्यन्त नहि । प्रशासनक आदमी सब किछु ट्रकपर लादि कऽ लऽ गेलनि । पत्नी खाली भेल जमीनपर अपन दुनू ठेहुनक बीचमे मूड़ी गाड़ने बैसलि छलथिन । चिन्तू दादा बड़ी काल धरि शून्यमे देखैत रहलाह । तहिनामे राति भऽ गेलैक ।

ओहि दिनका बाद चिन्तूदादा दुनू बेकतीक कोनो पता ककरो नहि लगलैक ।

पन्द्रह अगस्त आ छब्बिस जनवरीकेँ आबो ओहिना झंडा फहराओल जाइत छैक । ओहिना कार्ड-बोर्डपर शहीद चौक लीखि कऽ टाङल जाइत छैक । मुदा प्रचलित नाम कमर्सियले चौक चलैत छैक । जखन एहि चौकपर कहियो केओ शहीद भेले नहि छल तँ एकर नाम 'शहीद चौक' किएक रहओ ? कोनो दोकान तँ शहीद होइत नहि छैक । आ चिन्तूदादा तँ देशक आजादी लेल मुइलो नहि छलाह !

[प्रकाशन– कथादिशा, महाविशेषांक, 1997]



ठमकल घड़ी

ई टावर आ टावरक घड़ीकेँ बाजि होइतैक तँ बहुत किछु कहि जैतय । कहि जैतय एहि चौबट्टीक इतिहास आ अपन इतिहास, अपन अनुभव । अपन भोगल तीत-मिट्ठ स्वाद ।

समय ठमकल अछि की बढ़ि रहल अछि से निर्णय करब कठिन । ओना पंचांग आ कलेण्डरक अनुसार काल बीतैत रहलैक, बीति रहल छैक, आगाँ बीतैत रहतैक । ओहि कलेण्डरक हिसाबे आब तीस चालीस वर्षसँ ई स्थान भऽ गेल अछि टावर चौक । जहिया एहि ठामसँ दच्छिन बहुत दूर धरि विशाल गाछी पसरल रहै आ पोलो फिल्डमे बाङ आ फूटि उपजैत रहैक आ जाहि ठाम एखन जहल छैक ताहि ठाम मड़ुआ–मकै–राहड़ि उपजैत रहैक, तहिया ई साधारण चौबटिया मात्र रहैक । एकटा बाट पूबसँ पच्छिम आ दोसर बाट उत्तरसँ दक्षिण जाइत रहैक । चारू बाटक मिलान वा कटान भेलासँ चौबट्टी बनि गेल । ओना ई चौबट्टी बड़ महत्त्वक तहियो छल जहिया तुरुक वा मोगलक राज रहैक ।

टावर चौकसँ उत्तर एकटा भथल नाला छैक जे नगरक पच्छिम भागसँ पूब भाग धरि जाइत छैक । कोनो समयमे ई चाकर पाटवला धार छल । बूढ़–पुरान लोकक कहनाम जे एखन नगरसँ पच्छिम जे बागमती वा बङमत्ती धार अछि तकर मुख्य धार यैह छल । से जखन तुरुक सभक ढूसि अबैत छलैक तँ एही ठामसँ मोर्चाबन्दी करैत छल तेँ स्थानीय शासक सब एही ठामसँ आक्रमणकारीकेँ रोकबाक ब्यूह–रचना करैत छल । प्राय: फिरंगी सबकेँ ई इतिहास जानल छलैक । तेँ कालक्रमेँ एही ठाम अपन शासनक केन्द्र बनौलक ।

पूबसँ पच्छिम जाइत सड़कक दच्छिन सरकारी क्षेत्र आ उत्तर भऽ गेलैक जनताक क्षेत्र । थाना, नाका, कचहरी, पुलिसलाइन, पोस्ट आफिस, रेलवे स्टेशन, डाकबंगला, सर्किट हाउस, जज, कलक्टर, एस.पी. ओ आन आन अङरेज हाकिम सभक कोठी सड़कक दछिनबरिये इलाकामे । से, अङरेजी महकमा सभक अयलाक बाद ई चौबट्टी भऽ गेल चौराहा ।

तखन ई चौराहा ततेक जगजियार नहि । सड़क कातमे किछु डेरा सब, किछु कठघारा, दू–एकटा हलुआइक दोकान, किछु पानक दोकान, दू–एकटा पोथीक दोकान । मुदा अङरेज सब इतिहासक पन्नाकेँ देखि कऽ अपन महकमा स्थापित कयने छल से अनुभव लोककेँ कहियो भेलैक नहि । पहिल बेर अनुभव भेलैक बेयालिसक आन्दोलनमे । यैह ओ चौबट्टी वा चौराहा थिक जाहि ठाम हजारक हजार लोक जमा होयबाक कोसिस कयने रहय आ अङरेज सरकार अपन समस्त शक्ति ओकरा रोकबाकलेल लगा देने रहय ।

अगस्त मास रहैक । आन्दोलनी सब कचहरीमे आबि कलक्टरीपर तिरंगा झंडा फहरयबाक चेष्टामे छल । ओहि समयमे छल कुख्यात एस.पी. भिटाकर । कचहरीमे लोकपर अनधुन बेँत बरिसा रहल छल । बहुतो लोक नाहक मारि खा रहल छल । आन्दोलनी सब सौंसे कचहरीमे नारा लगाबय आ जखने भिटाकर अथवा सिपाहीकेँ दौड़ल अबैत देखय कि ओकालतिखानामे ढूकि जाय । बर्बर आ निष्ठुर होइतो अङरेजबा सबकेँ ओकालतिखानामे ढुकबाक साहस नहि होइक । तखन ओ सभ खौंझा कऽ कचहरिया लोककेँ ओध-बाध करऽ लागय ।

ओहनेमे सियावरमिसर अपन व्यक्तिगत काजेँ कचहरियेमे छलाह । इलाकाक नामी जमीन्दारक जेठ बालक । रेशमी कुर्त्ता, कान्हपर जड़ीदार चद्दरि, गरदनिमे सोनक चेन, हाथमे सोनहुल चेनवला घड़ी-एकटा सुभग ओ भव्य व्यक्तित्व । संगमे छत्ता, छड़ी आ बेग लेने दू-तीनटा अमला । मिसरजी अपन स्टेटक काजे कचहरीमे छलाह । हुनका एहि सबसँ मतलब नहि । आ निर्भीक छलाह एहि दुआरेँ जे ओ अङरेज सरकारक विरोधी नहि छलाह । अनेक बेर ओ अपन राजभक्ति प्रमाणित कऽ चुकल छलाह । हुनका डर कथीक ?

परन्तु भिटाकरक बेँत अकस्मात् हुनकहुँ पीठपर बजरि गेलनि आ ओ ऐँचि गेलाह । सुकुमार देह, पीठपर दहिन पाँखुरसँ बाम पाँजर धरि अपसव्य जनउक आकारमे लचलच करैत बेँतक साट उखड़ि गेलनि । ओ मरमसि कऽ रहि गेलाह । गुलामीक चोटक दर्दक अनुभूति तैखन भेलनि । खूनमे जेना सनसनी पैसि गेलनि । मुह आरक्त भऽ गेलनि जेना लिधुर बन्न दऽ फेकि देतनि ।

आहत मनक चीत्कार, आँकुस भोकल हाथीक चिंघाड़, चोटायल सापक फुफकार, क्रुद्ध सिंहक हुंकार समवेत निनाद विस्फोट करबाकलेल जेना औनाय लगलनि । ओ तुरन्त अपन बग्गीपर सवार भऽ डेउढ़ीपर आपस भऽ गेलाह । इलाकामे खलबली मचि गेल । गाम-गाम स्टेटक आदमी सब दौड़ऽ लागल । राता-राती दसकोसीमे खबरि पसरि गेल जे मिसरजी आन्दोलनी भऽ गेलाह आ परसू एहि जिलासँ अङरेजी राजकेँ उखाड़ि देताह । आन्दोलनी सभकलेल ई अविश्वसनीय सत्य बूझि पड़लैक मुदा ओहो सभ एहि बातकेँ पसारलक जे मिसरजी परसू कलक्टरीपर धावा करबाकलेल हसेड़ी जमा कऽ रहल छथि । बात पसरैत जा रहल छल जे रेल-तार पूल तोड़ल जायत, कलक्टरीपर तिरंगा फहराओल जायत, खजानाक ताला तोड़ल जायत, जेलकेर फाटक तोड़ल जायत आ आओर की ने ......।

तेसर दिन शहरमे पूब, पच्छिम, दच्छिन कातसँ लाखो लोकक जुलूस पहुँचि गेल । ओकर आगूमे छलाह मोटिया धोती, कुर्त्ता आ गान्धी टोपी पहिरने, हाथमे झंडा लेने मिसरजी । सब बाढ़िक पानी जकाँ कलक्टरी दिस बढ़ि रहल छल । अंगरेजी फौज एही चौराहाकेँ अपन अड्डा बना कऽ उमड़ैत भीड़केँ रोकबाक प्रयास कऽ रहल छल । अङरेज

औफीसर सब भीतरसँ आतंकित भऽ उठल छल । तेँ गोर्रा पल्टनकेँ सेहो अपना लग तैनात कऽ लेने छल । मुदा ओ सब गोर्राकेँ आगाँ नहि पठा कऽ देसी सिपाहीकेँ लाठी ओ गोली चलयबाक हुकुम दऽ कऽ आगाँ पठौलक । अपने भाइसँ अपना भाइक खून बहयबाक चतुरता ओकरा सबकेँ खूब अबैत छलैक ।

पहिने लठिधर पुलिस आगाँ बढ़ल । ओमहर गगनभेदी नारा ऊठि रहल छल –

वन्दे मातरम् !

भारत माता की : जय !

जेल का फाटक : तोड़ दो !

अङरेजी राज : नाश हो !

पुलिस अबैत देरी लाठी बरिसाबऽ लागल । पहिल प्रहार मिसरजीपर भेलनि । ओ खसि पड़लाह । लाठी बजरैत रहल, कान–कपार फूटैत रहल, लोक खसैत रहल । मुदा केओ पाछाँ घूमि कऽ पड़ायल नहि । सब सड़कपर पड़ि रहल । पछिला, लोक हुँकार करैत रेड़ि कऽ आगाँ बढ़ि गेल । पुलिस लाठी चलबैत पाछाँ हटऽ लागल । आन्दोलनकारी सब तिरंगा झंडा खूब ऊपर उठा–उठा कऽ नारा लगाबऽ लागल – अङरेज हमारा दुश्मन है ! पुलिस हमारा भाइ है !'

पुलिसक अङरेज हाकिम सभक चेहरापर पसेना चुहचूहा गेलैक । जनता तँ शान्त सागर होइत अछि, जाहिमे आक्रोशक लहरि उठऽ लगैत छैक तँ ओ पैघ–पैघ जहाजकेँ सनठी जकाँ तोड़ि कऽ फेकि दैत अछि । अङरेज सब एखन धरि छेंड़ी–भेंड़ी जकाँ पड़ाइत लोककेँ देखने छल । लाठीक परवाहि कयने बिना निरन्तर आगाँ बढ़ैत जनसमुद्रक एहन ढेहुकेँ पहिल बेर देखने छल । एहन ढेहुकेँ लाठीसँ रोकब असम्भव जानि बन्दूकधारी पुलिसकेँ फायर करबाक हुकुम देलक ।

जलूसक नारा आर घनघोर भऽ उठलैक – पुलिस हमारा भाइ है ! पुलिस हमारा भाइ है ! पुलिस हमारा भाइ है !'

पुलिस राइफल तानि पोजीशन लऽ लेलक । आन्दोलनी सब नारा लगबैत छाती तानि सहे–सहे आगाँ बढ़ऽ लागल । अकस्मात् एकटा पुलिस बन्दूक कान्हपर राखि पाछाँ घूमि गेल आ अपन अङरेज औफीसरक सामनेमे अटेंसनमे ठाढ़ भऽ सलामी देलक । फेर अपन बन्दूक ओकरा आगूमे फेकैत बाजल– साहब ! हम अपना भाइलोगपर गोली नहीं चलायेगा ।'

–यू ब्लडी ! सरकार का हुकुम नहीं मानता !' साहेब दाँत पिसैत, गारि पढ़ैत बाजल ।

–नहीं मानता, साहब !' ओ सिपाही अपन मुरेठा आ उर्दी–पेटी खोलि कऽ साहेबक आगाँ फेकि देलक । जुलूसक नारा औरो घनघोर भऽ उठल– पुलिस हमारा भाइ है !'

ओहि ठाम फायर करबाक हेतु राइफल तनने, पोजीशन लेने जतेक सिपाही छल, से सब धाँइ-धाँइ मुरेठा आ उर्दी-पेटी उतारि-उतारि कऽ फेकऽ लागल । साहेब बहादुर सब लंक लऽ कऽ पाँछा मुँह पड़ायल ।

ई चौराहा एकर गवाह अछि । आ गवाह अछि स्वतन्त्रताक तिथिसँ एखन धरिक समयक । स्वतन्त्रता बाद एहि चौराहापर पाँच महलक ऊँच टावर बनल । दोसरका महलपर गान्धीजीक संगमरमरक मूर्त्ति स्थापित भेल आ सबसँ ऊपरवला महलसे विशाल चौमुख घड़ी लागल । सबसँ ऊपरमे शीर्षपर स्वतन्त्र भारतक राजचिह्न चौमुख सिंहवला अशोक स्तम्भ-शीर्ष बनाओल गेल । आ तहियासँ ई स्थान, ई चौराहा भेल- टावर चौक ।

टावर चौक एकटा जीवन्त स्थान बनि गेल । कोनो आन्दोलन, प्रदर्शन, विरोध ओ समर्थनक सामर्थ्य, उल्लास ओ आक्रोशक आवेशक अनुमान एही ठाम आबि कऽ भऽ पबैत छैक । नुक्कड़ सभा, पुतला जरयबाक अथवा शीतलहरीमे सार्वजनिक घूर लगयबाक हेतु ई सबसँ प्रशस्त स्थान । होटल, केबिन, पानक दोकानक कठघारा, जोलही कपड़ाक दोकान, पत्र-पत्रिका आ एकबार सभक स्टाल, परचून, रेडीमेड आ आरो भाँति-भाँतिक दोकानसँ टावरक पूब, पच्छिम आ उत्तर दिशाक सड़क सज्जित । दिन भरि कचहरिया लोकक भीड़-भाड़ । पैरवी-पैगामवलाक हजूमसँ हलचल मचैत ।

चारि-पाँच बजेक बाद परिस्थिति बदलैत अछि । टावर चौकक सेवन कयनिहार लोकक ड्यूटी बदलि जाइत अछि । राजनीतिक, सामाजिक व्यक्ति, हीरो, गुरू, सीटी बॉस, ठिकेदार, पैरवीकार लोकक भीड़ बढ़ि जाइत अछि । सरकारक पक्ष, विपक्ष आ निष्पक्ष लोक, राजनीतिक नेताक समर्थक ओ असन्तुष्ट कार्यकर्त्ता सब छोट-छोट मंडली बना कऽ सार्थक, निरर्थक, व्यर्थक बहसमे लागल अथवा फुसुर-फुसुर करैत अपन अपन मन्त्रणामे व्यस्त । सन्ध्याकालमे बिजलीक प्रकाशसँ बेस रमनगर भऽ जाइत छैक कलकत्ताक चौरंगी आ दिल्लीक चान्दनी चौक जकाँ । यद्यपि आब साँझ कऽ बिजली रहिते न छैक । दोकान सबमे पेट्रोमेक्स, लैम्प, लालटेम वा मोमबत्ती जरैत रहैत छैक । अकच्छ भऽ गेलापर पैघ दोकानवला सब साझी जेनरेटरक व्यवस्था कयलक अछि, जाहिसँ किछु चकमकी अवश्य रहैत छैक । मुदा बिजलीक जे रौनक रहैत छैक से एहिमे कहाँ ? तैयो लोक-समागममे कोनो व्यवधान नहि होइत छैक । कोनो अन्तर नहि पड़ैत छैक ।

जाहि दिन कोनो पैघ सरकारी काजक टेंडर जमा कयल जाइत छैक अथवा टेंडर फूजैत छैक, ओहि दिन भीड़ बेसी बढ़ि जाइत छैक । केबिन आ होटलवलाक बिकरी बढ़ि जाइत छैक । जँ कोनो मिनिस्टरक अबैया रहैत छैक तँ दू तीन दिन पहिनहिसँ भीड़ बढ़ि जाइत छैक ।

सबसँ अधिक चुनावक समयमे, नोमिनेशन फाइल करबासँ लऽ कऽ मतगणनाक अन्तिम दिन धरि टावर चौक भऽ जाइत अछि कोनो पैघ सैनिक शिविर जकाँ । कतहु

ठाढ़ होयबाक स्थान खाली नहि रहैत छैक । मतक जोड़-घटाव, गुणा-भाग, परिणामक ज्योतिषीय गणना, सन्धि-विग्रहक तालमेल, दाव-पेंचक घुर्ची-फिर्ची, सब एही ठाम ओझराओल-सोझराओल जाइत अछि । कहियो, तुरूक-मोगल कालमे एहि चौबट्टीपर मोर्चाबन्दी कयल जाइत छल तँ साहेबो बहादुर सब एही चौराहापर मोर्चा लगबैत छल । आब एहि टावर चौकपर स्वतन्त्र भारतक मोर्चाबन्दी होइत अछि ।

अवश्ये एहि जनसंकुल स्थानमे, टावरक दोसर महलपर ठेहुन भरेँ बैसल, ठोड़ीपर मोड़ल आङुर रखने छगुनताक मुद्रामे पूब दिस तकैत गान्धीजीक मूर्त्ति दिस ककरो दृष्टि नहि जाइत छैक । मासक पहिल सप्ताहमे सैकड़ोक संख्यामे स्वतन्त्रता सेनानी सब, ट्रेजरीसँ पेन्सन लियऽ एही बाटेँ जाइत छथि । आफिसमे पाँच-दस टाका दऽ कऽ आ बेसी बकाया राशि रहलापर बेसियो टाका किरानीकेँ पान खयबाऽलेल दऽ कऽ, अपन पेन्सन लऽ कऽ एही बाटेँ आपस जाइत छथि । मुदा बहुतो स्वतन्त्रता सेनानीकेँ इहो ने बूझल रहैत छनि जे एहि टावर चौक़पर गान्धीजीक मूर्त्तियो छनि । हँ, कहियो काल कोनो बूढ़, जर्जर व्यक्ति, जकर पैरमे बेमाय फाटल होइक, वस्त्र पुरान, मैल-चिकाइट आ मसकल होइक, से कऽल जोडि़ प्रणाम करैत अथवा गोटेक श्रद्धाक फूल मूर्त्तिपर फेकैत देखऽमे आबि जाइत अछि । प्राय: एहन लोक कहियो गान्धीजीक सम्पर्कमे रहल होयत । मुदा देखनाहर सब विस्मयसँ एहन लोककेँ देखऽ लगैत अछि आ लगैत अछि जेना गाँधीजी क्षुब्ध भऽ कऽ निरन्तर ताकि रहल होथि ।

रामरस रंगमे ढेउरल चालिस फीट ऊँच ई टावर जौंडिसक रोगी जकाँ ठाढ़ समयकेँ देखैत आबि रहल अछि । आ जहिना अपने ई ठाढ़ अछि निश्चल, तहिना ठाढ़ छैक एकर घड़ीक सुइ निश्चल-स्थिर, जेना तराटक लागि गेल होइक । आँखिक डिम्हा अविचल भऽ गेल होइक ।

कहियो दिन अथवा रातिमे तीन बाजि कऽ पचपन मिनटपर ई घड़ी रूकि गेलैक तँ रुकले रहि गेलैक । समय बढ़ैत गेल, बीतैत गेल, बहैत गेल । मुदा घड़ी ठमकल अछि । सैनिक सब कबाइतमे 'मार्क आफ टाइम'क क्रिया करैत अछि जाहिमे पैर तँ चलैत रहैत छैक मुदा शरीर ठामहि ठाम ठाढ़े रहैत छैक । पैरमे गति तँ रहैत छैक मुदा प्रगति नहि रहैत छैक । एको इंच आगाँ-पाछाँ नहि घसकैत छैक । मार्क आफ टाइम वा मार्च आफ टाइम भऽ रहल छैक आ टावरक ई विशाल घड़ी आइ तीस-पैंतिस बरखसँ रुकल अछि । ठमकल अछि । लगैत अछि जेना ई ठमकल घड़ी स्वतन्त्रताक स्मारक-टावरक पथरायल आँखि होइक, दृष्टिहीन, भावहीन !

[प्रकाशन- भाखा, मइ-जून 1989]



परस्पर

दिसम्बर मासक विकट शीतलहरी आ घनगर कुहेस लागल । ताहू समयमे राँचीक लेल एकटा टू-बाइ-टू डी-लक्स कोच लागल छल । लोक बेसी नहि । बूढ़ा-बूढ़ीकेँ बसक माँझमे दहिना कातवला दुनू सीट भेटि गेलनि । मोटा-चोटा आ बोराकेँ ऊपर छत पर लऽ जा क़ऽ बूढ़ा अपनेसँ रखबौलनि ।

बूढ़ी नीचाँसँ कहैत छलथिन-हे ! ठीकसँ रखबायब । कयटा फूटऽ-भाङऽवला वस्तु सब छै ।'

बूढ़ा उतरि कऽ नीचाँ अयलाह । अपने अटैची आ बैग लेलनि आ बूढ़ी डोलची लऽ लेलथिन । अटैची आ डोलची उठयबा काल 'हम लेब तँ हम लऽ लै छी' कहि किछु छीना-झपटी भेलनि आ फेर जेना मौन समझौता भऽ गेलनि ।

बसमे आबि बूढ़ा दहिना भाग खिड़की लग बैसलाह आ बूढ़ी बाम भाग सीटपर बूढ़ासँ सटि कऽ बैसि गेलीह ।

बूढ़ा नोकरी करैत धन-बीत बेस अरजलनि । पाँचो बेटाकेँ नीक जकाँ पढ़ौलनि । बियाहदान करौलनि । सभकेँ नोकरी-चाकरी भऽ गेलनि । सभ अपन-अपन काजपर देशक विभिन्न शहरमे रहि रहल छलनि ।

गामपर मकान छलनि मुदा छोट सन, जेहन पुश्तैनी भेल करैत छैक । बूढ़ीकेँ बूढ़ासँ बेसी काल मकाने लऽ कऽ झंझ-मंझ भेल करैत छलनि । बूढ़ीकेँ एही बातक चिन्ता होइत रहैत छलनि जे अपने दू बेकती छी, पाँचटा बेटा अछि । पाँच गामसँ पाँचटा पुतोहु आओत । ओकर सभक फेर बाल-बच्चा होयतै । ओ सभ कतऽ रहत, कोना रहत ?

बूढ़ाकेँ बूढ़ीक बात सुनैत-सुनैत कान पाकि गेलनि । पाछाँ अपनो विचारलनि जे पत्नी कहैत तँ छलथिन ठीके । से ओ रिटायर होइसँ पहिने मकान बना लेब उचित बुझलनि । ओ जेना-तेना जी-जान लगा कऽ पाँच दुना दस आ दू; बारह कोठलीक मकान बना लेलनि । चौकठि, केबाड़, खिड़की, पलस्तर, लैट्रिन-बाथरूम, रंग-रोगनसँ मकान समतूल कऽ देलथिन ।

रिटायर भेलाक बाद बूढ़ा नियमित रूपसँ गामपर रहऽ लगलाह । अपन

खेती–पथारी अपनहि कराबऽ लगलाह । उपजा–बाड़ी सेहो नीके होअऽ लगलनि । कमी कथूक नहि ।

बूढ़ा–बूढ़ीक बेटा–पुतोहु, पोता–पोतीसँ भरल–पुरल परिवार भऽ गेल छलनि । मुदा ओहि तीन गंडा कोठलीवला मकानमे रहैत छलाह बस दू बेकती । एकटा खवास आ एकटा खवासिनीकेँ पोटि–पाटि कऽ रखने छलाह, तँ ओहो राति कऽ अपना–अपना घर चल जाइत छलनि ।

एहन नहि जे मकान बनलापर बेटा–पुतोहु कहियो नहि रहलथिन । गामपर सब पुतोहु रहैत छलथिन । बेटा लोकनि काज–परोजनमे वा छुट्टी भेटलापर गाम आबि कऽ रहैत छलथिन । मुदा सहे–सहे कोनो बेटा परदेशक असुविधा देखाय अपन परिवारकेँ संग लेने गेलथिन । कोनो पुतोहु देयादनीसँ झगड़ा बेसाहि अपन पतिक संग चल गेलथिन । कोनो बेटा–पुतोहु रूसिए कऽ चल गेलथिन । रहि गेलथिन सभसँ छोट बेटा–पुतोहु । से एहि दुआरेँ जे छोटका बेटाकेँ नोकरी नहि भेल छलनि ।

छोटको बेटाकेँ बरख दुइएक पहिने सरकारी नोकरी भेटि गेलनि । राँचीमे पोस्टिंग भेलनि । ओहि ठाम डेरा–डंडाक सल्तनत भैयो गेलापर अपन कनिञाकेँ गामपर रहऽ देने छलथिन । कहि नहि जे लऽ जयबामे संकोच भेलनि कि माय–बापक मात्सर्ये छोड़ने रहलथिन ।

घरमे अन्न–पानि सम्हारब, जन–बोनिहारक खायक–बोनि, बीया–बालिक सैंत–सम्हार, घर–दुआर बहारब–सोहारब, भानस–भात करब – मने काजक अड्वाल रहैत छलनि । छोटकी कनिञाकेँ ई सब करबामे बड़ भारी लगैत छलनि । ओ काजसँ जेना छीह कटैत रहैत छलथिन । एहिपर बूढ़ीकेँ बाजऽ पड़ैत छलनि । छोटकी कनिञाकेँ बूढ़ीक बाजब सोहाइत नहि छलनि ।

छोटकी कनिञा छलीह मुँहक जोरगरि । ओहो सासुकेँ जबाब दियऽ लगलथिन । पाछाँ तँ ससुरोक धाख राखब छोड़ि देलथिन । बूढ़ी काजो करथि आ बजितो रहथि आ ओमहर पुतोहु सासुक एको बातकेँ तऽर नहि होअऽ देथिन । बूढ़ा जखन आङन आबथि तँ एके रङताल देखथि – भँड़ारमे, की भनसाघरमे बूढ़ी बड़बड़ाइत आ ओमहर अपना घरमे छोटकी कनिञा भनभनाइत ।

पछिला बेर छोटका बेटा गाम अयलथिन तँ छोटकी कनिञाकेँ गाल फुलौने देखलथिन । मायकेँ सेहो बहलायल सन व्यवहार देखलथिन । जखन बेटा राँची जाय लगलथिन तँ बूढ़ी बेटाकेँ कहलथिन – बाउ रे ! कनिञाकेँ संगहि लेने जाहुन ।' कनिञा सुनलथिन तँ चटपट तैयार भऽ गेलथिन । बूढ़ाकेँ ई पसिन्न नहि तैयो चुप्पे रहलाह ।

आब तँ छोटको बेटा–पुतोहुक राँची गेला गोटेक बरखसँ उपरे भऽ गेल छलनि । घरपर बूढ़ा आ बूढ़ी । बूढ़ाक ताक–छेम बूढ़ी करैत छलथिन आ बूढ़ीक ताक–छेम बूढ़ा ।

एहनेमे एक दिन राँचीसँ छोटका बेटाक चिट्ठी अयलनि । बेटा झँपले-तोपले संकेत देने छलथिन जे हुनक कनिञाकेँ कल्याणक योग्यता छनि । जल्दीए अस्पतालमे भरती करयबाक छनि । ककरो अयबाक सम्बन्धमे किछु ने लिखने छलथिन ।

एतेक दिनमे बूढ़ीक तामस विलीन भऽ गेल छलनि । झगड़ो करबाक अनमाना नहि रहने सुन्न-सुन्न लगैत छलनि । तेँ अदनीयो सन बातपर बूढ़ेसँ लड़ि लैत छलीह । बूढ़ा सेहो लड़ि कऽ रमन-चमन कऽ लैत छलाह । झगड़ा एहि बात लऽ कऽ बेसी काल होइत रहैत छलनि जे 'अहाँ पथ-परहेज नहि करैत छी' तँ 'अहाँ समयपर नहाइत नहि छी' । 'अहाँ समयपर दवाइ नहि खाइ छी' तँ 'अहाँ मिरचाइ-मसल्लापर बेसी दौड़ै छी' ।

चिट्ठी पबैत देरी बूढ़ा-बूढ़ी दुनूक मन हुलसि गेलनि । किछु-किछु चिन्ता होअऽ लगलनि जे 'एसगरमे ओतऽ कोना सम्हरतै । दुनू तँ नवे-नौतार । किछु बूझऽ-सूझऽ अबै नै छै । अबै लय नै कहलक तेँ अनठा कोना देबैक ? सन्तान थिक ।

बूढ़ा चिन्तित होइत कहलथिन - हम राँची चल जाइ छी ।'

बूढ़ी डाँटि देलथिन - अहाँ जा कऽ की करबै ? जनी-जातिक बात अहाँ की बुझवै ? ककरो संग कऽ हमरे पठा दियऽ । कनिञाक ई पहिलौठ छिऐ । लगमे कोनो जनानीक रहब जरूरी छै ।'

बूढ़ा गुम्म रहि गेलाह । कनेके कालमे बहुत किछु सोचि गेलाह । बूढ़ी राँचीमे कोना रहतीह । ओ तँ पुतोहुक सेवा करथिन । हुनकर सेवा के करतनि ? एहि ठाम तँ हम ध्यान रखैत छियनि ने तँ खाइ विना, दवाइ विना सुखाइये-टटा कऽ रहि जैतथि ।

बूढ़ी बाजि तँ गेलीह मुदा मोने-मोन ओहिना गुन-धुनमे पड़ि गेलीह, जेना बूढ़ा । बूढ़ी कहलथिन जे- अहूँ राँचिए चलू ।'

बूढ़ा गुम्हरि उठलाह-आहि रे बा ! आ एहि ठामक असार-पसारकेँ ककरापर छोड़ि दियौ ? सभ बिरहा जायत । फेर तँ आयब एही घर । आ आन के अछि जकरा संग लगा दियऽ ? आ आन तँ आने होइत छै ।'

बूढ़ी गोँहछि कऽ कहलथिन - तँ हमरे राँचीवला बसमे चढ़ा दियऽ । हम पुछैत-पुछैत चल जायब ।'

-तँ चल जाउ ने ! के रोकैए ?' बूढ़ा लोहछि कऽ बजलाह ।

अन्ततः बूढ़ा-बूढ़ीमे सहमति भेलनि जें बूढ़ा बूढ़ीकेँ राँची पहुँचा देथिन । अपना आँखिएँ बेटा -पुतोहुकेँ देखि लेताह आ दू-तीन दिनमे आपस भऽ जयताह । बूढ़ी पुतोहु लग बच्चा होयबा धरि रहतीह ।

बूढ़ी इन्तजाममे लागि गेलीह । पहिने घरक इन्तजाम । हुनका पाछाँमे बूढ़ाक खयबा-पिउबाक व्यवस्था कयलनि । चाउर फटकलनि । दालि दरड़लनि । मसल्ला सब ओरिया देलथिन । स्टोव पजारबालेल मटियातेल, सलाइ, पोकर सब ओरिया कऽ राखि देलथिन । चाहक पत्ती आ चिन्नी डिब्बामे बन्द कऽ राखि देलथिन । एहिना कपड़ा-लत्ता खीचि-खाचि चौपेति कऽ बाकसमे राखि देलथिन । जे वस्तु सभ जेना-जतऽ राखथि से बूढ़ाकेँ बुझबैत जाथिन ।

बूढ़ीकेँ राँची लऽ जयबालेल सेहो ओरियाबऽक छलनि । जे वस्तु घरमे छलनि से ताकि-ताकि कऽ बहार कयलनि । जे नहि छलनि से बूढ़ासँ फरमाइस कऽ बजारसँ मङबौलनि ।

परिसौतीक यावन्तो सामान- सुठौराक पुड़िया, जमाइन, हीङ, आद, गूड़ आ कड़ूतेल पर्यन्त मोटरीमे बान्हि लेलनि ।

बूढ़ा कहबो करथिन जे- ई सब की लऽ रहल छी ?'

बूढ़ी कहथिन- अहाँ नहि बुझबै । राँचीमे ई सब कतऽ भेटतै ? के आनि देतै ? ओरिआयल रहत तँ बेरपर ताकऽ नहि पड़त ।'

अन्ततः बूढ़ा कहलथिन जे- एहि शीतलहरीमे ओढ़ना सेहो लऽ लियऽ । राँचीमे और जाड़ होइत हेतै । बातरससँ तँ कुहरिते रहैत छी । ठंढामे और चकुढ़ि कऽ चर्खा भऽ जायब । अटैचीमे दवाइ सब राखि देलहुँ अछि । मोन पाड़ि कऽ खाइत रहब ।'

बूढ़ी कहलथिन- हमरा तँ अहाँक चिन्ता अछि जे हमरा पाछाँमे अहाँ ने समयपर नहायब-खायब, ने पथ-परहेज राखब । ने दवाइ खायब । खेते-पथारमे लागल रहब ।'

बूढ़ा बजलाह नहि, खाली बूढ़ी दिस तकैत रहि गेल छलाह जेना बूढ़ीक आँखिक गहिरैकेँ थाहि रहल होथि ।

बस चलबामे विलम्ब छलैक । सभक हाथ पैर ठिठुरि रहल छलैक । बूढ़ा बजलाह- चाह पीब ? दोकान परसँ आनि दियऽ ?'

बूढ़ी कहलथिन- कनेके काल पहने तँ पीने छलहुँ । अनेरे ठंढ़ामे बाहर कथी लय जायब ?'

बस रवाना भऽ गेल । शहरसँ बाहर भेलापर गति पकड़लक । खिड़की सभ बन्द छलैक तैयो ओकर गऽह सबसँ सटसट बसात दागि रहल छलैक । यात्री सब हाथ-पैर घसमोड़ि कऽ अपन-अपन बचाबा कऽ रहल छल ।

बूढ़ी डोलचीसँ चद्दरि निकालि कऽ बूढ़ा दिस बढ़ा देलथिन । अपनहुँ शाल

निकालि अपना देहपर राखि लेलनि । फेर बूढ़ाकेँ कनझप्पा टोपी, मफलर, दस्ताना निकालि-निकालि देलथिन ।

बूढ़ा कनेक बिहँसैत कहलथिन- एखने ई सब लटका लियऽ अए !'

–बड़ जाड़ होइत छै । हाथ-पैर ठिठुरि रहल छै । पहिरि लियऽ, ने तँ ठंढा लागि जायत ।' बूढ़ी ई कहैत बूढ़ाक हाथमे दस्ताना पहिराबऽ लगलथिन ।

राति बेसी भऽ गेल छलैक । बस घाटीमे प्रवेश कऽ गेल छलैक । यात्री सब अपना-अपना सीटपर औंघा रहल छल । ठाढ़ निरन्तर बढ़िते जा रहल छलैक । बस जरकिंगमे एकेबेर हुमचि गेलैक । बूढ़ीक आँखि फूजि गेलनि । ओ बूढ़ाकेँ जाड़सँ सिटसिटाइत देखलथिन । ओ डोलचीसँ पतरका कम्बल बाहर कयलनि । ओकरा खोलि कऽ आधा बूढ़ांक देहपर पसारि देलथिन आ आधा अपना देहपर राखि लेलनि ।

बस अपना गतिसँ जा रहल छल । अगिला केबिनमे खलासी आ कंडक्टर जागल छल । कंडक्टर थोड़े-थोड़े कालपर तमाकू चुना कऽ ड्राइवर दिस बढ़ा दैत छलैक । खलासी केबिनमे बैसल औंघाइत यात्रीकेँ डाँटि-झमाड़ि कऽ जगा दैत छलैक । एम्हर बसमे सब यात्री अपन-अपन सीटपर झूलैत सूतल छल । ठंढीमे सब जेना बान्हल मोटरी बनि गेल छल ।

अकस्मात् बूढ़ाक आँखि फुजलनि तँ देखलनि बूढ़ीक देहपरसँ कम्बल ससरि गेल छलनि । ओ घोंकड़ी लगौने छलीह । बूढ़ा अपन चद्दरि बूढ़ीकेँ ओढ़ा देलथिन । फेर ओहिपरसँ कम्बल दोबर कऽ ओढ़ा देलथिन । अपने हाथ पैर समेटि कऽ सूति रहलाह ।

अहलभोरे बस राँची बस स्टैंडमे जा कऽ हुमचि कऽ रुकल । बूढ़ा धड़फड़ा गेलाह । आँखि फुजि गेलनि । ओ चकित छलाह ई देखि कऽ जे हुनका देहपर चद्दरि आ कम्बले नहि बूढ़ीक शाल पर्यन्त ओढ़ाओल छनि आ बूढ़ी सीटपर पैर मोड़ि ठेहुनक बीचमे मूड़ी गोंतने सूतलि छथि ।

बूढ़ी धड़फड़ा कऽ उठि गेलीह । बूढ़ापर नजरि गेलनि । देखलथिन हुनकापर गड़ल स्थिर दृष्टि । हुनकहु बूढ़ापर दृष्टि स्थिर भऽ गेलनि । परस्पर दुहू एक दोसराक आँखिमे गहींर धरि प्रवेश कऽ जेना कहि रहल होथि - अपन ध्यान राखब ।'

फेर कपड़ा सब सैंति कऽ बूढ़ा अटैची आ बैग लेलनि । बूढ़ी डोलची लेलनि । बूढ़ीकेँ आगाँ कऽ पाछाँसँ बूढ़ा बससँ उतरि गेलाह ।

[लेखन- 3 सितम्बर 1998, प्रकाशन- अंतिका, जन-मार्च 1999]



मकुआ छड़ी

सुवंशबाबा दलानक चौकीपर गुमसुम बैसल छलाह । आँखिमे नोर तँ नहि छलनि मुदा बूझि पड़ैत छल जेना गहन उदासीक परदाक पाछाँसँ शोकक धारा छिलकि ने जाय । लोकसब खरिहानमे थहाथही कऽ रहल छल । किछु लोक आङन जाइत छल, किछु गोटे आङनसँ बहराइत छल । सुवंशबाबा सबकेँ टुकुर-टुकुर देखैत छलाह ।

किछु गोटे बजैत आङनसँ बहरा रहल छल जे - ठेङाठाही बूढ़ी विदा भऽ गेलीह । बाबाक अछैत सधवा रूपमे सद्‌गति भेटि गेलनि ।'

सुवंशबाबाकेँ ई सब सुनैत नीक नहि लगैत छलनि । मुदा केओ हुनका लगमे सान्त्वना देबऽलेल नहि अबैत छलनि । लोक जेना ई अनावश्यक बुझैत छल । बेर झुकैत-झुकैत बूढ़ी दाइमनि बाबीक प्राणवियोग भऽ गेलनि मुदा केओ आबि कऽ हुनका नहि कहलकनि जे एक बेर मुइलो मुँह देखि जाथुन ।

अपन ओ आन-आन आङनक बेटी-पुतोहु सबसँ आङन-दुआरि भरल छल । तेहनमे सुवंशबाबाकेँ आङनमे स्वयं चल जयबामे संकोच होइत छलनि ।

सुवंशबाबा सोचि रहल छलाह जे दाइमनि तँ कहने छलीह जे जिनगी भरि संगहि रहब तखन एना छोड़ि कऽ किएक चल गेलीह ?

सुवंशबाबा सुदूर अतीतमे चल गेलाह । पिता छलथिन छोट सन जमीन्दार । अपने छलाह भाइमे एकसर । पाँच बरखक रहथि तँ माय मरि गेलथिन । बाप दोसर बियाह नहि कयलथिन । विधवा पिउँसि आ पिता सैह सुवंशक पालन-पोषण कयलथिन । उपनयनक बादेसँ पिउँसि सुवंशक पिताकेँ सुवंशक विवाह करा देबऽ कहैत छलथिन । मुदा सुवंशक पिता कहथिन जे सुवंशक एखन विवाह करा देने एकटा और लेध-गेधक गोँहरि करऽ पड़त । सुवंश समर्थ भऽ जाथि तँ तखन विवाह करौने सेयानि-समर्थि कनिञा औतीह तँ घर सम्हारि लेतीह ।'

सुवंश जखन चेठनगर भेलाह तँ बेसी काल बापेक संग रहऽ लगलाह । बाप जेना रहथिन, जेना-जेना करथिन तहिना सुवंशो करऽ लगलाह । बाप जकाँ सुवंशो धोती-कुर्त्ता पहिरथि, कान्हपर चद्दरि लेथि, हाथमे मकुआ छड़ी लेथि आ बापक पाछाँ-पाछाँ, खेत-पथार, गाछी-बिरछी, जन-बरजन्ना ओतऽ गेल करथि ।

बहुत ताक-छेमक पश्चात् सुवंशक पिताकेँ एकटा सुशीला पवित्र कन्या मोनमे बसि गेलनि । सुवंशक विवाह हुनकहिसँ करौलथिन । वैह कन्या छलीह– दाइमनि, सुवंशनारायणक धर्म पत्नी । दाइमनिकेँ विवाहक सोलहमे दिन दुरागमन करा कऽ लऽ आनल गेलनि ।

दुरागमनक दोसर दिन सुवंशक पिता कहलथिन अपन बहीनकेँ मुदा सुनौलथिन पुतोहुँकेँ- आब ई घर-दुआरि, बीत-बाखर, भानस-भातेक नहि सुवंशोक सब भार कनिञेपर भेलनि । हम आब निश्चिन्त भऽ कऽ रहब ।'

दाइमनि कोबर घरमे सब सुनैत रहथि । जहिना ससुर कहलथिन तहिना दाइमनि सौंसे आश्रमकेँ खूब नीक जकाँ सम्हारि लेलनि । एक युगसँ भम्ह पड़ैत आङन-घर रमन-चमनसँ भरि गेल । लागल जे स्वयं अन्नपूर्णा आबि गेल होथि ।

सुवंश सबेरे नहा-सोना कऽ किछु स्तोत्र पाठ कऽ पनिपिआइ करथि आ बाहर निकलि जाथि अपन काजमे । ओहि दिन सेहो धोती-कुर्त्ता पहिरि, कान्हपर डोपटा आ हाथमे मकुआ छड़ी लऽ कऽ विदा होअऽ लगलाह तँ दाइमनि रस्ता छेकि लेलथिन । सुवंश हुनक मुँह दिस अकचका कऽ ताकऽ लगलाह ।

दाइमनि विहुँसैत हुनका हाथसँ छड़ी छिनैत कहलथिन - ई की बूढ़-बुढ़ानुस जकाँ हाथमे छड़ी लऽ कऽ विदा भऽ जाइत छी ?'

- आहि रे बा ! छड़ी जमीन्दारी रोआबक चेन्ह होइत छैक ।'

- जमीन्दारकेँ कोनो सींघ-नाङरि होइत छैक जे रहब जरूरी होइक ?'

सुवंश कहलथिन- रस्ता-पयरा, खेत-पथारमे चलबामे आस दैत छैक । आब तँ एकर हमरा अभ्यास भऽ गेल अछि ।'

- अहाँकेँ आस देनिहार तँ हम छी । जिनगी भरि आस दैत रहब । तखन छड़ीक कोन काज ?'

—सब ठाम तँ अहाँ नहि रहब ।' सुवंश विनोदक स्वरमे बजलाह ।

- किएक ?' दाइमनि रभसैत सन स्वरमे कहलथिन - मोनमे तँ हम रहबे ने करब !' हमरे मोन पाड़िलेल करब । बस चिक्का पार ।'

दाइमनि छड़ी लऽ कऽ सन्दुकमे बन्द कऽ देलथिन, तँ आइ धरि ओ बिरहायल तँ नहि मुदा सन्दुकेमे संजोगल राखल रहल ।

सुवंश आ दाइमनिक परिवार पसरैत-चतरैत गेलनि । बेटा-पुतोहु, बेटी-जमाय, पोता-परपोता, नाति-परनातिसँ भरल पुरल परिवार देखि कऽ सुवंश आ दाइमनिकेँ अवर्णनीय सुखक अनुभूति होइत छलनि । तथापि वयसक वार्द्धक्य, आँखि, कान, पैर इत्यादिक दुर्बलताक कारणे सुवंश आ दाइमनिक मध्य दूरी बढ़ैत गेलनि, संवादहीनता बढ़ैत गेलनि । सुवंशबाबा तँ कनेक थेहगरो छलाह मुदा दाइमनि बाबी तँ जेना थौआ-थाकर भऽ गेल छलीह । कुभेला तँ नहि होइत छलनि परन्तु कोनहु काजक हेतु अनकहि असरा भऽ जाइत छलनि आ एहि दुआरेँ बेसी काल कुन्हरैत रहैत छलीह ।

ओहू अवस्थामे दाइमनिकेँ सुवंशक चिन्ता बेसी रहैत छलनि । धिया-पुताकेँ सोर कऽ कऽ पुछैत छलथिन- 'बबाकेँ चाह देलहुन ?' 'बबाकेँ पनिपिआइ देलहुन ?' 'बबा नहयलथुन ?' घरक लोक कखनोकाल गोँहछि कऽ कहि दैनि – हिनका खाली बाबेक चिन्ता लागल रहैत छनि । हुनको परिचर्या होइते छनि, से विश्वास किएक ने होइ छनि ?'

दाइमनिकेँ जखन खयबालेल कहल जाइत छलनि तँ पहिने पूछैत छलथिन – ओ खयलनि ? ओ खा लेताह तखन हम खायब ।'

एमहर दाइमनि बेसी असक भऽ गेल छलीह आ आइ बेरुक पहर प्राण वियोग भऽ गेलनि ।

साँझ पड़ि गेल छलैक । चारू कात बाढ़िक प्रकोप । कतहु भूमि खाली नहि । दाइमनिक संस्कार कोना हो से सबकेँ चिन्तित कयने छल । मुदा सौंसे गामक लोक जे एकट्ठा छल से सभ एके सूरमे बाजऽ लागल- सब इन्तजाम भऽ जेतै । धूर एखन धरि जागल छैक । वैह पकड़ि कऽ अपन कलम पहुँचि जायब । ओही ठाम संस्कार भऽ जयतनि । लोकक कोनो कमी नहि छैक । ओहि पुण्यात्माक प्रतापेँ कोनो विघ्न-बाधा नहि होयतैक ।'

सुवंश किछु कहऽ चाहलथिन मुदा बिच्चेमे बेटा सब रोकि देलथिन-बाबू ! अहाँ चिन्ता किएक करै छी ? अहाँ निचयन रहू ने ।'

दाइमनिक पार्थिव शरीरकेँ लऽ कऽ विदा होयबा काल सुवंश चलबाक हेतु उठि कऽ ठाढ़ भेलाह तँ बेटा सब रोकि देलथिन- बाबू ! अहाँ कतऽ जायब ? अन्हार राति छैक । बाढ़िक कारणे रस्ता-पयरा ठीक नहि छै । अहाँ गामेपर रहू ।'

– हओ, जिनगी भरि हमरा आस दैत रहलीह तँ अन्तिम बेरमे पाँचटा काठियो तँ दऽ देबनि ।' एते कालक बाद सुवंशबाबाक मुँहसँ बोल बहरयलनि जाहि मे अजस्र व्यथा आ करुणा घोरल छल ।

बेटा कहलथिन – बाबू ! हमहूँ तँ अहीं दुनू गोटेक सन्तान छी ने हमरा हाथेँ जे काठी पड़तनि सेहो तँ अहींँक ने भेल ।'

सुवंशबाबा असोथकित जकाँ चौकीपर बैसि गेलाह । लोकसभ 'रामनाम सत्त हय-सबका यही गत्त है' कहैत दाइमनिकेँ लऽ कऽ विदा भऽ गेल । सुवंशबाबा एकसरे चौकीपर बैसल रहि गेलाह ।

चारमे सड़ीसँ लटकल लालटेन जरि रहल छल । सुवंशबाबा एकटकसँ लालटेमक टेमीकेँ देखि रहल छलाह आ मोने-मोने अपन जीवनक पोथीक पछिला पन्ना सब उनटा रहल छलाह आ प्रत्येक पन्नाक दुनू पीठपर एकेटा नाम भेटि रहल छलनि- दाइमनि-दाइमनि-दाइमनि...।

सहसा एकटा पन्नापर आबि कऽ सुवंशबाबाक चेतना अटकि गेलनि । ओ सहसा उठलाह आ लालटेन लऽ कऽ आङनमे प्रवेश कयलनि । आइ तँ हुनका मोने ने छलनि जे कहिया सबसँ अन्तिम बेर दाइमनिक कोठलीमे गेल छलाह ।

सुवंश दाइमनिक पेटी–बाकस सभ अनामति राखल देखलनि । कोनोमे ताला नहि लागल । दाइमनि कहियो अपन पेटी–बाकसमे ताला नहि लगबैत छलीह । सुवंश दाइमनिकेँ ताला लगयबालेल कहैत छलथिन तँ दाइमनि उत्तर दैत छलथिन जे – ककरासँ नुकयबालेल ताला लगाउ ? हमर तँ सबसँ पैघ सम्पत्ति अहाँ छी, तँ अहाँकेँ कोना हम ताला लगा कऽ बन्न राखू ?' ई कहि कऽ ओ रभसल हँसी हँसी दैत छलथिन । सुवंशकेँ ओहि पेटी–बाकससँ वैह रभसल हँसी बहराइत बूझि पड़लनि ।

वैह हँसी एक कातमे राखल सन्दुकसँ सेहो बहराइत बूझि पड़लनि । वैह हँसी जे आइसँ साठि–सत्तरि वर्ष पहिने दाइमनिक मुहसँ बहरायल छलनि । ओ हँसी सुवंशक कानमे तरंगित होअऽ लगलनि आ दाइमनिक ओ हसित मुखमंडल अन्तश्चक्षुक सोझाँ प्रत्यक्ष भऽ गेलनि । ओ कनेक कालक हेतु अपन आँखि मूनि लेलनि ।

आङनमे जनी–जाति सब घर–आङन गोबरसँ नीपि रहल छलि । किछु गोटे आगि, पानि, लोह, पाथर आ सोहराइ सभ आनि–आनि कऽ तुलसीचौरा लग राखि रहलि छलि । एकाएक सुवंश बूढ़ाकेँ आङन आबि दाइमनिक घरमे जाइत देखि सब आश्चर्यचकित भऽ उठलि । ई एकटा अजगुत बात सबकेँ बूझि पड़लैक । सब एकाँएकी सहटि कऽ दाइमनिक कोठलीक देहरिपर आबि कऽ थहाथही भऽ गेलि । अऽढ़मे ठाढ़ि भऽ बूढ़ा सुवंशकेँ देखऽ लागलि । केओ–केओ भनभनाइत बजबो कयलक – बूझि पड़ैए बूढ़ीक गहनाक पोटरी आ कोसलिया सब ढूढ़ऽ अयलाह अछि । गे माय ! बूढ़ा एहन अनविसवासू किए भऽ गेला ? हुनकर सब अनामतिए रहतनि से विसवास नहि भेलनि ।'

सुवंशबाबा दाइमनिक सन्दुकक पिहना उठा कऽ किछु ढूढ़ऽ लगलाह । लालटेन बामा हाथमे राखि दहिना हाथे सन्दुकमे राखल साड़ी, सुजनी, सतरंजी इत्यादि सब हटा–हटा कऽ कोनो वस्तु तकैत रहलाह । बाहरमे पुतोहु सब, पुतोहुक पुतोहु सब उत्सुकतासँ देखैत रहलि – देखी जे सन्दुकसँ की बहराइत छै ।'

बड़ी कालक बाद सन्दुकक पेटमे एक कोनमे मकुआ छड़ी भेटलनि सुवंशबाबाकेँ । ओ हाथमे छड़ी लऽ कऽ किछु काल धरि देखैत रहलाह । छड़ीकेँ बामा हाथसँ धऽ कऽ दहिना हाथेँ पोछलनि । सन्दुककेँ ओहिना उकटल–पुकटल फुजले छोड़ि कऽ बाम हाथमे लालटेन आ दहिना हाथमे छड़ी लेने दलानपर चल अयलाह ।

सुवंशबाबा लालटेमकेँ सड़ीमे टाङि देलनि आ अन्हार रातिमे छड़ी टेकैत थाहैत–थाहैत श्मशान दिस विदा भऽ गेलाह ।

[लेखन- जुलाइ 2005]



चिन्हार गाम : अनचिन्हार लोक

भैयनि दीदी कतेक बरखक बाद नैहर आयल छलीह, से आब हुनको ठेकान ने छनि । भातिज सभक बेटा लोकनिक उपनयन छलनि, ओहीमे आयल छलीह । भातिज आ भतिजपुतोहु लोकनिक बड़ आग्रह छलनि जे दीदी एहि परोजनमे अवश्य आबथि आ बड़ुआ लोकनिकेँ अपनेसँ आशीर्वाद देथि ।

मुदा भितरिया बात उनटे छल । दीदीकेँ नैहर जयबाक अपने बड़ उत्कट इच्छा भऽ गेल छलनि । नैहरसँ सबसँ छोट भातिज आयल छलथिन उपनयनक नोत-हकार देबा लेल तँ जेना-तेना आने-मानेसँ हुनका जना देने छलथिन जे- मन तँ होइए जे एक बेर अपन जनम-धरती आ अपन कुल-परिवारकेँ देखि अबितहुँ । पाकल आम भेलहुँ । जानि नहि कहिया टगि जायब । अपन गामक लोक-वेद, आङन-घर, टोल-पड़ोस, खेत-पथार, बाध-बोन, गाछी-बिरछी देखना कतेक बरख भऽ गेल ! सब तँ बदलि गेल हेतै । ने हम चिन्हबै, ने लोक हमरा चिन्हत, तैओ एकबेर जाकऽ देखि अयबाक लिलसा लागल अछि ।'

भैयनि दीदीक एहन इच्छा देखिकऽ नैहरक लोकक आग्रह करब आवश्यके छलनि । एहि रूपक आग्रह होयबोक चाहैत छलैक । पाँच भाइक सबसँ छोट, दुलारू बहीन होयबाक कारणे भाइ सब दुलारसँ भैयनियाँ कहऽ लागल छलथिन से सहे-सहे हुनक नामे भऽ गेलनि भैयनि । समयक प्रवाहमे ओ नैहरक लेल भैयनिदाइ आ भैयनि दीदी भऽ गेलीह । से, छओ भाइ-बहिनिमे आब तँ भैयनिए दीदी जीबैत रहि गेल छलीह ।

भैयनि दीदीक वयस नहि किछु तँ सत्तरि-अस्सीक बीचमे अवश्ये होयतनि । भऽ सकैत छैक अस्सीक धकमे होथि । मुदा छथि धरि बेस थेहगरि । डाँड़ एक रत्ती लिबल मुदा तैयो सोझ भऽ कऽ चलैत छलीह । फुर्तिगरि छलीह काज करबामे कनेको आसकति नहि । चलबा-फिरबामे ठेही-थाकनि नहि ।

भैयनि दीदी नैहर अयलीह । काज-परोजनक घर छलैक । ओहो ओहिमे लागि-भीड़ि कऽ उसास करबाक चेष्टा करैत छलीह । मुदा आङनक लोक हुनका कोनो काज करऽ नहि दैनि - लोकक कोनो कमी छै जे ई काज करतीह ।'

दीदीक मोनमे होइत छलनि जे जखन हम कोनो काजे नहि करैत छी तँ गाम घरमे कनेक बुलिए-टहलि अबितहुँ । मुदा केओ संगमे रहितनि तखन ने जैतथि ! एकसर

कोम्हरो जयबामे अनभोआर जकाँ लगैत छलनि । लोक सभ तँ उपनयनक हूलिमालिमे बाझल छल । ककरो पलखति कहाँ छलैक ।

रातिम दिन भैयनि दीदी कहलथिन जे– आजुक दिन बड़ुआ सभक बिलौकी होइत छलै । व्यासजीकेँ नोत पड़ैत छलनि । ओ विध सभ तँ एहू ठाम उठाबे भऽ गेल हेतै ।'

एकटा भतिजपुतोहु कहलथिन–दीदी ! आब ई सभ नहि होइत छैक । बड़ भेल तँ रातिमे गाछीमे कोनो ठाम जा कऽ खीर–पूड़ी राखि अबैत छैक लोक । के जायत नढ़याक बीहड़ि तकै लय ।'

बिलौकीक चर्चा भैयनि दीदी एहि दुआरेँ कयने छलीह जे बिलौकीक विध होइत होयतैक तँ ओही बहन्ने अङने–अङने बूलि औतीह ।

लोक काज–परोजनसँ निचयन भेल तँ भैयनि दीदी भतीजी आ भातिजक बेटी सबकेँ कहलथिन – गय दाइ ! एक दिन चल । हमरा गाम बुला दे । एकसरि हम कतऽ बौक–बताहि जकाँ बौआयब ।'

आङनक जतेक टेल्ह सभ छल, से सब तँ स्कूल गेनिहार । आङनमे काज–परोजन रहने कय दिनसँ स्कूल छूटल छलैक । तैयो कय गोट छौंड़ी तैयार भऽ गेलि– चलू दीदी ! हम सब अहाँक संग चलैत छी ।'

भैयनि दीदी गाम देखऽ चललीह तँ बूझि पड़लनि जे आब ओ गाम–ठाम नहि रहि गेलैक जाहि गाममे हुनकर बाल्य आ किशोरावस्था बीतल छलनि । एकर अनुभव तँ तखने भऽ गेलनि जखन टीसनपर रेलगाड़ीसँ उतरल छलीह । पहिने बैलगाड़ीसँ टीसन जाथि आ टीसनसँ आबथि । नहि भरि दिन तँ आधा दिन अवश्ये लागि जाइक । टमटमोसँ तहिना समय लगैक । मुदा एहिबेर टीसनसँ टेम्पोपर अयलीह तँ बड़ बेसी घंटा–डेढ़ घंटा लागल होयतनि ।

गामो तँ बेस चतरि–पसरि गेलैक । भैयनि दीदी अपना समयमे बीच टोलमे दिक्कम–सिक्कमसँ रहैत जकरा देखने छलथिन, से गामसँ बाहर आबि खेतमे वासक असार–पसार कऽ लेलक । खरिहानमे दलान बनि गेलैक । बथानपर बड़का मकान ठाढ़ भऽ गेलैक । भैयनि दीदीकेँ अपन पुरना गाम भेटि कहाँ रहल छलनि । भैयनि दीदी तकैत छलीह खऽढ़, झट्टा आ पगारसँ छाड़ल घर । टाटसँ घेरल आङन । टाटपर लतरल पोड़ोक लत्ती । चारपद लतरल सजकुमहड़, सजमनि, कदीमाक लत्ती । इनारक लहरापर राखल घैल आ डोले–डोल पानि भरैत पनिभरनी । मुदा से सब आब कहाँ पाबी !

धिया–पुताक संग भैयनि दीदी अपन पुरान संगी आ अपेक्षितक आङन ठेकना–ठेकना कऽ जाथि मुदा बेसी ठाम तँ अनचिन्हारे लोक सब भेटनि । संगक धिया–पुता सब भैयनि दीदीक परिचय दैक तखन ओहि आङनक कनियाँ–मनियाँ, बेटी–पुतोहु सब आबि गोड़ लागनि । ओकरा सबकेँ तखन चीन्हि पबथिन जखन तीन पीढ़ी उपरका लोकक नाम

कहनि । कोनो-कोनो आङनमे पुरान लोकसँ भेट भऽ जाइनि, आह्लादसँ स्वागत करनि तँ मोन हुलाससँ भरि जाइनि । ओकरा संग गप्प करबामे पुरना बात सब मोन पाड़ऽ लागथि । मुदा से अवसर बड़ कमे आङनमे भेटनि ।

भैयनि दीदी ठेकनबैत चल अबैत रहथि । एक ठाम आबि एकटा गल्ली दिस ताकऽ लगलीह । गोँत-गोबरसँ भरल गल्ली नहि, आब ओहिमे खरंजा भऽ गेल छलैक । ओ तकैत छलीह पुरना टटघर मुदा ओतऽ आब छलैक छोट-छोट पक्का मकान । दीदी ओहि ठाम ठमकि कऽ फुसफुसाइत बजलीह-कुभेलियाक आङन तँ एही गल्लीमे, मुँहेपर छलैक ।'

संगक धिया-पुता सब अकचकाइत पुछलकनि- कुभेलिया के छलै, दीदी ?

-तोँ सब की जानऽ गेलीह ?' भैयनि दीदी बजलीह- जहिया हम तोहर सभक बतारी रही, तहिया ओ हमर एखनुक बहिक्रमक रहय ।'

तखने सामनेसँ एकटा बूढ़, चस्मा पहिरने, हाथमे ठेङा लेने थाहैत चल अबैत रहथि । भैयनि दीदी अपना संगक एकटा नेनाकेँ पुछलथिन- ओ के चल अबैत छथुन ?'

– ओ ! ओ तँ नोखेलाल बाबा छथिन ।' एकटा नेना बाजल ।

भैयनि दाइ आश्चर्यसँ हुनका दिस तकैत रहलीह । सोचऽ लगलीह- नोखबा तँ हमरासँ छोटे छल, मुदा केहन झुनकुट बूढ़ भऽ गेल ! लगमे अयलापर भैयनि दीदी टोकि देलथिन- के, नोखे छह हओ !

– अहाँ के ? चिन्हलहुँ नहि !' नोखेलाल रुकि कऽ चकित होइत बजलाह ।

एकटा बचिया कहलकनि -बाबा ! ई बाबूजीक पिउँसि छथिन, भैयनि दीदी । उपनयनमे आयल छलथिन ।

-भैयनिदाइ छी अय !' आश्चर्य मिश्रित उल्लाससँ नोखे बजलाह- एह कत्ता बरखपर भेट भेल अछि । आँखिमे मोतियाबिन अछि तेँ लोककेँ चीन्हैमे भटकि जाइ छी । कहू एक जुगक बाद कोना कऽ नैहरक सुधि आयल ?'

भैयनि दाइ पुछलथिन - धिया-पुता सब निकेँ छह ने ?'

-हँ, सब अपन-अपन दुखड़ा-धन्धामे लागल निमहल जा रहल अछि ।' नोखेलाल बजलाह- की, सौंसे गाम घूमि-फीरि लेलहुँ ?'

-की घूमब ? ने हम ककरो चिन्है छिऐ, ने लोक हमरा चिन्हैत अछि ।' कनेक रुकैत भैयनि दीदी पुछलथिन- अँय हओ नोखे ! कुभेलिया बुढ़ियाक घर तँ एही ठाम ने छलै ? कतहु पाछाँ उपटि कऽ चल तँ ने गेलै ?'

– कतऽ जेतै, यैह घर छिऐ । बाल-बच्चा सब अपनामे बाँट-बखरा कऽ

अपन-अपन घर बना लेलकै । सब सुखसँ छैक ।' ई कहैत नोखेलाल पूछि बैसलथिन- अय भैयनि बहीन ! कुभेलियाक झगड़ा आ बिखिन-बिखिनक गारि फेर देखबा-सुनबाक मोन होइए ? बिसरलियैए नहि ?'

भैयनि ठीके कुभेलियाकेँ बिसरल नहि छलीह । एतेक बरख बीति गेलाक बादो जेना ओहिना मोन छनि । नैहर किंवा सासुरमे ओकरा कोन तरहक कुभेला भेलैक जाहि कारणे ओकर नामे कुभेलिया पड़ि गेलैक से लोककेँ जानल नहि छलैक । लोक तँ यैह देखैत रहल जे ओ उस्सर खेत आ परतीमेसँ मोटाक मोटा ऊस हँसोथि कऽ अनैत छलि । जजिमान-पोसिन्दा सभक ओहि ठामसँ मोटाक मोटा मैल कपड़ा-लत्ता, नूआ-फट्टा अनैत छलि । ओकरा सभकेँ पानिमे भिजा ऊसमे औंसैत छलि । भट्ठीपर चढ़ा कऽ उसनैत छलि। पोखरिक घाटपर लऽ जा कऽ पाटपर पटकि-पटकि कऽ खीचैत छलि । सुखा-सजा कऽ घरे-घर पहुँचा अबैत छलि ।

सदिखन बिन बातहु चरचराइत रहब ओकर बानिए छलैक । खास कऽ सोइरीक कपड़ा आ छुतकाक कपड़ाक हिसाब बेरमे, कन्यादानमे सोहाग देबा बेरमे आ भोज-भातमे पारस लेबा बेरमे कुभेलियाक आपठ खसायब नामी भऽ गेल छल । भैयनिक बियाह बेरमे सेहो कुभेलिया अड़ि गेल छलि- बेटी मायकेँ जे साड़ी आयल छै सैह साड़ी हम लेब, तखने हम सोहाग देबै ।'

आइ-माइ सब कंहलथिन जे- बेटी मायक लेल जे साड़ी आयल छै से तोरा कोना पड़तौ ?'

कुभेलिया सभक मुँह ऐँठैत बाजलि- से किए अय ? भैयनिक माय भेली बेटीक माय आ हम बेटीक माय नहि ? हम विरान ?'

भैयनि अपन किशोरावस्थामे बदमास तँ नहि छलीह मुदा छलीह उकठाहि । किछु ने किछु उकठ करितहि रहैत छलीह । कुभेलिया जखन हुनका आङन अबैत छलनि तँ ओ कोनो ने कोनो उकठाह बात कहि दैत छलथिन कि कुभेलिया चरचरयनाइ सुरू कऽ दैत छलि आ चरचराइते आङनसँ चल जाइत छलि । भैयनिकेँ कुभेलियाक चरचर-बड़बड़ करब नीक लगैत छलनि ।

गाम-घरमे बाला-किशोरी सब मनोरंजनलय इजोरिया रातिमे जटा-जटिन खेलाइते रहैत छलि । मुदा रौदी भेलापर वर्षाक आवाहन लय, इन्द्र भगवानकेँ गोहराबऽलेल विशेष विधि-विधानसँ जटा-जटिन खेलायल जाइत छल । ओहिबेर अट्ट रौदी भऽ गेल रहैक । पानि लय हाहाकार मचल रहैक । गामक लोकसभ लाखक संख्यामे महादेव पूजा करौने छल । अष्टयाम आ नवाह करौने छल । ओहनमे भैयनि सेहो अपन सब सखी-बहिनपाकेँ सङोर कऽ जटा-जटिनक आयोजन कयने रहथि ।

उक्खरि-समाठ आनल गेल । बेङ कुटबाक विध भेल । ओही संग उच्च स्वरमे गीत आरम्भ भेल-

हाली हूली बरिसू इन्नर देवता
पानी बिनु पड़ै छै अकाले हो राम
धोबियाक अङनामे छापर-छुपर पनियाँ
ताहीमे बाभनक टेल्ह नहाइ छै हो राम ।

भैयनि नोखेकेँ कहने रहथिन, से ओ ककरो बाड़ीमे ओंघरायल छुतकाही तौला आनि कऽ देने रहनि । ओहिमे बेङ सहित थाल-कादो, सड़ल गोबर-पानि आ आओर की कहाँ असर्ध पदार्थ सब घोरि देल गेलैक । ओ तौला ककरा आङनमे फेकल जाय ताहि लय घमर्थनि होअऽ लागल ।

भैयनि कहलथिन – तोहूँ सब कतेक ततमत कऽ रहल छेँ । ओहि गल्लीमे कुभेलिया आङनमे फेकि दहिन । तोरा सबकेँ डर होइत छौ तँ ला, हमही फेकि अबैत छी ।"

भैयनि तौला उठा कऽ आगाँ बढ़ऽ लगलीह तँ दू-तीन गोट संगी और संग भऽ गेलनि । सब गोटे पैर बारने सहेसहे कुभेलिया आङनक दुरुक्खा लग गेलि । आङनमे सब निसभेर सूतल छल । राति एकदम निसबद्ध छलैक । भैयनि खूब समधानि कऽ जुमा कऽ तौलाकेँ कुभेलियाक बीच आङनमे फेकि देलथिन । एके बेर फचाक् दऽ उठलैक । घोर-मट्ठा भेल थाल-गोबर चारू कात छिड़िया गेलैक । छिटका उड़ि-उड़ि कऽ चारू कात पसरि गेलैक । कुभेलिया चेहा कऽ गारि पढ़ितहि उठलि । मुदा तावत भैयनि लत्तेपत्ते दड़बड़ मारि कऽ पड़यलीह । पाछाँ लागल हुनक संगी सभ सेहो जी-जान लऽ कऽ पड़ाइलि ।

ओमहर कुभेलियाक चरखी चलऽ लगलैक । ओ चिकरि-चिकरि, चिचिया-चिचिया कऽ गरियाबऽ लागलि छलि । धोँछी, निरासी, समङाडाही, मुँहझौंसी, रोगढुकौनी, बज्जरखसौनी सन गारि हल्लुक बूझि पड़लैक तँ निरघिन-अश्लील गारि सब पढ़ऽ लागलि । ओहूसँ सन्तोष नहि भेलैक तँ मैखौकी, बपखौकी, भैयाडाही, सैंयाडाही सन अशुभ गारि पढ़ैत रटऽ लागलि- राँड़ .... राँड़......... राँड़.......... !!!

ओमहर भैयनि अपन संगी सभक संग जटा-जटिनक उतराचौरीक गीत खूब जोर-जोरसँ गाबऽ लगलीह -

चलू रे बंका, चलू रे बंका जटनी बियाहे,
आनू गऽ सिनुराक साजे ।
कहाँ रे पेबइ कोना रे पेबइ सिनुराक साजे,
मोर जट्टा रहता कुमारे ।

एहि अनवरत चलनिहार गीत-लहरीक स्वरमे कुभेलियाक गारिक झौहरि डूबि गेलैक । राति भरि कुभेलियाक गारि अविराम चलैत रहलैक आ तहिना अविराम जटाजटिनक गीत-गुंजार वातावरणकेँ भरने रहल । परन्तु दोसर दिन कोनो छौंड़ीकेँ बाहर होयबाक साधंस नहि भेलैक । सभ कुभेलियाक डरेँ पतनुकान लेने रहलि ।

भैयनिकेँ कुभेलियाक पढ़ल गारि 'राँड़' जेना बेधि देलकनि । मोनमे भेलनि जेना ओ बड़ पैघ अपराध कऽ बैसल होथि । ओ बेसी काल संचमंच रहऽ लगलीह । खास कऽ जखन कुभेलिया आङन अबैत छलनि तँ भैयनि सहटि कऽ कोनो दोग धऽ लेल करथि । आब कुभेलियाकेँ उकठाह बात नहि कहल करथिन ।

कुभेलियाकेँ सेहो ई बात ठेहकलैक जे भैयनि दाइ आब नहि टोकैत छथि । ततबे नहि, हुनक संगी-सहेली सभ सेहो जेना किछु छिटकलि रहैत छथि । कुभेलियाकेँ मने-मने जेना किछु गरानि जकाँ होअऽ लागल छलैक ।

भैयनिक दुरागमनक दिन मनाओल छलनि । अङने-अङनेसँ खायक आबि रहल छलनि । एक दिन कुभेलिया भैयनिक आङन आयलि । भैयनिक मायकेँ कहलकनि जे- गिरहतनी ! काल्हि खन भैयनि दाइक खायक हमरा दिससँ पड़तनि ।'

दोसर दिन, कुभेलिया भैयनिक एकटा पितियाइनिकेँ खायक करबाक सभ सरंजाम आनि कऽ देलकनि रान्हि-बाँटि देबाक लेल । पितियाइन भानस-भात कऽ थारीमे सभ किछु साँठि देलथिन । कुभेलिया हुनके आङनक खवासिनीकेँ कहलकनि भैयनिक आङनमे खायक दऽ अयबाक लेल । खवासिनीक पाछाँ-पाछाँ कुभेलिया सेहो गेलि ।

आङनमे पहुँचलापर कुभेलिया भैयनिक मायकेँ जा कऽ कहलकनि - गिरहतनी ! भैयनि दाइ हमरासँ रूसलि छथिन । पहिने आङन अबैत छलियनि तँ हमरा कतेक कचकचबैत छलीह ? आब तँ टोकबो ने करैत छथिन । हुनका कहियौन जे हमरा सोझाँमे हमरा खायकमेसँ कनेकोटा तरुआ टोङि कऽ खा लेथु । तखन हमरा सन्तोख भऽ जायत ।'

भैयनिक माय कहलथिन - उतरबरिया घरमे बैसल अछि । अपने जा कऽ कहियौ गऽ ने ।'

कुभेलिया भैयनि लग चल गेलि । ओ एकसरिए ठेहुनपर मूड़ी राखि कऽ बैसलि छलीह । कुभेलिया हुनका लगमे जा कऽ बैसि गेलि आ हुनकर मुँह ऊपर उठा कऽ बाजलि- दाइ ! हमरापर बड़ तमसायलि छी ? हम तँ ओहि दिन ओतेक गारि एहि दुआरे पढ़लिऐक जे गारिए पढ़ने जँ इन्नर भगवान परसन्न होइ छथिन तँ खूब पढ़ि दिऐक गारि । ओहिमे हमरा मुँहसँ अलच्छ-अलच्छ गारि बहरा गेल । कहू तँ, जकरा हम अपन केसक लट गाड़ि कऽ सोहाग देलिऐक तकरा अलच्छ बात कोना कहि सकै छिऐ ? एहि

बुढ़ियाक मुँहसँ ई बात बहरा गेल तकरा छेमि दियऽ । जहिना अपन माय छथि तहिना हमरो माइये बूझि कऽ माफ कऽ दियऽ ।'

भैयनि टुकुर-टुकुर कुभेलिया दिस तकैत रहलीह आ ओकर बात बकर-बकर सुनैत रहलीह । तेहन सन जेना माटिक मूरुत होथि, कि मटसुन्न होथि ।

कुभेलिया गह्वरित होइत बाजलि – गय बतही ! नहि होउ तँ दसटा बाते कहि दे, ने तँ दू ठुनका मारिए दे ने ! ताहूसँ हमरा सन्तोख भऽ जायत । आब तोरा कहिया आ कतऽ देखबौ !'

एकाएक जेना कोनो बान्ह टूटि गेल । भैयनि भरि पाँज कऽ कुभेलियाकेँ पकड़ि लेलनि आ ओकरा कान्हपर अपन माथ राखि बुमकार छोड़ि कऽ कानऽ लागल छलीह । कुभेलिया सेहो कोँढ़फट्टू भऽ भैयनिएक स्वरमे स्वर मिला कऽ कानऽ लागलि छलि ।

ओहि गल्ली लग बड़ी काल धरि भैयनि दीदीकेँ ठकमूड़ी लागल ठाढ़ि देखि धिया-पुता सभ हुनकर हाथ पकड़ि कऽ झमाड़ैत कहलकनि – दीदी ! एहि ठाम ठाढ़े रहब कि चलब ?' भैयनि दीदी अकस्मात् चौंकि कऽ अतीतसँ वर्त्तमानमे चल अयलीह । बच्चा पुछलकनि – दीदी आब कतऽ चलबै ?'

भैयनि दीदी अपन दुनू आँखि पोछैत कहलथिन जे – आब कतऽ जायब ? अङने चलै चलह ।'

[लेखन- 17 दिसम्बर 2004, प्रकाशन- जखन तखन, अंक- 1, मार्च 2005 मे 'टीस' शीर्षकसँ]



ढहैत पुरान घर

साओन मासक पूर्णिमा। झूलन उत्सवक आखरी दिन। आइ भरि राति किरतन होइत रहत। भरि गामक स्त्री-पुरुष, युवक-युवती, बच्चा-बूढ़सँ भरल मठ। कतहु तिल धरबाक जगह नहि। किरतन चलि रहल छल-

झूला लगे कदम के डारी झूले कृष्ण मुरारी ना।
राधा झूले कृष्ण झुलावे झूले बेरा-बेरी ना॥

महनजी, मने महन्थजी, मने महानन्दझा अयलाह-मुदा किरतनियाँ युवक समुदायमेसँ केओ उठि कऽ ठाढ़ नहि भेल। बीचमे जगह बनाय बैसबाक आग्रह नहि कयलकनि। केओ अपन हाथक झालि हुनका हाथमे दऽ कऽ किरतन करबाक आग्रह नहि कयलकनि।

भगवानक झूलाक ताग घीचैत पुजेगरी सुरफुराइत कहलथिन- आउ, आउ महनजी।'

ओ अपने कनेक घुसुकि गेलाह आ महनजी भगवानकेँ भक्ति भावसँ प्रणाम कऽ पायामे ओठङि कऽ बैसि गेलाह। किरतनमे कोनो व्यवधान नहि भेल। ओ अपना गतिसँ चलैत रहल। मुदा किछु वर्ष पहिने धरि एना नहि होइत छल।

जहिना एहि गामक ई मठ बड़ पुरान आ इलाकामे प्रतिष्ठित। तहिना पुरान परम्परा अछि एहि गामक किरतनक। चारू कातक दस गामक लोक एहि मठक उत्सव सब देखबालेल अबैत अछि। कहियो काल आन-आन गामक किरतन-मंडली सेहो आबि किरतन कयल करैत छल। मठक दिससँ सभकेँ सत्कार ओ पुष्कल प्रसाद प्रदान कयल जाइत छल।

दू-तीन सय वर्ष पूर्व गामक एकटा मेधावी पंडित नव्य न्याय पढ़बाक लेल गेलाह नवद्वीप। ओहि ठाम रहैत-रहैत भऽ गेलाह वैष्णव। गौड़ सम्प्रदायमे दीक्षित भऽ हरिचरणदास बनि गेलाह। हरिचरणदास घुरि कऽ गाम अयलाह तँ एकटा कुटी बनाय, ओहिमे राधाकृष्णक युगलमूर्त्ति स्थापित कयलनि। ओ श्रीमद्‌भागवतक पाठ ओ प्रवचन कयले करथि संगहि रास पंचाध्यायीक गायन कालमे अत्यन्त विभोर भऽ जाथि। लोक भक्ति-भावसँ हुनक प्रवचन-गायन सुनबाकलेल आबऽ लागल। हरिचरणदास दीर्घकाल धरि हरि-भक्तिक उपदेश दैत समाधि लेलनि। मुदा हुनका द्वारा स्थापित मठ ओ ओकर पूजा-पाठक परम्परा चलैत रहल।

कालक्रमे राधाकृष्णक मन्दिर बनि गेल । ओही परिसरमे पूव भाग रामजानकीक प्राण-प्रतिष्ठा भेल । दक्षिण दिस दुर्गाक मन्दिर बनि गेल आ उतरबारी भागमे महादेव स्थापित कयल गेलाह ।

हरिचरणदासक शिष्य परम्परामे विशिष्ट व्यक्तिकेँ एहि मठक महन्थी सेहो देल जाइत रहलनि । जे महन्थ होथि तनिकालेल श्रीमद्‌भागवतक प्रवचन-गायन जेना अनिवार्य योग्यता बनि गेलनि । ओहि परम्परामे एकटा महन्थ भेलाह राधाचरणदास । ओ गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदायक भजन-कीर्त्तनक परिपाटी चलौलनि । झालि, ढोल, मानरि, करतालक संग गीतगोविन्द, विद्यापति, चण्डीदास, ज्ञानदास, बलरामदास इत्यादिक पद सभक सामूहिक गान होअऽ लागल ।

काल बितैत गेल । लोक श्रद्धापूर्वक एहि भजन-कीर्त्तनमे अबैत छल । मुदा कीर्त्तनमे गाओल जायबला पद सभक अर्थबोधमे कठिनता होअऽ लगलैक । ओही क्रममे सूर, तुलसी, मीरा आ कबीरक भजनक प्रवेश मठक कीर्त्तनमे होअऽ लागल । एही परम्परामे मठक महन्थ भेलाह गोकुलदास जे एहि भजन सभक गायन अत्यन्त लय पूर्वक कयल करथि । गोकुलदास एहिमे साहेबराम, लक्ष्मीनाथगोसाञि, मोदलता, स्नेहलताक मधुर पद सभ सेहो जोड़ैत गेलाह । कीर्त्तन-मंडली हुनक अनुसरण कयल करय ।

गोकुलदास भऽ गेलाह बूढ़ । स्वर बेसूरा भऽ कऽ थरथराय लगलनि । गबैत-गबैत दम सेहो फूलि जाइन । एक बेर कीर्त्तन करैत-करैत बीचहिमे लय टूटि गेलनि । लोक स्तब्ध रहि गेल । मुदा तखनहि भजन मंडलीमे सँ एक किशोर एकटा गोआलरी टाँसीवला स्वरमे गाबऽ लागल -

गोकुला नगरिया के चिकनी डगरिया, सम्हारि चलू ना ।
राधे, माथे गगरिया सम्हारि चलू ना ।
आहे, छिलकय गगरिया, सम्हारि चलू ना ।

फेर दोसर गीत उठौलक -

छोटे छोटे गैया मोरी छोटे छोटे ग्वाल-बाल ।
छोटे सन हमरो मदन गोपाल लाल ।।

फेर तेसर गीत -

नटवर नागर नन्दा । भजो रे मन गोविन्दा ।।

नवतुरिया सब उत्साहसँ झूमि उठल । ढोलकियाकेँ एकटा नव लय, नव ताल भेटलैक । ओ मस्तीमे ढोलकपर थाप दऽ कऽ झमकाबऽ लागल । लोक थपरी बजा-बजा ताल दैत झूमऽ लागल । किरतनक चलती लय बेरमे केओ 'हरिबोल, हरिबोल'क नाद

करऽ लागल । भक्त श्रोताकेँ एकटा नव स्वाद भेटि रहल छलैक । किशोर अनवरत एकक बाद दोसर गीत उठबैत रहल आ ताही क्रममे भोर भऽ गेल । गोकुलदास गीत समाप्त भेलापर एकबेर जोरसँ जयकार कयलनि -

'बोल दे वृन्दावन विहारीलाल की जय' ।

कीर्त्तन मंडली शान्त भऽ गेल । श्रोतामेसँ कय गोटे बाजल-अन्तमे एकटा भोलाबाबाक सेहो होइक ।'

किशोर एकटा उदासी उठौलक -

आ आरे, शिवघर चोरी भेलनि सब रे सम्पतिया
डमरू सहित लेने जाय ।

उदासी समाप्त भेलापर लोक सब उठऽ लागल । गोकुलदास भाव-विह्वल भऽ उठलाह आ किशोरक दुनू गाल अपन दुनू तरहत्थीसँ हँसोथैत कहलथिन- महानन्द ! तोँ तँ हीरा छेँ हीरा ! आइसँ एहि मठक कीर्त्तन-मंडलीक तोँही महन्थ भेलेँ ।

ओही दिनसँ किशोर महानन्दकेँ लोक महन्थजी कहऽ लागल जे मुख-सुख उच्चारणक कारणे महनजी भऽ गेल । महानन्दजी महनजी भऽ गेलाह ।'

गोकुलदास नहि रहलाह । मठक जे नव महन्थ भेलाह तनिका प्रवचन-कीर्त्तनसँ मुक्ति भेटि गेलनि । महनजी भऽ गेलाह गामक सुप्रतिष्ठित किरतनियाँ ।

अवश्ये वयस-वृद्धिक संगहि हुनक कीर्त्तन-शैलीमे नवीनता अबैत गेलनि । ओ क्रमशः कथा-वाचन आ ओहिमे विभिन्न प्रसंगक गीतक संगहि एकल अभिनयक समावेश सेहो करऽ लागल छला । जन्माष्टमीमे कृष्णक जन्म ओ बाललीलाक कथा, विवाह-पंचमीमे सीता-रामक विवाहक कथा, शिवरातिमे शिव-पार्वतीक विवाहक कथा आ रामनवमी दिन रामजन्मक कथा कहैत छलाह । कथाक क्रममे भाव-भंगिमाक प्रदर्शनक संगहि प्रसंग-प्रसंगपर भाँति भाँतिक पद सभक गायन करैत छलाह ।

संग-संग गौनिहार, ढोलकिया आ झलैताकेँ अख्यासल भऽ गेल छलैक जे महनजी कखन कोन संवाद बजताह आ ओकर की उत्तर देबाक छैक । महनजीक लय कखन स्थायी रहत, कखन अन्तरा रहत, कखन चलती हेतैक आ कखन समपर आओत ।

लोककेँ बड़ नीक लगैक ।

किरतन बेसी काल रातिमे भेल करैक । लोक सब मठपर आबि पहिनहिसँ जगह छेकि कऽ बैसय । किरतनियाँ सब आबय । नव तूरक उत्साही किरतनियाँ सब सुरूमे किछु-किछु गाबय । तखन गामपरसँ खा-पीबि कऽ महनजी आबथि । हुनका अबितहिँ

लोक सहटि कऽ बीचमे स्थान खाली कऽ देअय । हुनक दहिन भागमे ढोलकिया, बाम भागमे करतालवला आ तकरा बाद अर्द्धवृत बना कऽ झलैता सब बैसय । महनजी जे पद गाबथि तकरा ओही लयमे झलैता आ किरतनियाँ सब दोहाराबय ।

जखन महनजी वर्णन अथवा संवाद बाजथि तँ सब चुप रहय खाली एकटा मुँहलगुआ किरतनियाँ उत्तर देअय – 'हे सखी !' तँ 'की सखी !' एहि तरहेँ भरि-भरि रात प्रसंग-कीर्त्तन चलैत रहैत छल ।

एमहर आबि कऽ किरतनियाँ सबमे मानसिक बितय देखल जाय लागल छल । प्रौढ़ किरतनियाँ सब तँ उत्साह सँ महनजीक अनुसरण करय मुदा नव तूरक छौँड़ा सब जेना विमन रहल करय । ओ सब महनजीक भजन-गायनमे उपरे मोनसँ संग देल करय ने तँ कनेक पाछाँ हटि अपनामे गप-सप कयल करय ।

काल्हि महनजी पहिनहि जकाँ अयलाह । पहिनहि जकाँ सब किछु व्यवस्थित भऽ गेल । महनजी आँखि मूनि गुरु वन्दना आरम्भ कयलनि –

'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः'

फेर गणेश वन्दना आरम्भ कयलनि –

'गाइए गजवदन मनोहर गणपति गिरिजा नन्दऽनऽ'

गणेश वन्दनाक चलती-गानक झंकार समाप्त भेल कि महनजीक मुँहसँ झपटैत जकाँ नवतुरियामेसँ एकटा सिनेमाक एकटा गीत 'डफलीवाले डफली बजा' केर तर्जपर गीत उठौलक- मुरली वाले मुरली बजा..........

नवतुरिया सब उत्साहसँ ओकरा दोहराबऽ लागल । महनजी चकित, चुपचाप देखऽ लगलाह । गीत समाप्त भेलापर प्रौढ़ लोक सब महनजीकेँ आग्रह कयलकनि – ई छौंड़ा सब उत्साहमे गाबि देलक । आब अहाँ आरम्भ करू । महनजी आरम्भ कयलनि –

निसि दिन बरसत नयन हमारे ।
सदा रहत पावस ऋतु मो पर
जबसे स्याम सिधारे ।।

एकटा करुणाक वातावरण पसरि गेल । महनजी दोसर पद उठौलनि-

'माधव हम परिनाम निरासा'

ई पद समाप्त होइत-होइत नवतुरिया सब सिनेमा गीतक तर्जपर दोसर गीत गाबऽ लागल । तकर बाद लोक महनजीकेँ कतबो आग्रह कयलकनि तथापि ओ नहि गओलनि । कहलथिन – नवतूरक लोककेँ उत्साह छैक, गाबऽ दिऔ । हम तँ आब बूढ़ो भेलहुँ ।'

नवतुरिआ सब सिनेमा–गीतक धुनिपर एकक बाद एक गीत सभ गबैत रहल । किरतन समाप्त भेलापर लोक महनजीकेँ आग्रह कयलकनि – महनजी भोलाबाबाकेँ एकटा सुना दिऔन ।'

महनजी अन्यमनस्क जकाँ गाबऽ लगलाह –

सबकेँ जे दौड़ी दौड़ी, पुछथि विकल गौरी
कि आहो रामा, एहि पथे देखल दिगम्बर रे की ।

उदास मनसँ गाओल गेल ई लगनी गीत श्रोताक मनकेँ बेधि देलकैक । सभक आँखि नोरा गेलैक ।

आइ महनजी उन्मन–उदास बैसल छलाह पायासँ ओठङल । नवतुरियामे जेना आइ कोनो विजयक उल्लास छलै । ओ सब लगातार, एकक बाद दोसर सिनेमाक लोकप्रिय गीत सभक तर्जपर गढ़ल गेल राम, कृष्ण, भगवती, महादेव इत्यादिक झमकौआ गीत सब मस्त भऽ कऽ गबैत रहल । ओहि मस्तीक पाछाँ एकटा तीव्र गमगमीक आभास भऽ रहल छल जे महनजीक नाकमे पैसि कऽ विचित्र प्रकारक उत्कटता उत्पन्न कऽ रहल छलनि । महनजीकेँ ओ गमगमी सहाज नहि भऽ रहल छलनि ।

पुरना सिनेमाक तर्जक गीतक बाद नवतुरिया किरतनियाँ सब नवका–नवका सुपरहिट सिनेमाक गीतक तर्जपर गीत सब गायब आरम्भ कयलक । ढोलकक ढम–ढम–ढम आ झालिक झम–झम–झमक तालपर पाछामे बैसल छौंड़ा सभ ठाढ़ भऽ कऽ डिस्को आ ब्रेक डान्स करऽ लागल ।

महनजीकेँ भेलनि जेना ओ कोनो अनभोआर स्थानमे आबि गेल होथि । सभ किछु अनचिन्हार जकाँ लागऽ लगलनि । ओ चुपचाप उठि कऽ ठाढ़ भेलाह । झूलापर झूलैत ठाकुरजीकेँ प्रणाम कयलनि आ मठसँ बाहर चल अयलाह । चन्द्रमा मध्य आकाशसँ पच्छिम दिस झुकि गेल छल । ओकरा मेघक एकटा खण्ड छपने जा रहल छल । महनजी अपन घर दिस डेग बढ़ौने चल जा रहल छलाह । बूझि पड़ैत छलनि जेना पुरना घर सभ ढहि–ढहि कऽ खसि रहल अछि ।

[प्रकाशन– रचना, जुलाइ-सितम्बर 2002]



ओकर सेहन्ता

आइ पब्लिक स्कूलक वातावरण अत्यन्त गम्भीर छल । प्रिन्सिपल आ टीचर, किरानी आ चपरासी, सभक चेहरापर कोनो भावी विपत्तिक आशंका सहजहि झलकि रहल छलैक । छोटो-छोट विद्यार्थी सब गुरुजी सभक गम्भीरता देखि स्तब्ध आ संच-मंच छल । सब अपन अपन सीटपर पोथी-कापी पसारने, हाथमे कलम लेने कलमच बैसल छल ।

वातावरणक गम्भीरताक कारण ई छलैक जे शहरक नामी प्रभावशाली जे.पी. सीटी बॉस स्कूलमे आबि रहल छलैक । जे.पी.बॉस स्कूलक, विकासक नामपर समय-समयपर जे हजारक-हजार टाका मुक्त हस्त भऽ कऽ देल करैत रहलैक, तकरे फल छैक जे आइ ई पब्लिक स्कूल भी. आइ. पी. सभक स्कूल बनि गेलैक अछि । एही स्कूलमे जे.पी. बॉसक अपन धिया-पुता सब पढ़ैत छलैक । ओ सब जहिया कहियो स्कूलमे कोनो साधनक कमीक चर्चा अपन बाप लग करैत छलैक, तकर दोसरे दिन जे. पी. बॉस स्कूलमे जा कऽ ओकर इन्तजाम कऽ दैत छलैक ।

एक बेर अप्रैल-मइ मासमे छोटका बेटा टिंकू बाप लग बाजल छल- पप्पा ! आइ स्कूलमे पानि पिबै कालमे झगड़ा भऽ गेलै । दुइए-तीनटा गिलास छै, से टिफिन बेरमे पानि पिबै लय छीना-झपटी होअऽ लगै छै ।'

बॉस दोसरे दिन स्कूलमे आबि प्रिन्सिपलकेँ झाड़ऽ लगलैक - क्या प्रिन्सिपल साहेब ! स्कूल चलाते हैं । एतना विद्यार्थीमे दू-तीनटा गिलास रखे हुए हैं । जाउ, हमरा दिससँ दू दर्जन स्टीलक गिलास मङबा लियऽ आ बिल हमरा पठबा दिअऽ ।'

टीचर सब तँ दंग रहि गेल छल देखि कऽ । ओ सब कनफुसकी करऽ लागल छल- देखिऔ, एकटा इहो रंगदार छल अपना समयमे ! आइ एकर मोकबिलामे शहरक के ठाढ़ भऽ सकैए ?'

बातो सत्ते छलैक । जे. पी. बॉसकेँ तँ आङनमे रोपल सिङरहारक फूल जकाँ रुपैया झहरैत छलैक । सुख-सुविधा ओ विलासक यावन्तो साधन, जे आधुनिक जीवनमे भऽ सकैत छलैक, से ओकरा लग पत्रहीन अमलतासक गाछमे जड़िसँ फुनगी धरि फुलायल भकरार भेल फूल जकाँ लुधकल छलैक - बस, ट्रक, ट्रैक्टर, कार, बन्दूक, पेस्तौल, फोन, मोबाइल, फ्रीज, टी.वी., वी.सी.आर., वी.सी.पी............ आ की की नहि !

जे.पी.बॉस सीना तानि कऽ बजबो करैत छल जे – कोन एहन वस्तु छै जे रुपैयासँ होइत हेतै तँ हमरा नहि हैत !'

ई बाजबो वाजिबे छलैक । इलाकाक जतेक सरकारी काज होइत छलैक- सड़क, पूल, नाला, नहरि, छहर, मकान आ मकान–मरम्मति, तकर सभक ठिकेदारी जे.पी.बॉसकेँ छोड़ि अनका ककरहु कहाँ भेटैत छलैक । आब तँ भाँति–भाँतिक कारबारक विस्तार भऽ गेल छलैक । धनबल आ जनबलसँ कोनो काज बॉसक लेल असम्भव नहि ।

कहबी छैक, धन धराबय तीन नाम । मुदा, जे.पी. केँ छओ गोट नामक क्रमबद्ध इतिहास बनि गेल छलैक – जैया, जय, बॉस, सीटी बॉस, जयप्रताप आ ओकर संक्षिप्त जे.पी. । आब जैया आ जय कहबाक साहस ककरो नहि होइत छैक । लोक एहि नामकेँ बिसरि गेल अछि । हँ, पुरना गैंगक दोस्त–महीम सब बॉस आ सीटी बॉस कहैत छैक । नहि तँ आब जयप्रतापजी आ जे.पी.बॉसे नामसँ प्रख्यात अछि ।

स्कूलमे सीटीबॉसक नाम जयप्रतापे लिखाओल गेल छलैक मुदा एहि नामसँ कहियो केओ सोर नहि करैत छलैक । अवश्ये माय–बाप कहियो काल 'जयप्रताप' वा 'जय' सम्बोधन करैत छलैक मुदा लोक तँ 'जैया' वा 'जयबा' सैह कहैत छलैक । से जैयाकेँ अपन मूल नाम अपने अनचिन्हार सन भऽ गेलैक । धोखासँ कहियो केओ 'जय' वा 'जयप्रताप' कहबो करैक तँ जैयाकेँ होइक जे ककरो अनका सोर कयल जाइत छैक ।

जैयाक बाप नेबालाल गरीब लोक । दस–पाँच कट्ठा जमीन आ खुट्टापर महीस । नेबालाल गृहस्थसँ अधिक महिसवार छल । पाड़ी–तऽरे महीस आ एकटा पोसु छलैक । ओकरे पोसि कऽ अपन परिवार चलबैत छल । ओकरा बड़ सेहन्ता छलैक जे हमर बेटा पढ़य–लिखय । तेँ स्कूलमे जाकऽ नामो लिखा देलकैक । जेना–तेना ठेलैत–ठेलैत हाइस्कूल धरि पहुँचा देलकैक । मुदा जैयाकेँ स्कूलसँ कोनो रुचि नहि रहैक । ओ स्कूलक घेरामे बन्द रहबाक बदलामे ककरो–ककरो बाड़ीक लताम, नेबो, अनरनेबा तोड़बामे अभिरुचि रखैत छलय । ककरो गाछीमे जा कऽ आम तोड़ि लेबामे मजा अबैत छलैक । ककरो कुसियारक खेतमे पैसि चोरा कऽ कुसियारक छड़क्का चिबयबामे रस भेटैत छलैक । आ एहि सभक कारणे नेबालालकेँ उपराग भेटितो रहैत छलैक । जैयाकेँ एहि अपराध सभकलेल बहुतो बेर दू–चारि थापर वा दू–चारि सटका लगबो करैत छलैक, तँ जैयाक लेल धन सन । एहन–एहन मारिकेँ ओ अङेजि लेने छल । मारि लगलैक, देह झाड़ि लेलक । फेर ओहनेक ओहने । पुरने ढाठी ।

नेबालाल कतेको बेर बुझबैक- रे अभागल, पढ़–पढ़ । दू अच्छर पढ़ि लेबेँ तँ लोक भऽ जेबेँ । महिंसवारक बेटा महिंसवार नहि बनबेँ । हमरा सकमे जे हेतौ से करबौ, अपने सब बरु भुखलो–नाङट रहि लेब ।'

नेबालाल अपना सक भरि कम कोसिस नहि कयलक जैयाकेँ पढ़यबाक । मुदा ओकर अवण्डपनीसँ अकच्छ भऽ हेडमास्टर कय बेर ओकर नामो स्कूलसँ काटि देथिन आ नेबालाल हुनक हाथ-पैर जोड़ि माफी दिया फेरसँ नाम लिखा दैक । तैयो मुदा जैया अपन बानि नहि छोड़लक । अनेरो ककरो गारि पढ़ि देब, ककरो मारि बैसब । ककरो पोथी, तँ ककरो कलम छीनि लेब । कहियो कोनो मास्टरेसँ बाता-बाती कऽ लेब । ई सब जैयाक सामान्य दिनचर्या छलैक । एक दिन तँ हेडमास्टरेसँ भीड़ि गेल । हेडमास्टरो ओकरा सदाक हेतु स्कूलसँ निकालि देलथिन ।

ओहि दिन जैया बापकेँ समाद नहि कहऽ गेल । ओ स्कूलक गेटपर आबि बैसि गेल । थोड़ेक कालक बाद धोबिघट्टासँ एकटा गदहा पकड़ि अनलक । ओकरा नाङरिमे एकटा खाली डिब्बा बान्हि देलकैक । डिब्बामे दू-चारिटा रोड़ी धऽ देलकैक । तखन गदहाकेँ स्कूलक हातामे ढुका कऽ होहकारि देलकैक । गदहा स्कूलक फिल्डमे रेकऽ लागल । ओकरा रेकलासँ डिब्बा ढनढनाइक आ गदहा और जोरसँ रेकैत हेकोँ-हेकोँ करऽ लागल । क्लास रूमसँ विद्यार्थी आ शिक्षक सब बहरा-बहरा कऽ तमासा देखऽ लागल । ओहि दिनक बाद जैया पलटि कऽ फेर स्कूल नहि गेल ।

नेबालालकेँ जैयाक एहि किरदानीक पता लगलैक तँ अपन माथ-कपार पीटि कऽ रहि गेल । ओ फेर हेडमास्टर लग जा कऽ विनती करबाक साहस नहि कऽ सकल । ओ तामसकेँ घोँटैत एतबय कहलकैक - जो रे अभागल-करमघट्टू ! दू अच्छर पढ़ि लितेँ तँ लोक भऽ जैतेँ । बड़ सेहन्ता छल । से करममे लिखल होउ तखन ने ! आब करैत रह जिनगी भरि महिंसवारि । छिलैत रह घास ।'

जैयाकेँ बापक तामस देखि डरो भेलैक जे ओ भने कतहु बौआइत रहओ मुदा भूख लगलापर घर आबहि पड़ितैक । से उपरे मोनसँ महींसकेँ घास-पात दियऽ लागल आ कखनो काल महींसकेँ चराबऽ लय बाध दिस सेहो लऽ जाय लागल ।

एक दिन आध पहर रातिए पओसर चरयबा लेल महींसकेँ खोलि बाध दिस हाँकि देलक । महींसक पीठपर बैसि गेल आ ओहीपर निन्न आबि गेलैक । महींस गामसँ बाहर जाय गोँएढ़ा खेतक सम्हरल-गम्हड़ायल धानमे पैसि गेल । भरि-भरि छातीक धान मोनसँ चरि महीस अफरऽ लागल तँ अपने मोने बहटरि कऽ खुट्टापर चल आयल । खुट्टापर अयलापर जैयाक निन्न टुटलैक । ओमहरसँ नेबालाल बहरायल तँ देखलक महींसकेँ हकहकाइत । महींस एना किएक कऽ रहल छलैक से ओ नहि बूझि सकल । ओकर सेवा-बरदासिमे लागि गेल । तावत एक दिससँ खेतवला गरियबैत आबि गेलैक । तखन नेबालाल महींसक अफरबाक कारण बूझि सकल । ओ गारि सुनैत रहल आ खेतवलाक पैर पकड़ैत रहल । हरजाना कबूल कयलेपर खेतवला कोनहुना शान्त भेलैक ।

जैयाकेँ भेलैक जे आब ओकरा बापक मारि पड़बे करतैक, से ओ चुप्पे चौक दिस घसकि गेल । दू-तीन दिनक बादे ओ गामपर आयल ।

आब जैयाक अड्डा भऽ गेलैक ओ चौक । ओहि ठाम औरो कयटा अवण्ड संगी सभ भेटि गेलैक । समूहमे रहने किछु बलगरीक अनुभव कयलक आ बनियाँ-बैकालसँ बट्टी असूलऽ लागल । लोक सब सहे-सहे जैयासँ डेराय लागल । जैया निडर होइत चल गेल ।

ओ आब कोनो-कोनो बहाना बनाय रोब-दाससँ बेहड़ी-चन्दा सेहो निधोखे असूलऽ लागल । ट्रक, टैक्सी, टेम्पो, रिक्सा, फेरीवला, तरकारीवाली, पान आ चाहवला सब जैयाकेँ नीक जकाँ चीन्हि गेलैक । ओ सब नवर्त भऽ कऽ 'जयजी' सम्बोधन करैक आ चन्दा दऽ देल करैक । ओ सभ पाछाँमे भने कहौक जे 'ई एकटा नव रंगदार ठाढ़ भऽ गेल', मुदा सोझाँमे बजबाक साहस नहि होइक । के गारि सुनितय, मारि खैतय ! आब तँ ओ 'बॉस' बनि गेल छल ।

एक बेर, जवाहर-रोजगार-योजनाक 'सरकारी टाकाक तमादी भऽ जैतैक तेँ धरफड़-धरफड़ कऽ सड़क मरम्मति चलि रहल छलैक । जैया देखलक, पीचवला सड़कपर ट्रैक्टरसँ माँटि खसैत । फेर देखलक, तीन नम्बरक भुसनी ईंटासँ ओहिपर खरञ्जा कयल जाइत । जैया साइटपर जा कऽ हल्ला करऽ लागल । काजकेँ रोकबा कऽ मुंशीकेँ कहलकैक- अय मुंशी ! जाके ठीकेदार से बोलो कि पीच रोडपर माँटी भरकर तीन नम्बर का ईंटा काहे लगाता है ! ई नइँ चलेगा । साला, सब रुपैया खा जाना चाहता है ? जाते हैं पेटीसन देने ।'

काज रुकि गेलैक । ठिकेदार रातिमे आबि कऽ जैया, मने बॉसकेँ भेंट कऽ किछु शेयर देब गछि लेलकैक । अगिला दिन काज चालू भऽ गेलैक । कोनो हरहर-खटखट नहि ।

आब जैया ओहि ठिकेदारक आदमी बनि गेल । ठिकेदार छल चतुर लोक । ओ जय बॉसकेँ अपन धन्धामे शामिल कऽ लेलक । आनो आन साइटपर स्थानीय रंगदारसँ मोर्चा लेबा लेल जय बॉसकेँ पठाबऽ लागल । एहिसँ शहरक आनो-आन ठिकेदार सबसँ जय बॉसक परिचय भऽ गेलैक । सब एकर धाख मानऽ लगलैक । आब ओ जय बॉस नहि सीटी बॉस बनि गेल । सीटी बॉस भेलासँ ओकरा अपनो ठिकेदारीक काज भेटऽ लगलैक ।

क्रमश: जय सीटी बॉस सब ठिकेदारकेँ धकिया कऽ एकछत्र ठिकेदार बनि गेल । आब ओ अपढ़ महिंसबार नेबालालक अवण्ड बेटा जैया नहि, श्रीजयप्रताप कन्ट्रैक्टर एण्ड बिल्डरक रूपमे प्रख्यात भऽ गेल । जकरा संक्षेपमे लोक जे.पी. बॉस कहऽ लगलैक ।

आब ओकर टेबुल फ्रेंडमे रहैत छलैक, पैघ-पैघ अफसर, राजनीतिक नेता, एम. पी., एमेले, मिनिस्टर, धनिक व्यापारी । आब जे.पी.बॉस अपने रंगदार पोसऽ लागल छल,

चन्दा दैत छल, राजनीति करैत छल आ अपनहुँ एमेले, एम. पी. ओ मिनिस्टर बनबाक इच्छा राखऽ लागल छल ।

मुदा जखन ओ उच्च शिक्षित जनसमुदायमे रहैत छल तँ ओकरा अपन भितरिया योग्यता आ अशिक्षित होयबाक बोध कचोटऽ लगैत छलैक । तेँ ओ चाहैत रहल जे ओकर बेटा-बेटी सब पढ़ैक, नीक रिजल्ट होइक, पैघ डिगरी होइक ।

ओकर जेठ बेटा पिंकू एही पब्लिक स्कूलमे पढ़लकैक । सब परीक्षामे फस्टे करैत रहलैक । जे.पी. बॉस पानि जकाँ पाइ बहा कऽ मैट्रिक आ आइ.एस-सी.मे फस्ट डिवीजन दिया देलकैक । ओ पिंकूकेँ इंजीनियर बनाबऽ चाहैत छल । ठिकेदारीमे बेसीकाल इंजीनियरसँ सम्पर्क रहैत छलैक तेँ जे.पी. बासक नजरिमे पैघ होयबाक आदर्श इंजीनियरे छलैक । मुदा पिंकू इंजीनियरीक टेस्ट परीक्षामे पास नहि भऽ सकल । पास नहि भेल तेँ की ? जे.पी. लाखो टका कैपिटेशन फीस दऽ कऽ दक्षिण भारतक एकटा प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कालेजमे नाम लिखा देलकैक । पिंकू चल गेल इंजीनियर बनबाकलेल । मुदा दुइए मासक बाद पिंकू बापकेँ चिट्ठी लिखऽ लागल-पप्पा ! एहि ठाम हम क्लासमे किच्छु ने बूझै छिऐ । आन विद्यार्थी आ' शिक्षक सब हमरा देखि कऽ हँसैत रहैए ।'

छओ मास पुरलो ने होयतैक कि पिंकू मोटा-चोटा लेने आपस चल आयल । कालेजसँ ओकरा निकालि देल गेलैक कि अपने छोड़ि कऽ चल आयल छल, से ककरो ने बूझल भेलैक ।

जे.पी. पिंकूकेँ दूटा ट्रक कीनि देलकैक आ किछु ठिकेदारी सेहो देया देलकैक । पिंकू अपन बापक व्यवसायक उत्तराधिकारी बनबाक प्रयासमे लागल छलैक । मुदा जे.पी. बॉसक मोन बड़ छोट भऽ गेलैक । आब ओ छोटका बेटा टिंकूपर आस लगौने छल ।

टिंकू पब्लिक स्कूलमे भी.आइ.पी. कैंडिडेट बूझल जाइत छल । सब दिन फस्टे करैत रहल अछि । मुदा एहि बेर ओ सेकेंड कऽ गेल । जे.पी.बॉसकेँ तँ इहो भनक कानमे पड़ल छलैक जे टिंकू एहि बेर फेल होइत-होइत बाँचि गेल छल । एही रिजल्टक बुझारति लय जे.पी. बॉस स्कूलमे आबि रहल छल ।

स्कूलमे गाड़ी आबि कऽ लगलैक । जे.पी.बॉस गाड़ीसँ उतरल । प्रिन्सिपल आगाँ-आगाँ आ मास्टर सब पाछाँ-पाछाँ दौड़लाह स्वागत करबालेल ।

जे.पी.बॉस आफिसमे आबि कऽ बैसल आ आगाँ किछु बजितय, ताहिसँ पहिनहिं प्रिन्सिपल कल जोड़ि कऽ बाजऽ लगलाह- सर ! अइ बेर बड़ पैघ अपराध भऽ गेल । टिंकू अइ बेर सेकेंड पोजीशनपर चल गेल । ई सब एकटा नवका टीचरक बदमासीसँ भऽ गेलैक । ओ अपना विषयमे टिंकूकेँ फेल कऽ देने छल । कतेक डाँट-फटकारक

बाद पास नम्बर देबालेल राजी भऽ सकल । मुदा, सर ! ओहि टीचरकेँ आइसँ बरखास्त कऽ देलियनि अछि ।'

प्रिन्सिपल अपस्याँत होइत एके साँसमे बजैत गेलाह आ जे.पी. चुपचाप सुनैत रहल । प्रिन्सिपलक बाजब खतम भेलापर जे.पी. बॉस गम्भीरतासँ बाजल– बस ? एतबय सजा ?'

– नै सर ! हिनकर बारहमासक कटौतीक राशि बारह सय टका सेहो जब्त भऽ गेलनि । बहालीमे शर्त्ते यैह छलनि जे काज सन्तोषजनक भेलेपर ओ राशि भेटत । आ दोसर बात, सर ! जे एहि टॉप ग्रेडक पब्लिक स्कूलसँ बरखास्त भेलापर कोन स्कूल हिनका नोकरी देतनि ?' प्रिन्सिपल थरथराइत जकाँ बजलाह ।

–ओ टीचर एखन स्कूलमे छथि ? बजाउ तँ कने हुनका ।'

– आइ धरि तँ नोकरीमे छथि । एखने बजा दैत छी ।'

प्रिन्सिपल घंटी बजौलनि । आ चपरासी अयलनि तँ ओहि टीचरकेँ बजा अनबाक आदेश देलथिन ।

टीचर आफिसमे आबि हाथ जोड़ि कऽ जे.पी.केँ अभिवादन कयलथिन । जे.पी. अपन कुर्सीपरसँ कनेक उठि जकाँ होइत हुनका बैसबाक संकेत कयलकनि । फेर आँखिक संकेतसँ आन–आन टीचरकेँ बाहर चल जयबाक इसारा कयलक । आन टीचर सब सहमल सन बाहर चल गेलाह । आफिसमे तीन–गोटे मात्र रहि गेल– जे.पी. बॉस, प्रिन्सिपल आ ओ टीचर ।

टीचरक भावहीन चेहरा दिस तकैत जे.पी.बॉस बाजल –हँ, तँ अहीँ हमर बेटाक कापी जँचने छलहुँ ।'

टीचर स्वाभिमानक भावसँ भरल स्वरमे बजलाह – सर ! जे उत्तर लिखल देखलिऐक ताहिपर नम्बर देलिऐक । छात्र फेल भऽ गेल छल ठीके । प्रिन्सिपल साहेबक दबाब देलापर हम पास नम्बर तँ दऽ देलिऐ । मुदा हमरा बुतेँ ई नहि होइत जे कापीमे किछु नहि लिखल रहलोपर नब्बे–पंचानबे नम्बर बैसा दितिऐक । नोकरीसँ हटाओल जयबाक हमरा कोनो दुख नहि अछि ।

टीचरक बजबामे दृढ़ता ओ निर्भीकता छलनि ।

–बरखास्तगीक पत्र लाउ तँ ।' जे. पी. बॉस बाजल ।

टीचर जेबीसँ पत्र निकालि जे.पी.बॉसकेँ देलथिन । जे.पी.बॉस पत्र खोलि उनटा–पुनटा कऽ देखलक आ जेबीमे राखि लेलक । फेर टीचरकेँ कहलकनि – ठीक छै । अहाँ बाहर जाउ ।'

टीचर बाहर चल गेलाह । आब आफिसमे दुइए गोटे रहि गेल छल, प्रिन्सिपल आ जे.पी.बॉस । प्रिन्सिपलकेँ भेलनि जेना बाघक पिजड़ामे होथि । घामे-पसेने तर-बतर भऽ गेल छलाह । बाहरमे टीचर सब थहाथही करैत कान पथने छल । पता नहि, आइ की होयतैक । प्रिन्सिपल साहेब तँ आइ गेले छथि ।

जे.पी. बॉस मन्द स्वरेँ प्रिन्सिपलकेँ कहलकनि- प्रिन्सिपल साहेब ! एहि टीचरकेँ कटौतीक रुपैया भुगतान कऽ दियनि । ई बरखास्तगीक पत्र हम राखि लैत छी । और हँ'- ओ जेबीसँ नोट बाहर कऽ टेबुलपर रखैत बाजल - ई बारह सय टाका एहि टीचरकेँ हमरा दिससँ बोनस ।'

प्रिन्सिपलकेँ बुझबामे नहि अयलनि जे जे.पी. बॉस की कहैत छैक आ हुनका की करबाक वा बजबाक चाहियनि । ओ अकबकायल जकाँ जे.पी.बॉस दिस तकैत रहलाह ।

जे.पी. बॉस टेबुलपर राखल सीसाक पेपरवेटकेँ नचबैत बाजल- प्रिन्सिपल साहेब ! अहाँ टिंकूक सब विषयक कॉपीक जाँच एहि टीचरसँ फेर करबाउ आ टिंकू फेल करैत होअय तँ फेल होअऽ दिऔक ।

- की ?' प्रिन्सिपल आश्चर्यसँ मुँह बओने रहि गेलाह ।

- हँ प्रिन्सिपल साहेब ! हमर महिंसबार बाप कहल करथि जे दू अच्छर पढ़ि लेबेँ तँ लोक भऽ जेबेँ । हम लोक नहि बनि सकलहुँ । हमरा टका-पैसा, धन-बीत, रोब-दाब सब किछु अछि, मुदा एखनो हम सभक नजरिमे रंगदारे छी, लोक नहि । हम टिंकूकेँ रंगदारक बेटा रंगदार नहि बनाबऽ चाहैत छी । हम ओकरा लोक बना कऽ बापक सेहन्ता पूर करऽ चाहैत छी ।' एतेक कहैत-कहैत जे.पी.बॉसक आँखि नोरा गेलैक । स्वर भहरा गेलैक । ओ आगाँ बाजि नहि सकल आ सोझे आफिससँ बहरा गेल ।

[लेखन- 11 जनवरी 2000, प्रकाशन- अंतिका, अक्टू-दिस. 2000]



जेठांस

रामलला राति भरि सूति नहि सकलाह । कछमछ करैत करौट फेरैत रहलाह । छगुनि-छगुनि विकल होइत रहलाह जे कहाँ संकल्प-क्रयने छलहुँ जे गाछी बाँटल नहि जायत, साझिए रहत । से संकल्प टुटिए नहि रहल अछि, आब गाछी काटलो जायत ।

भरि राति ओ गाछ सभक जड़िपर बजरैत कुरहरिक छओ केर ठाँहि-ठाँहि आ अरड़ा-अरड़ा कऽ खसैत गाछ सभक अवाज सुनैत रहलाह ।

रामलला चारू भाइ अठन्नी पट्टीक मालिक छलाह । आन फरिक लोकनिसँ बहुत पहिनहि जमीन-जालक बाँट-बखरा भऽ गेल छलनि । ओ लोकनि एक जुग पहिनहि गाछीकेँ आधा बाँटि, गाछ कटबाय ओकरा खेत बना लेलथिन । रामलला अपन हिस्साक गाछीकेँ कटबायब नहि गछलनि । ततबे नहि । ओ गाछीसँ सटल अपन खेतमे नव कलम लगबा कऽ पुरना गाछीक रकबाक बराबरि कऽ लेलनि ।

रामललाक पितामह दू भाइ । पिता भाइमे एकसरे । विलम्बसँ सन्तान सब भेलनि । से भेलनि चारि बालक, तीन कन्या । रामललालक वंश अदौसँ दुद्धा वैष्णव । भगवत्कृपासँ रामनवमी दिन जेठ बालकक आगमन भेलनि तेँ हुनक नाम रखलथिन रामलला। तीन कन्याक पश्चात् तरे-उपरे तीन गोट बेटाक जन्म भेलनि तँ सभक नाम दशरथे जकाँ रखलथिन- भरतभगवान, लखनलाल आ शत्रुघ्न । रामललाक पिता कहल करथिन- हमरा घरमे भगवान् रामचन्द्र चारू भाइ संग-संग अवतार लेलनि अछि ।

रामलला सतरह-अठारह वर्षक भेल छलाह । भाइ-बहीन सब छोटे-छोटे छलनि, तखने रामललाक पिता अकस्मात् आँखि मूनि लेलथिन ।

रामललाक पिताकेँ अपन मरबाक आभास भऽ गेल छलनि जेना । ओ रामललाकेँ अपना लग बैसा कऽ कतेको बात सब बुझाबऽ लगलथिन । ओ अपन वंशक आचार-व्यवहारक सम्बन्धमे कहलथिन । ओ कहने छलथिन जे गाछीक दच्छिन-पूब कोनपर पाँच गोट आमक गाछ उसरागा अछि । ओ अपना सभकलेल बारल अछि । ओही ठामक एकटा गाछ हमरहु श्राद्धमे उसरगि देब ।'

रामललाक आँखि नोराइत रहैत छलनि आ पिता कहैत रहैत छलथिन - पोखरिक जलकर नहि बेचब । माछ बेचि कऽ टाका नहि लेब । गाछी ने काटब, ने बेचब । मुदा

लोकक मरनी-हरनीमे बाँस-काठ लय मना नहि करबैक । ओ औरो-औरो बहुत रास गप्प कहने छलथिन । रामलला एकोटा बात बिसरल नहि छलाह ।

आखरी बेरमे छबो भाइ-बहीन आ मायक हाथ रामललाकेँ धरबैत कहने छलथिन- छी तँ अहूँ नेन्ने एखन, मुदा जेँ सबसँ जेठ छी तेँ सभक भारा अहींकेँ । सबकेँ सम्हारब, योग्य बनायब .... आ ई कहैत वाक् बन्द भऽ गेल छलनि । घड़घड़ी आबि गेल छलनि ।

रामलला अपन पढ़ाइ रोकि कऽ परिवार सम्हारऽमे लागि गेलाह । तीनू बहिनिक कन्यादान कयलनि । तीनू भाइकेँ पढ़ा-लिखा कऽ योग्य बनौलनि । तीनू नीक-नीक नोकरीमे लागि गेलथिन । भरत भगवान दिल्लीमे, लखनलाल राँचीमे, आ शत्रुघ्न टाटानगरमे नोकरी करैत अपन-अपन मकान बना कऽ रहऽ लगलथिन । हुनका लोकनिकेँ गामसँ कमे काल मतलब रहैत छलनि ।

रामलला गामपर एकसर रहि गेलाह राज-पाटकेँ सम्हारैत । पाबनि-तिहार, बरखी-पारबन, नोत-हकार सब कथुक भार रामेललापर । घरक जेठ छलाह तेँ सर-कुटुम्बक दिससँ नोत-पाता हिनकहि पूरऽ पड़ैत छलनि । एते धरि जे भाइयो लोकनिक सासुरक काज-परोजनमे रामेललाकेँ भार-दोर आ व्यवहारक व्यवस्था करऽ पड़ैत छलनि । रामलला जे किछु करैत छलाह खेते-पथारक उपजा-बारी बेचि-बिकीन कऽ । फल ई भेलनि जे ओ अपन बाल-बच्चाकेँ ओहन सुविधा नहि दऽ सकलाह जेहन हुनक भतीजा-भतीजी लोकनिकेँ शहरमे भेटलनि ।

समय बीतैत गेल । विचार-व्यवहार बदलैत गेल । भाइ लोकनि दशमी पूजाक अवसरपर सपरिवार अबैत रहैत छलथिन आ जयबा काल बोरामे कसि-कसि कऽ जतबा सम्भव भऽ पबैत छलनि, चाउर, गहूम, राहड़ि, बदाम, मसुरी, गोट, रैंची आ एहिना आनो-आन वस्तु सभ ऊभि कऽ लेने चल जाइत छलथिन । ढक-कोठी सब ढनढन करैत रहि जाइत छलनि ।

सहे-सहे खेत-पथार, परती-पराँत, घर-घराड़ी - जते जे छलनि से चारि कूड़ी लागि गेलनि । रामलला जेठ छलाह तेँ किछु बजैत नहि छलाह । जे प्रस्ताव होइत छल तकरा चुपचाप मानि लैत छलाह । आब बाँकी बाँचि गेल छलनि, पोखरि आ गाछी । एहि दुहूक बटबाराक हेतु रगड़ चलऽ लागल ।

पोखरि छल सोलह आना पट्टी । फरीक लोकनि अठन्नी पट्टीक हकदार छलथिन, से हुनका लोकनिमे ककरो एक आना, ककरो डेढ़ आना, ककरो दू पाइ, ककरो एक पाइ हिस्सा होइत छलनि । शेष आठ आनाक मालिक छलाह रामलला चारू भाइ ।

पोखरिमे आरि-झाड़ पड़ि नहि सकैत छलैक । फरीक लोकनिकेँ अपन-अपन

हिस्सा ततेक कम छलनि जे ओ सब पोखरिक हैसियतिमे कोनो खोद-बेद नहि करैत छलथिन । पोखरिमे मछहर नहि होइक । उजाहि उठैक तँ जकरा मोन होइक, माछ छानि-छानि कऽ लऽ जाय । हँ, कहियो ककरो बरियातीकलेल प्रयोजन पड़ैक तँ गोटेक जाल फेकि कऽ दू-चारि फड़ी माछ मारबाक मनाही नहि होइक, मुदा से रामललासँ पूछि कऽ ।

रामललाक तीनू छोट भाइकेँ ई सब सोहाँत नहि । मुदा ककरो ई कहबाक साहस नहि होइनि जे पोखरिक जलकरक बन्दोवस्ती कयल जाय । ओ तीनू गोटा शेष अठन्नीक फरीक लोकनिकेँ पटियाबऽ लगलाह । फरीक सबकेँ घटिए की लगितनि । ओ सब सहजेँ तैयार भऽ गेलथिन, मुदा हुनका सबकेँ रामललाक ततबा धाख होइत छलनि जे रामललाक सोझाँ पोखरिक जलकरक बन्दोवस्तीक प्रस्ताव रखबाक हूबा नहि भेलनि ।

हारि-दारि कऽ ई भार लेलनि भरतभगवान, लखनलाल आ शत्रुघ्न तीनू गोटा मीलि कऽ । ओ तीनू फरीक सभकेँ सङोर कऽ एक दिन रामलला लग अयलाह । हुनका सभक प्रस्ताव सूनि कऽ तँ रामललाकेँ चकविदोर लागि गेलनि ।

फरीक सभकेँ रामललासँ आँखि मिलयबाक साहस नहि भेलनि । ओ सभ दोसर दिस ताकऽ लगलाह । मुदा भरतभगवान धखाइत बजलाह- भाइजी ! आब अर्थक युग आबि गेलैक अछि । आब अर्थे प्रधान भऽ गेलैक अछि । पोखरिसँ नीक आमदनी भऽ सकैत छैक । तेँ आब एकर जलकरक बन्दोवस्ती कयल जयबाक चाही, से सभक विचार छनि ।'

सर्वथा गम्भीर, शान्त आ मितभाषी रामलला बमछि उठलाह - की, वैष्णव भऽ कऽ कण्ठी तोड़ि लियऽ ? आब माछ खाउ ? भठि जाउ ?'

लखनलाल बजलाह- एहिमे माछ खयबाक बात कहाँ छैक ? पोखरिक बन्दोवस्ती आ माछ खयबामे कोन सम्बन्ध छैक ?'

-माछ खाइ वा माछ बेचि ओहि टकासँ आन वस्तु कीनि उपभोग करी, एहि दुनूमे कोनो फरक नहि छैक ।' रामलला कठोर शब्दमे बजलाह ।

शत्रुघ्न एहिपर कहलथिन - ठीक छै, अहाँक आस्तिकता एहिसँ भङठि जायत तँ माछक बन्दोवस्ती नहि हेतै । मुदा मखान आ सिंहारा तँ भऽ सकै छै । ओ तँ साकठ वस्तु नहि होइ छै । ओ तँ एकदम निरामिष होइ छै !'

रामललाकेँ लहरि उठि गेलनि । ओ जोर-जोरसँ बाजऽ लगलाह - पोखरि सन पवित्र आ दसगर्दा वस्तुकेँ किछु टकाक लोभमे डोभा-डबड़ा बना दिअऽ चाहैत छी ? भरि गामक लोक एहिमे नहाइत अछि । छठि सन पाबनि होइत अछि । माल-जाल पानि पिबैत अछि । ओकरा अपनेसँ नाश कऽ कऽ समाजमे दुरजरू बनू ? कुल-खन्दानक यश-प्रतिष्ठाकेँ गर्क कऽ दिअऽ ?'

शत्रुघ्न सभ भाइमे किछु बेसिए ढीठ छलाह । ओ बजलाह- अहाँकेँ बेगरता नहि अछि तँ नहि रहओ । अपन कुल-खन्दानक सोहरि पकड़ने रहू मुदा अठन्नी पट्टीक फरीक लोकनिकेँ बेगरता छनि । ओ सब बन्दोवस्त करबे करताह । तँ, की पोखरिमे बान्ह बन्हबायब ?'

फरीक लोकनि एखनो मुँह घुमा कऽ दोसरे दिस ताकि रहल छलाह । बिनु बजनहि भेटि रहल छलनि तँ किएक किछु बजितथि ? जे हाथ से साथ ।

रामलला दलानपर बैसल अपन भाइ सब आ फरीक सबकेँ नजरि घुमा कऽ देखलनि । बुझि पड़लनि जेना ओ एकदम एकसरे होथि । ओ थोड़ेक काल गुम्म रहि नहुएँसँ बजलाह - जे इच्छा हो से करैत जाउ । जलकरक आधा तँ फरीक लोकनिक उचिते छनि । बाँकी आधामे हम हिस्सा नहि लेब । अहाँ तीनू गोटे जे करी ।'

एतबा बाजि रामलला व्यथित भऽ कऽ उठि गेलाह आ अपना कोठलीमे जा कऽ पड़ि रहलाह ।

आब झगड़ाक जड़ि बनि गेल छल गाछीक बटबारा । रामललाक कहब छलनि जे गाछी चारू भाइक साझी रहत । मुदा हुनक बात चललनि नहि । तीनू भाइ कहऽ लगलथिन जे- साले-साल आम फड़त, झाँखी पाङल जायत, अन्हड़-बिहाड़िमे पुरान गाछ सभ उनटि कऽ खसत । सभक हिस्सा लेबऽलेल के आओत ? हमरा सभकेँ एतेक फुरसति नहि अछि जे हिस्सा-बखरा लय एतेक खर्च कऽ कऽ गाम अबैत रहब ।'

रामलला शान्त स्वरमे बुझबैत कहलथिन जे- ठीक अछि, गाछ बाँटि लिअऽ । सभक अपन-अपन हिस्सा बेरायल रहत । उसरागा गाछ तँ अपना सभक थीके नहि ।'

एहि बेर शत्रुघ्न आगाँ भऽ कऽ बजलाह जे - एनामे गाछ सभक बाँट बराबरि नहि होयत । एक लगा कऽ ककरो हिस्सा नहि पड़ैक तँ बटबाराक की मोजर रहत ?'

वास्तवमे भरत भगवान, लखनलाल आ शत्रुघ्न - तीनूक भितरिया मनसा छलनि जे गाछीक गाछ सभ कठहियाक हाथेँ बेचि देल जाय । ओतेक पैघ गाछी । आम-कटहर, जामु-बड़हर, चऽह-सीसो, गम्हारि-सिरीठ आनो आन अकठ सभक पैघ, पुरान आ जुआयल गाछ सभसँ गाछी अन्हार लगैत छल । सभक दाम कतोक लाख टाका होइतैक । ओहि टाकासँ तीनू भाइ शहरमे फ्लैट सब बनबाय किरायापर लगयबाक विचार कयने छलाह । हुनका सभक कहब जे- एहि गाछीसँ हमरा सबकेँ कोनो लाभ नहि अछि ।'

तीनू भाइ भरि गामक लोककेँ एकट्ठा कऽ लेलनि । रामलला कहियो नहि चाहलनि जे हुनक भैयारी बाँटमे गामक पंच आबनि, मुदा भाइ सबकेँ एहि सबसँ मतलब नहि छलनि । ओ सब तँ रामललाकेँ ताहि रूपमे देखार कराबऽ चाहैत छलाह जे लोक बूझओ जे रामललाक मोनमे बदनेती छनि । रामललाकेँ ई बात बूझि कऽ जेना गरानि

होअऽ लगलनि । ओ एहू बातपर मानऽ लय तैयार भऽ गेलाह जे हुनक हिस्साक गाछ छोड़ि, तीनू भाइ अपन-अपन हिस्साक गाछ बेचि लेथि । परन्तु भैयारी एतबहुपर तैयार नहि । विवश भऽ अपन छातीपर पाथर राखि कहऽ पड़लनि - जे विचार हो से करू ।'

दोसर दिन लकड़ीक ठिकेदार, कठहिया आ गामक लोक सब गाछी पहुँचल । रामलला सेहो मन्हुआयल सभक पाछाँ-पाछाँ पहुँचल छलाह । गाछ सभक दाम ठीकल जाय लागल ।

रामलला गुम्म-सुम्म एक-एक गाछकेँ देखैत रहलाह । दच्छिन-पूब दिसक आरापर पाँच-छौटा सरही आमक विशाल गाछ । ओ सब उसरागा गाछ छल । सब गाछक नाम फराक-फराक छल, जेना-बूढ़ा गाछ, बाबा गाछ, बाबी गाछ, मैआ गाछ, बाबू गाछ .... । ओकर सभक आम अपन परिवार वा देयाद-वादक लोक नहि छुबैत छलनि । गाछसँ खसल, जे देखलक से लेलक । जकरा आमक गाछ नहि छलैक से निधोख बीछि कऽ लऽ जाइत छल । ककरो रोक नहि ।

रामललाकेँ बूझि पड़लनि जेना ओहि गाछमे निवास करैत पुरखा लोकनि क्रन्दन करैत होथिन । ओ बाबूगाछ लग जाय ओठङि गेलाह आ गाछसँ कान सटा देलनि । बूझि पड़लनि जेना पिता कहि रहल होथिन - की बाउ ? यैह होइ ? हमर एकोटा बात मोन नहि रहल ? आइ हमर सातो पुरखाक उखन्नन भऽ रहल अछि आ अहाँ चुप छी ?'

रामलला सहटि कऽ बीच गाछीमे अयलाह । तीनू भाइकेँ बजौलनि । आनो लोक सब सहटि कऽ आबि गेल । रामलला रुद्ध कण्ठसँ अनुनयक स्वरमे कहलथिन - बौआ ! एहि गाछीकेँ कटबाइये देबाक संकल्प कयने छी तँ कमसँ कम उसरागा गाछ सबकेँ छोड़ि दियौक अनामति । ई सब बाप-दादाक निसानी थीक । ई हमर सभक नहि, समाजक गाछ थिकैक, सबजाना गाछ थिकैक । समाजक दस लोकक आत्मा जुड़ाइत छैक । बेर-बेगरता निमहैत छैक । एकर अंश कोनो रूपेँ ग्रहण करब तँ पाप होयत । बस साझिएमे एकरा सबकेँ छोड़ि दियौक ।'

सब चुपे रहल मुदा लखनलाल चुप नहि रहलाह । ओ बाजऽ लगलाह - आब एकर सभक विचार नहि होइत छैक । गाछक फल बहुत दिन धरि लोक खाइत रहल । सब सधि गेलैक । एहू गाछ सभकेँ दाम लगा कऽ कटबा देल जयतैक । अन्धविश्वासकेँ लोक कतेक दिन धरि उघैत रहत ?'

भरत आ शत्रुघ्न समाने विचारक छलाह तेँ मौने रहलाह ।

एतेक भेलोपर रामललाकेँ ई आशंका नहि छलनि जे छोट भाइ सब एतेक विचारहीन भऽ जयथिन । ओ अन्तिम प्रयास कयलनि- एहि गाछ सभकेँ हमरे हिस्सामे

छोड़ि दियऽ आ एकरा बदलामे दोसर-दोसर गाछ अहाँ सब लऽ लियऽ........ ।' आक्रोश आ आत्मग्लानिसँ जेना हुनक कण्ठ बन्द भऽ रहल छलनि ।

तीनू भाइ लोभ आ स्वार्थसँ आन्हर भऽ गेल छलथिन- ई गाछ तँ सबसँ सेरगर छैक । एके भाइक हिस्सामे कोना देल जयतैक ?'

रामलला तँ जेना निष्प्राण भऽ गेल छलाह । गाछ किननिहार टाका देबासँ पहिने एग्रीमेंटपर दसखत कराबऽ चाहैत छल । भरत भगवान रामललाकेँ ओहि कागतपर दसखत करऽ कहलथिन । रामललाक चित्त आन्दोलित आ असन्तुलित भऽ गेल छलनि । ओ कहलथिन-आब ई काज आइ नहि, काल्हि हैत ।'

ताबत बेरो झुकि गेल छलैक । रामलला सोझे गामपर चल अयलाह ।

रातिमे भोजनो नहि कयलनि । विष जकाँ बूझि पड़लनि भोजन । सूतऽ गेलाह तँ निन्न नहि भेलनि । भरि राति कछमछ करैत रहलाह ।

रामलला आध पहर रातिए उठलाह । अपन जन-बोनिहार सभक टोलपर जा कऽ कहि अयलथिन जे पह फटैत देरी टोलक जतेक लोक छेँ से बाले-बच्चे हमरा ओतऽ अबैत जो । फेर भरि गामक ओहन-ओहन लोककेँ सेहो कहि अयलथिन जे गरीब छल, जकरा कहियो केओ पंचैतीमे नहि बजबैत छलैक ।

रामलला जखन दरबज्जापर अयलाह तखन सूर्योदय भेलैक । दरबज्जापर भरत भगवान, लखनलाल आ शत्रुघ्न अयलाह । ठिकेदार आ कठहिया आयल । गामक लोक आयल । रामलला जकरा सभकेँ कहि आयल छलथिन आ जे जे रामललाक समाद सुनलक से सभ चल आयल । भरि दलान आ खरिहानमे थहाथही लोक ।

सभकेँ गाछ बिकयबाक बात नीक जकाँ बुझलो नहि छलैक, से बुझलक तँ अचम्भित होअऽ लागल जे रामललाक ओ गाछी, पुरना आ विशाल गाछी बिका रहल छनि, जकरा लोक बड़की गाछी, पुरनी गाछी, बुढ़िया गाछी वा बाबा गाछी कहैत छैक । गामक कमे लोक एहन छल होयत जकरा ओहि गाछीसँ छोटो सन उपकार नहि भेल होइक । से गाछी रामललाक भाइ लोकनि कटबा रहल छथिन । कथीक कमी छनि ? राम ! राम ! राम !

भरतभगवान रामलला दिस एग्रीमेंटवला कागत बढ़ौलथिन । रामलला हाथमे कागत लेलनि आ अचानक जेना विस्फोट भऽ गेल । शान्त आ मितभाषी रामलला बाजऽ लगलाह जोर-जोरसँ -बौआ ! खेत-पथार, घर-घराड़ी, अन्न-पानि, गहना-गुड़िया, दरब-जात, बीत-बाखर, लहना-तगादा सभक बटबारा भऽ गेल । नीके भेल । हमरो भैयारीक मोह टूटि गेल । बाँटल भाइ पड़ोसिया दाखिल । पिताक वचनसँ मुक्त भेलहुँ । मुदा अहाँ सब

बरखी–पारबन, पाबनि–तिहार, सऽर–कुटुम, पौनी–पसारी नहि बँटलहुँ । ओ सब हमरा कपारपर छल आ हमरे कपारपर रहत ? जे भेल से भऽ गेल । आब भाभट समटू । अपन–अपन शहरवला मकानपर जाइत जाउ । आब ई गाछी ने काटल जायत ने बाँटल जायत । एहिसँ अहाँ सबकेँ कोनो सरोकार नहि । कोनो हक–हिस्सा नहि । कोनो दाबी नहि ।'

उपस्थित लोककेँ तराटक्क लागि गेलैक । एहन सात्त्विक, गम्भीर, शान्त, भरि गामक पंचैती कयनिहार रामललाबाबू एना बजताह, सब किछु उठा कऽ पीबि जयताह तकर कल्पनो ने केओ कयने छल ! किछु गोटे बाजल–रामललाबाबू ! ई तँ बदनेती भेल, बैमानी भेल । अपने सोदर भाइसँ बैमानी उचित नहि ।'

रामलला फेर उच्च स्वरमे बजलाह – बैमानी हमर सहोदर भाइ लोकनि ओकरा सभक संग कऽ रहल छथि जकर माय–बापक संस्कार ओहि गाछीक जारनिसँ होइत छैक, जकर बेटाक उपनयनक मड़बाक बसकट्टी ओहि गाछीमे होइत छैक, जकर भरि सालक भानस–भात ओहि गाछीक पात खरड़ि कऽ होइत छैक, जकरा आम–अँचारक सेहन्ता ओहि गाछीसँ पूर होइत छैक ।' रामलला हकमैत फेर आगाँ बाजऽ लगलाह– ई गाछी तँ बहुत पहिनहि कटि गेल रहितय जहिया अठन्नी पट्टीक फरीक लोकनि अपन हिस्सा कटबा लेलनि आ हमरो तीन बहिनिक कन्यादान आ भाइ सभक पढ़ाइ–लिखाइकलेल टाकाक खगता छल । तहिया हम गाछीकेँ बचा लेलहुँ, ततबे नहि, जतबा गाछी कटल छल तकरा नव कलम लगा कऽ पूरा कऽ लेलहुँ । आइ ओहि गाछक जड़िपर कुरहरि बजरत तँ ओहि तरमे पहिने हम अपन गरदनि दऽ देब । भाइ सबलय बहुत कयलियनि तैयो सन्तोष नहि भेलनि । आब उसरागा गाछ बेचबापर वृत्त छथि । ई उचित होइ ? अहीं सब कहैत जाउ ।'

रामलला अपन तीनू भाइ दिस ताकि बजलाह – आब अहाँ सभ सन्तोष करू । एहि गाछीमे ककरो हक नहि अछि । ई हमर जेठाँस भेल । एकरा हम पिता–पितामहक नामपर आइ उसरगि रहल छी । हमर गाछी आब हमर नहि, सौंसे गाम–समाजक थिक । समाज जे करय ।'

जतेक लोक सभ आयल छल, से सभ एक स्वरमे बाजऽ लागल– रामललाबाबू ठीके तँ कहै छथिन । ई गाछी तँ हुनकर नहि, हमर सभक छी । हम सभ एकरा सत्तीं नहि काटऽ देबनि ।' रामलला आवेशेमे कोठलीमे चल गेलाह आ फटाक दऽ केबाड़ लगा लेलनि । लोक सब थकमकायल ठाढ़ रहि गेल ।

[प्रकाशन-प्रवासी- इलाहाबाद]



पुत्र-मोह

जाड़क समय छल, साँझुक पहर छल । तरकारी बजारसँ कनेक हटि मछट्टाक लगमे मांस बेचनिहार चिक्कबाक दोकान आ अण्डाक दोकान छल । ओहि दोकानक सोझाँ सड़कक दोसर कात ठाढ़ छलाह गुणेश्वरपाठक । बड़ी कालसँ ठाढ़ भेल जेना कथूक प्रतीक्षा कऽ रहल छलाह । अकस्मात् केओ पैर छूबि गोड़ लगलकनि । गुणेश्वरपाठक चौंकि उठलाह जेना कोनो चोरि करैत पकड़ल गेल होथि । ओ पूछि बैसलथिन- के ?'

– हम, गोपाल ।' गोड़ लगनिहार ठाढ़ होइत बाजल ।

– कहिया अयलहुँ ?'

– आइए, एखने थोड़ेक काल पहिने पहुँचलहुँ अछि । बड़ा दिनक छुट्टी भेलै अछि । काल्हिए क्लास खतम कऽ कऽ बिदा होइतहुँ, मुदा जावत महेन्द्रूघाट पहुँचलहुँ तावत जहाज छूटि गेल तेँ आइ भोरे पटनासँ बिदा भेलहुँ । अबिते भेल जे पहिने किसुनजीकेँ देखि अबिऐनि । एहि ठाम अहाँकेँ देखलहुँ । की हाल छनि किसुनक ?' गोपाल अपन बात कहि गेल । गुणेश्वरपाठक निराश स्वरमे बजलाह- हालतिमे कोनो सुधार नहि छनि । डाक्टर जे जे दवाइ कहैत छथि से सभ अनैत छी, देल जाइत छनि । तखन आगाँ हमर भाग्य ।'

गुणेश्वरपाठक छलाह सरकारी आफिसमे बड़ाबाबू मुदा अत्यन्त सदाचारी लोक तेँ कोनो ठाम बेसी दिन असालतन भऽ कऽ रहि नहि पबैत छलाह । जाही ठाम पदस्थापित होइत छलाह, ओहि ठामक सहकर्मी सब बाजऽ लगैत छलनि जे – पाठकजी संस्था खराब कऽ दैत छथिन । लोकक रोजी-रोटी छीनि लैत छथिन । लोक मुहमे जाबी लगा कऽ कते दिन रहत !'

पाठकजी धार्मिक प्रवृत्तिक छलाह । आचार-विचार, नियम-निष्ठा, पूजा-पाठमे ओ कहियो, कोनो स्थितिमे टुट्टी नहि होअऽ दैत छलाह । खान-पानमे अत्यन्त कट्टर छलाह । कतेक बेर हुनका अपन डेरा एहि हेतु बदलऽ पड़ैत छलनि जे मकानक मालिक अथवा बगलमे रहनिहार अन्य डेरेदारक भनसाघरमे फोड़नमे पड़ऽवला लहसुन-पेआजुक गन्ध असहाज भऽ जाइत छलनि । एते धरि जे कतहु धोखासँ लहसुन-पेआजुक छूति भऽ जाइत छलनि तँ स्नान कऽ जनउ बदलि लैत छलाह । तखन माछ-मांस खयबाक तँ कथे नहि ।

गुणेश्वरपाठक स्वयं सरकारी नोकरीमे छलाहे, गामोपर आस्था-पात नीके छलनि। मुदा जेना सुख-शान्ति हुनका भाग्यमे लिखल नहि छलनि। जेठ बेटा छलथिन बड़ प्रतिभा सम्पन्न। बी.एस्-सी. आनर्समे फस्ट क्लासमे फस्ट भेल छलथिन। दरभंगामे पोस्ट ग्रेजुएटक पढ़ाइ नहि छलैक तेँ पटना साइंस कालेजमे एम्.एस-सी.मे नाम लिखौलथिन। गुणेश्वरपाठक बड़ सेहन्तासँ कुलीन सुन्नर कनियाँसँ बिआह करौलथिन। परन्तु किछु मासक बाद पटनेमे हाक-डाक पड़ि गेलनि। जेठ बेटाक निधनसँ पाठकजी जेना सुन्न भऽ गेलाह। विधवा नवकवेर पुतोहुकेँ अपना ओहि ठाम अनबाक साहस नहि कऽ सकलाह। नैहरमे पुतोहुकेँ मासे-मासे खर्च पठबैत रहलथिन जेना ओ अपन बेटाकेँ पठबैत छलथिन।

अमंगलक आशंकासँ आतंकित गुणेश्वरपाठक अपन छोट बालक किसुनकेँ पातिलक दीप जकाँ हवा-बसातक झोंकसँ बचा कऽ राखऽ लगलाह। खायब-पीयब, सूतब-ऊठब, चलब-फीरब, बजार-हाट, स्कूल-कालेज, संगी-साथी इत्यादिमे किसुनपर पाठकजीक सतत ध्यान रहैत छलनि। किसुन अत्यन्त दुलारू बनल जाथि आ अनेक बेर माता-पिताक विधि-निषेधक निर्देशक उल्लंघनो कऽ जाथि। कखनो पाठकजीकेँ किसुनक जिद्द आ लटारम्हक आगाँ झुकहु पड़नि।

किसुन फस्ट डिवीजनसँ मैट्रिक पास कयलनि। कालेजमे नाम लिखयबाक ओरियान करऽ लगलाह। मुदा कालेज छल हुनक आवाससँ दू कोसपर नगरक दोसर छोरपर। पाठकजीक इच्छा जे किसुन नाम नहि लिखाबथि। एतेक दूर एकसर कोना सबदिन कालेज जयताह किसुन। किसुन मुदा अड़ि गेलाह। पाठकजी एहि शर्त पर अनुमति देलथिन जे साइंस नहि पढ़ि आर्ट्स पढ़ी। से, किसुन मोन मारि कऽ आइ.ए. मे नाम लिखौलनि। आइ.ए.क बाद बी.ए.मे पढ़बामे फेर वैह झंझटि भेलनि।

किसुनकेँ निकटतम संगी छलथिन गोपाल। गोपालपर पाठकजीकेँ बड़ विश्वास छलनि। गोपाल पाठकजीकेँ मना कऽ राजी कयलनि। पाठकजी किसुनकेँ कहलथिन जे– औनर्स नहि राखी आ पासकोर्ससँ बी.ए. करी तखने आगाँ पढ़ि सकैत छी।' किसुन निरुपाय भऽ सैह कयलनि।

समस्या ठाढ़ भेल, जखन किसुन बी.ए. पास कयलनि। ओ एम्.ए.मे नाम लिखाबऽ चाहैत छलाह आ पाठकजी घनघोर विरोध करैत छलथिन। किसुन अपन संगी गोपालकेँ गोहरौलनि जे ओ माय-बाबूजीकेँ मनाबथि। गोपालक बात ओ सब मानि जयथिन।

गोपाल किसुनक माय आ पाठकजीकेँ किसुनक विचार कहलथिन। किसुनक माय कहलथिन- गोपाल बौआ ! बेटाकेँ पढ़ायब हमरा शुभ नहि भेल। हमर मन डेरायल अछि।'

गुणेश्वरपाठक कहलथिन – आब तँ हमर किसुने मात्र सन्तान छथि। बहुत पढ़ि

लेलनि । आगाँ कथी लय पढ़ताह ? अपना ततबा जथा-विभव छनि जे नीक जकाँ जीवन निर्वाह भऽ जयतनि ।'

पाठकजी व्यथित होइत कहलथिन - जेठ जनकेँ उच्च शिक्षा लय पटना पठौलियनि तँ घूमि कऽ नहि अयलाह आ ओही संग एकटा अबलाक वध भऽ गेल । आब किसुनकेँ हम अपनासँ परोक्षमे नहि रहऽ देबनि । हमरा बेटाकेँ बेसी पढ़ायब-लिखायब नहि धारैत अछि ।'

गोपालकेँ किछुने फुरयलैक जे की करी । ओ किसुनकेँ बिना किछु कहनहि अपन नाम एम्.ए.मे लिखयबालेल पटना चल गेल । ओतऽ गोटेक सप्ताह लागि गेलैक । ओमहरसँ आयल तँ पता लगलैक जे किसुन दुखित पड़ल छथि अस्पतालमे ।

गोपाल ओमहर पटना गेल आ एमहर किसुन चुपचाप मुजफ्फरपुर चल गेलाह एम्. ए.मे नाम लिखयबालेल । ओहि ठाम बरखामे खूब भिजलाह । जेना-तेना पड़ायल दरभंगाक अपन डेरापर अयलाह तँ धाहसँ लाह-बाह होइत छलाह । डाक्टर बजाओल गेल । डाक्टर पाठकजीकेँ विचार देलथिन जे किसुनकेँ तुरन्त अस्पतालमे भर्त्ती करा देल जाइन ।

गोपाल हहायल-फुहायल अस्पताल पहुँचल तँ देखलक, किसुनकेँ बेडपर अचेत पड़ल । एकदम निश्चेष्ट । दवाइ चलैत रहलनि । क्रमशः चेतना अयलनि । लोककेँ चीन्हऽ लगलथिन । परन्तु डाँड़सँ नीचाँक अंग एकदम निश्चेष्ट भऽ गेल छलनि । गोपालकेँ चिन्हैत देरी किसुनक आँखिसँ नोर ढबकऽ लगलनि । तहिना टघार चलऽ लगलनि पाठकजी आ हुनक पत्नीकेँ ।

गोपाल किसनुक हेतु दौड़-धूप करैत रहल । ओही क्रममे डाक्टरसँ भेट कयलनि । डाक्टर कहलकनि- पाठकजी बड़ सज्जन लोक छथि । दूरसँ सम्बन्धीयो होयताह । हुनका सब बात कहल नहि जा सकैत छनि । पेसेंटक हालति नीक नहि छनि । बहुत लम्बा समय धरि ट्रीटमेंट चललोपर ठीक भऽ सकथिन ताहिमे सन्देह अछि । मुदा ई बात पाठकजी आ हुनक पत्नीकेँ कहबनि तँ एकर आघात ओ सब सहि नहि सकताह । डिश्चार्जो नहि कऽ सकैत छियनि । तेँ नीक होयत जे जेनरल वार्डसँ हटा कऽ पेइंग वार्डमे रखियनि ।

गोपालकेँ डाक्टरक बात सूनि कऽ जेना चाउन्हि आबि गेलैक । ओ पीड़ासँ भरि गेल मुदा पाठकजीक सोझाँ-सोझी भेलापर एकदम सामान्य बनल रहल । पाठकजीसँ विचार-विमर्श कऽ किशुनकेँ पेइंगवार्डमे राखल गेलनि । गामसँ एकटा खवासिनी आ एकटा टेल्ह बजबाओल गेल । गुणेश्वरपाठक सरकारी आफिससँ लम्बा छुट्टी लऽ लेलनि । सेवा-निवृत्तियोमे तँ बेसी समय नहिएँ रहि गेल छलनि ।

पाठकजी गोपालकेँ पटना जाय क्लास करबाकलेल बड़ दबाब देलथिन । गोपल

अवसाद भरल मनसँ पटना गेल । मुदा दुर्गापूजाक छुट्टीमे आपस आबि फेर किसुनकेर सेवा आ पाठकजीक सहयोगमे लागि गेल । छुट्टी खतम भेलापर पटना जाय लागल तँ किसुन दुनू हाथसँ गोपालक गरदनि गसिया कऽ पकड़ि कानऽ लगलथिन । कनैत-कनैत कहलथिन- भाइ ! तोँ हमरा सँ जेठ छह । जेठ भाइ जकाँ हमरा लय करैत रहलाह । हम आब अथबल छी । नीक भऽ सकब तकर आशा नहि । डाक्टर जखन हमर आँखिक निचला कोसा चिआरि कऽ देखैत छथि तँ हम हुनका आँखिमे अपन मृत्युक स्पष्ट प्रतिबिम्ब देखैत छी । माय-बाबूकेँ सब दिन भार बनल रहलियनि आ आब सन्ताप बनि कऽ जिनगी भरि सतबैत रहबनि, जीबी चाहे मरी । तोँ हिनका सभक खोज करैत रहिहनु ।'

गोपालक कोँढ़ फाटऽ लगलैक । ओ जेना-तेना फेर पटना चल गेल । बड़ा दिनक छुट्टीमे ओहि दिन आयल आ किसुनसँ भेट करऽ गेल तँ बाटक कातमे ठाढ़ पाठकजीकेँ देखि ठमकि गेल ।

गुणेश्वरपाठक किसुनक विषयमे कहैत-कहैत अत्यन्त गह्वरित भऽ उठलाह - बाउ गोपाल ! हम पूर्व जन्ममे बड़ पाप कयने छलहुँ । गायक घरमे आगि लगा देने छल होयबैक । तकरे फल भेटि रहल अछि । किसुनक पूर्व जन्मक हम रिनियाँ छिऐनि तेँ दुनू बेकती हुनकर गोँहड़ि कऽ कऽ रीन सधा रहल छिऐनि ।'

-एना निराश नहि होइअउ । ठीक भऽ जयताह किसुन ।' सान्त्वना दैत गोपाल बाजल, यद्यपि ओ जनैत छल जे ओ एकदम फूसि कहि रहल छलनि ।

पाठकजी गोपालक बात कटैत बजलाह- की ठीक होयताह ! दिनोदिन अंग सभक संवेदन-शून्यता बढ़िते जा रहल छनि । आब तँ दुनू हाथ आ माथ मात्र डोला पबैत छथि । बजैत-बजैत बोलो लटपटा जाइत छनि । देहमे गर्मी नहि रहैत छनि । लहसुन तेलसँ लऽ कऽ आयुर्वेदिक तेल आ एलोपैथिक वाइंटमेंटोसँ मालिस करैत छिऐनि, मुदा देहमे गर्मी अबिते ने छनि ।' एतबा कहैत-कहैत पाठकजी अबैत-जाइत लोक आ सामनेक दोकान दिस ताकऽ लगलाह ।

गोपाल उत्सुकतासँ पुछलकनि- एखन एहि ठाम किएक ठाढ़ छी ?'

-अहाँ किसुन लग चलू । ओ अहाँक बाट तकैत होयताह । काल्हिएसँ पुछारी करैत छलाह जे बड़ा दिनक छुट्टीमे गोपाल आयल होयताह ।'

- मुदा अहाँ एहि ठाम की करब ? जे काज हो से कहू । हम कयने अबै छी' अहाँ चलू तावत ।' गोपाल बाजल ।

पाठकजी धर्मसंकटमे पड़ि गेलाह जेना । ओ संकुचित होइत बजलाह - की कहैत छी ? खवासिनी आ एकटा टेल्ह छल से चल गेल । एहि ठाम दुइए गोटे छी - हम आ

अहाँक काकी । आइ डाक्टर कहलनि जे साँझ-भिनसर दूटा कऽ अण्डा हिनका देल करियनु जाहिसँ देहमे गर्मी आ शक्ति अओतनि । तेँ अपने अयलहुँ । साधंस नहि भऽ रहल अछि जे दोकानपर जाकऽ अंडा कीनी आ हाथसँ छूबी । कोनो चिन्हार लोक देखत तँ की सोचत ? एहि ठाम ठाढ़ छलहुँ जे कनेक और झोलफल होयतै आ लोक पतरयतै तँ सभक आँखि बचा कऽ कीनि लेब अण्डा ।'

गोपालक छाती धक् दऽ रहि गेलैक । ओ जीह कूचि लेलक – जे लहसुनक गन्धसँ डेरा छोड़ि दैत छलाह, मुर्गीक अण्डाक उपयोग कोना कऽ सकताह !' ओ सहज भावसँ बाजल- एहिमे कोन बात छै । अहाँ चलू । हम लेने अबैत छी । आब ई भार हमरापर रहल ।'

–नहि बाउ ! काज ई आब हमरहि करबाक अछि । अहाँ तँ फेर चल जायब तखन फेर के करत ? आइ जे साहस कऽ लेब तँ आगाँ अपन नियम-निष्ठा आ लोक-लाजक धाख छूटि जायत । भने अहाँ भरसाहाक रूपमे संग रहब ।'

आ गुणेश्वरपाठक गोपालक हाथ पकड़ि मुर्गीक अण्डावला दोकान दिस आस्ते-आस्ते बढ़ऽ लगलाह ।

[लेखन- 29 दिसम्बर 2000, प्रकाशन- रचना]



मुट्ठीमे बन्द

एक सत्तरि वर्षक बूढ़ बाटपर चलैत-चलैत सहसा रूकि गेल आ नीचाँ झुकि किछु ताकऽ लागल ।

बारह बजेक कड़कड़ौआ रौद । बाटपरक पीच सब पघीलि कऽ पच-पच करैत छलैक । कचहरी, स्कूल सबसँ छुट्टी पाबि लोक सब तेजीसँ पड़ायल जा रहल छल । साइकिल, रिक्सा, मोटरसाइकिल, टेम्पो, सब दुनू दिशामे भागैत जा रहल छल । ककरो कोम्हरो तकबाक फुरसति नहि छलैक । परन्तु नहूँ-नहूँ सड़कपर सवारीक चलनाइ कम भेल जा रहल छलैक ।

ओ बूढ़ व्यक्ति छल मैल ठेँठ धोती पहिरने, मैले सन गोलगलावला गंजी पहिरने । पैरमे जूता नहि छलैक । छलैक काँख तरमे एकटा मोटरी । सवारी सभक आवागमनक कारणेँ सड़कक किनार बाटे चल जा रहल छल । मुदा जखन सवारीक आवागमन किछु कम भेलैक तँ अनायासे फेर बीच सड़कपर चल आयल छल । चलैत-चलैत जखन जिला स्कूल लग आयल तँ सहसा ठिठकि कऽ ठाढ़ भऽ गेल । गहिंकी नजरिसँ नीचाँ बाटपर किछु ताकऽ लागल । अकस्मात् कोनो छोट सन वस्तुपर नजरि गेलैक । ओ झूकि कऽ उठाबऽ लागल ।

ठीक तखने एक साइकिल आबि कऽ ओकरा पाछाँमे रुकलैक । साइकिलपर पचीस-तीस वर्षक एकटा युवक छल, पैजामा आ कुर्त्ता पहिरने । ओ साइकिलपर बैसल एकटा पैर पैडिलपर रखने आ दोसर धरतीपर टेकने साइकिल ठाढ़ कयने छल । ओ बूढ़ व्यक्ति दिस कड़ा नजरि कयने तकैत रोआबसँ कहलकैक- हौ, बूढ़ा की उठबै छह ? लाबह, हमर खसि पड़ल छल । लाबह, जल्दी लाबह ।'

बूढ़ा तावत वस्तु उठा कऽ मुट्ठी बान्हि लेने छल । पैजामावलाक बात सूनि जावत ओ डाँड़ सोझ कऽ ओकरा दिस तकितय तावत चाहक दोकानपर बैसल एकटा दोसर व्यक्ति ओहि ठाम दौड़ि कऽ पहुँचि गेल । ओ चाहक दोकानपर चाह पिबैत निरुद्देश्य बाट दिस तकैत छल तँ ओहि बूढ़ाकेँ अबैत आ निहुरि कऽ किछु उठबैत देखने छलैक । तखने ओ चाह पिउनाइ छोड़ि कऽ दौड़ल छल । ओ बूढ़ा लगमे आबि आगाँमे ठाढ़ होइत बाजल- हए बुढ़बा ! एखने हम जाइत छलहुँ तँ हमरा जेबीसँ रुपैया खसि पड़ल छल । ओ रुपैया हमर छी, लाबह । हमरा दऽ दैह ।'

पैजामावला जोरसँ ओकरा डँटैत कहलकैक- वाह साहब वाह ! ऊ हमारा गिरा था । हमारा है ।'

-हौ बाबू ! हम तँ एखने एहि ठाम दऽ कऽ गेलहुँ अछि चाह पीबऽ । हम दोकानपर जेबी तकलहुँ तँ हमर रुपैया नहि छल । ई हमर रुपैया थीक ।'

बूढ़ा ताबत सोझ भऽ कऽ ठाढ़ भऽ गेल । मुट्ठीकेँ कसि कऽ बन्हने आगाँ-पाछाँ ठाढ़ दुहू व्यक्ति दिस बकर-बकर ताकऽ लागल ।

एकटा तेसर व्यक्ति तखने आबि कऽ रूकि कऽ तीनूकेँ देखऽ लागल छल । ओहो दूरसँ बूढ़ाकेँ झुकि कऽ किछु उठबैत देखने छलैक । लगमे आबि परिस्थितिक थाह लैत ओ जोरसँ बाजल- हओ ! हमर सोनक औंठी एही लग-पासमे खसि पड़ल छल कतहु । आगाँ जा कऽ आङुरपर नजरि गेल, आहि रे बा ! औंठी तँ खसि पड़ल । झन्न दऽ बजलै से बुझलिऐ मुदा ई नहि बुझलिऐ जे हमरे औंठी खसल अछि । वैह तकैत आबि रहल छी ।' फेर बूढ़ाकेँ सम्बोधित करैत बाजल- हौ ! हमर औंठी थीक, लाबह, लाबह । एमहर लाबह ।'

आब बाट चलैत आरो लोक सब ओहि ठाम आबि कऽ ठाढ़ होइत जा रहल छल । चाहक दोकानपर, पानक दोकानपर, साइकिल फीटर लग जे सब छल सेहो सब सहटि-सहटि कऽ आबि गेल छल । बीच बाटपर बेस मजमा लागि गेल । आगाँ-पाछाँ रिक्सा, टमटम, साइकिल, स्कूटर टेम्पो इत्यादि ठाढ़ भऽ गेल । बड़ी दूर धरि सड़क जाम भऽ गेलैक । सब उत्सुकतासँ भीड़केँ देखि रहल छल । पछिला भागमे चर्चा पसरि गेलैक जे कोनो दुर्घटना भऽ गेलैक तेँ भीड़ लागल छैक । केओ बजैत छल जे- एकटा बूढ़ लोककेँ टेम्पोसँ ठोकर लागि गेलैक से हुक-हुक कऽ रहल छैक ।' केओ कहैत छल जे- टेम्पो पकड़ा गेलैक अछि । टेम्पो ड्राइवरकेँ लोक बड़ मारि मारलकैक अछि ।'

भीड़ तेहन घनघर भऽ गेल जे ओहिमे पैसब कठिन छलैक । तैयो एकटा शुभ्र-शाभ्र सन व्यक्ति लोकसबकेँ बिहियबैत पैसि गेल आ बुढ़बाक हाथ पकड़ि कऽ ओकर मुट्ठी खोलबाक चेष्टा करऽ लागल । भीड़ेमेसँ दोसर व्यक्ति ओकरा रोकैत बाजल-वाह साहेब ! ई की करै छी । अहाँ जबरदस्ती किएक करैत छिऐ !'

ओ व्यक्ति बाजल- हमर वाइफक गरदनिसँ चेनक लाकेट खसि पड़लनि अछि । बुढ़बाक हाथमे हमरे लाकेट अछि ।'

बूढ़ व्यक्तिकेँ जेना बघजर लागि गेल छलैक । ओकर मुट्ठी और कसा गेल छलैक, जेना मरमुट्ठ लागि गेल होइक । तखने एकटा और दावेदार आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल । ओकर दाबा छलैक जे ओकरा जेबीमे एकटा कीमती नग छलैक से एखने एही

लग-पासमे खसि पड़लैक । सम्भवतः बुढ़बाकेँ वैह नग भेटलैक अछि । ओ ओकरा आपस भऽ जयबाक चाही ।

जेना मऽरपर चारू कातसँ गिद्ध खसैत छैक, तहिना चारू कातसँ अनेक व्यक्ति बुढ़बाक मुट्ठीमे बन्द वस्तुकेँ कोनहुना लूझि लेबाक लेल आतुर छल । जेना कटल गुड्डी केओ लूटैत अछि आ ओकरा दोसर आ फेर दोसरक हाथसँ तेसर लूटि लैत छैक तेहने सन स्थिति छल । मुट्ठीमे बुढ़बा की रखने छल से रहस्य बनि गेल छलैक । मुट्ठी तँ मुट्ठी छलैक, ओहिमे जाँत-चकरी तँ अँटि नहि सकैत छलैक । अवश्ये कोनो छोट मुदा मूल्यवान वस्तु ओकर मुट्ठीमे बन्द छलैक । चारूकात भनभनाहटि चलि रहल छलैक -बुढ़बाक मुट्ठीमे नमरी छैक ।' दोसरक कथन छलैक -नहि, नहि सोनक कोनो वस्तु छैक । औंठी, लाकेट, चेन, बाली, कनपासा वा एहने कोनो वस्तु ।' तेसर व्यक्तिक विचार छलैक -नहि नहि कोनो हीरा-मोती सन कीमती चीज छैक ।' जतेक लोक, जतेक मुह, ततेक रंगक अनुमान सब पसरल जा रहल छलैक ।

भीड़मेसँ एकटा चतुर सन व्यक्ति बुढ़बा लग आबि ओकर डेन पकड़ि कऽ एक दिस लऽ जयबाक चेष्टा करैत बाजल - बेकारमे अहाँ सभ एकटा बूढ़ व्यक्तिकेँ साँसतमे देने छिऐक । बाटपर जँ कोनो वस्तु पड़ल भेटलैक तँ अन्हागाहिस वस्तुपर एकर हक छै ।' ओ सहानुभूतिपूर्वक बूढ़ाकेँ कहलकैक - चलू बाबा ।'

आन लोककेँ बूझि पड़लैक जे ई व्यक्ति बुढ़बाकेँ एकान्तमे लऽ जा कऽ ओकरासँ मुट्ठीमे बन्द वस्तुकेँ झीटऽ चाहैत अछि । चारू कातसँ एकेबेर विरोधक स्वर उठऽ लगलैक । विशेष कऽ दावेदार सब चारूकातसँ बुढ़बाकेँ नोंचि लियऽ चाहैत छल । ओ सब सहानुभूति देनिहार व्यक्तिकेँ ठेलि कऽ हटा देलकैक आ बुढ़बाकेँ घेरि लेलकैक । सब ओकर मुट्ठीकेँ गसिया कऽ पकड़ि लेलकैक ।

रौदक गर्मीसँ आउल-बाउल, पसेनासँ भीजल रहलोपर लोक टसकबाक नाम नहि लऽ रहल छल । सड़कपर जाम सवारी सभक धारी ओमहर सिनेमा हौल धरि तथा एमहर कोतवाली चौक धरि पहुँचि गेलैक । चौकपर ठाढ़ ट्राफिक पुलिस-सड़क जाम होयबाक कारण जनबाकलेल दौड़ल । ओ भीड़केँ हटो, हटो कहैत बीह फाड़ि कऽ बीचमे पहुँचि गेल । मुदा ओकरा किछु कारणक थाह नहि लगलैक । ओ ट्राफिक पुलिस बुढ़बाकेँ पुछलकैक -क्या हुआ है बूढ़ा बाबा ?'

बूढ़ाकेँ जेना आब जानमे जान अयलैक । ओ बजबाक चेष्टा कयलक-सरकार हम गरीबलोक गंगा-कमला जाइक औकाति नै, माँटि तरमे गाड़ि देबै तेँ...।'

बुढ़बा मुट्ठी खोलि देखाबऽ चाहलक मुदा ओकर मुट्ठी दाबेदार सब पकड़ने छलैक तेँ खोलि नहि सकल । दाबेदार सब एकेबेर अपन अपन दावीक वस्तु सभक नाम गनबऽ लागल ।

ट्राफिक पुलिस फेरमे पड़ि गेल । ओ बाजल– बूढ़ाक मुट्ठीमे बन्द तँ कोनो एकेटा चीज होयतैक आ अहाँ सब दाबी करैत छी रुपैया, औंठी, चेन, लाकेट, नग । सब चीज तँ एहि मुट्ठीमे नहि भऽ सकैत अछि । किछु लोक बाजऽ लागल– सिपाहीजी ! एहि ठाम बुढ़बाक मुट्ठी नहि खोलू, ने तँ खूना–खतरी भऽ जायत । एकरा थाना, ने तँ कोतवालीमे लऽ जा कऽ मुट्ठीमे बन्द वस्तुकेँ जमा करा लियऽ ।'

दाबीवला सब हल्ला कयलक– नहि, नहि ! हमर चीज हमरा भेटि जयबाक चाही ।'

सिपाही पहिने दावेदार सबकेँ डँटलक– बूढ़ाक हाथ किएक पकड़ने छिऐक ? बूढ़ा पड़ा तँ नहि रहल अछि ? फेर चारू कात ताकि कऽ न्यायाधीश जकाँ बाजल– देखू, एहि ठाम मुट्ठीमे बन्द चीजक देखार भेलासँ निर्णय करब कठिन भऽ जायत जे एकर असली हकदार के अछि । तेँ एकरा कोतवालीमे जमा कराओल जायत । अहाँ सब ओही ठामसँ अपन–अपन सबूत दऽ कऽ चीज बरामद कऽ लियऽ ।' ई कहि कऽ ओ बूढ़ाकेँ कहलकैक– चलिये बाबा ! कोतवाली चलिये । वहींपर बयान देकर चीज जमा करा दीजिये ।'

आब बुढ़बा घबड़ा गेल । ओ गिड़गिड़ाइत बाजल– सरकार हम तँ नाहक मारल जा रहल छी । ई जतेक दावी कयनिहार सब छथि, से सब उपरौँझ कऽ कऽ मुल्लहकेँ धन खयनिहार छथि । अहाँ अपनहि देखि लियऽ हमर मुट्ठीक वस्तु आ एहिमेसँ जनिका खगता होनि तनिका दऽ दियौन । एहि लय मारि किएक करताह ?'

बूढ़ा सिपाहीक आगूमे अपन बान्हल मुट्ठी खोलि देलक । सिपाही मुट्ठीमे बन्द वस्तुकेँ बुढ़बाक तरहत्थीपर देखलक । नाम, बेडौल, पिरछौन सन वस्तु ! ओ जिज्ञासा कयलकैक– ई की थीक ?'

–सरकार ई थिक हमर अगिला दाँत । अचानक मुहसँ टूटि कऽ उछटि कऽ खसि पड़ल । हम एकरा ताकि कऽ उठा लेलहुँ जे जँ गंगा–कमलामे नहि प्रवाह कयल होयत तँ माँटि तरमे गाड़ि देबैक ।' बुढ़बाक ई बात सूनि सिपाहीकेँ अद्‌भुत लगलैक, ओ दाबी कयनिहार सबकेँ व्यंग्यपूर्वक कहलकैक जे- कहाँ छी औंठी, नग आ लाकेटवला बाबूलोकनि । बूढ़ा बाबाक ई दाँत जे लेबऽ चाही से लऽ सकैत छी आ सड़कपरसँ जाम हटाउ ।'

दाबी कयनिहार सब अपन–अपन सन मुँह लेने सहटऽ लागल । सिपाही भीड़केँ ठेलि–ठेलि कऽ हटबऽ लागल । बुढ़बा आगाँ बढ़ि भीड़मे मिझरा गेल ।

[प्रकाशन- चेतना, अक्टूबर 1992]



फड़िच्छ भऽ गेल छलै

– रे, जल्दी जल्दी माल आन । ठीकसँ डोरि लगा ।' किसुन मिस्तिरी एक बेर सौँसे छतक सेटरिङकेँ आ ओहिपर बान्हल लोहाक छड़केँ गँहिकी नजरिसँ देखि कऽ जोरसँ बाजल । रेजा सब हड़बड़ा कऽ तगारी सरियाबऽ लागल । सिमटी आ गिट्टी मिलौनिहारक हाथ तेजीसँ चलऽ लगलैक । तगारी सबमे माल बोझल जाय लगलैक । जऽन सब डोरि लगयबाकलेल धक्कम-धुक्की करऽ लागल । सब एहन स्थानक गऽर धराबऽ लागल, जाहि ठाम कम परिश्रम पड़ैक । छतक ढलैयामे दुइ गोट स्थान बड़ भिड़हगर-पहिल, जाहि ठाम माल मिलौल जाइत छैक आ दोसर सीढ़ीपर । दुनू ठाम बेसी काल निहुरऽ पड़ैत छैक । तेँ डाँड़पर बेसी भीड़ पड़ैत छैक । तेँ जऽन ओहि ठाम जाइसँ छीह कटैत रहैत अछि ।

किसुन हेड मिस्तिरी छल तेँ ओकर हुकुम आनो मिस्तिरी सबकेँ मानऽ पड़ैत छलैक, तखन जऽन आ रेजाक के कहय । किसुन मानलो जाइत छल तेज मिस्तिरी । हाथ एकदम झाड़ल छलैक । बयस कोनो बेसी नहिं मुदा तैयो लोक ओस्ताद कहऽ लागल छलैक । एतबय बयसमे कयटा बड़कासँ बड़का मकान, नीकसँ नीक डिजाइनक मकान बना चुकल छल । छातक ढलैया कऽ चुकल छल । कोनोमे साँस नहि भेलैक, दरारि नहि भेलैक, चहकलैक नहि । कोनो काजकेँ जखन ओ हाथमे लैत छल तँ ओहिमे अपन सब इलिम लगा दैत छल । तेँ राज सब ओकर लोहा मानैत छलै । कतेको राजकेँ, रेजाकेँ, जन-मजूरकेँ काज दिया दैत छल । तेँ ओ सब किसुनक हुकुमपर जी हजूर भेल रहैत छलैक ।

ओहि दिन सरकारी क्वाटरक छातक ढलैया छलैक । विशाल मकानक विशाल छात । एके दिनमे सब पूरा भऽ जयबाक चाही, भने भरि दिन, भरि राति किएक ने लागि जाउक । तेँ अनदिना रोजसँ बेसी रोज ओहि दिनक । जन-मजूरक संख्या सय सैकड़ामे । तेँ हल्ला, धक्कम-धुक्का आ कखनो गारा-गारी भऽ जायब साधारण बात । मुदा किसुनक आवाज सुनैत देरी सब सकदम्म भऽ जाइत छल । कारण ककरो, कखनो ओ काज छोड़ा कऽ बैला दऽ सकैत छल । किसुनकेँ तामस बड़ जल्दी भऽ जाइत छलैक । एक बेर कोनो जोड़ैया करैत छल । जोड़ैयामे गिलाबा रहौ वा सिमटी-बालु, माल खूब मीलल रहक चाही ने तँ करनी चलबे ने करैत छैक । से किसुनक हाथे रुकि-रुकि जाइत छलैक । ई ओकरा सहाज नहि । ओ दू-तीन बेर माल ठीक करबाकलेल कहलकैक आ

तैयो ठीक नहि भेलैक तँ माल बनौनिहारपर ततेक जोरसँ करनी फेकलकैक जे ओकरा पीठेपर जा कऽ गथि गेलैक ।

हँ, तँ जऽनमे छौंड़ा, जुआन आ अधोखापुरुष सब छलैक तँ मौगियो सब छलैक, छौंड़ी, जुआनि आ अधबयसाहु । डोरि लगबामे देरी होइत देखि किसुन गारि पढ़ैत बड़ी जोरसँ गरजल आ सब जेना एकेबेर सरियाम जकाँ भऽ गेल । चनरमा आ ओकरासँ सटिकऽ कयटा मौगी पाँती लगा कऽ ठाढ़ि भऽ गेलि । मुदा चनरमाक मोन किसुनक अवाज सुनि जेना अकबका जकाँ गेलैक । पैर थकमका जकाँ गेलैक । काज करबामे मोन जेना तत-मत करऽ लागल होइक । मुदा लागल रोजी छोड़लो ने जा सकैत छल । अनको सभक एहने हाल छलैक । दोसरो ठाम तँ किसुनमा बजाओल जाइत छल । हरल-खगल लोक कतऽ कतऽ काज छोड़ितय । चनरमोक रोजी तँ छलैक ईंट उभनाइ, गिलेबा उठौनाइ, पानि पटौनाइ, कटनी-खोटनी करब, खेत कमायब आ एहिना भाँति-भाँतिक काज ।

किसुनक ठेहापर पहिले बेर तँ आइलि छलि चनरमा, सेहो अनजानेमे । टोल पड़ोसक लोकक झुंड चलल छलैक तँ ओहो संग भऽ गेलि छलि । जैह किछु आमद भऽ जैतैक ।

किसुन सब जोगाड़केँ अपने जाँचि-भेआरि लेलक । सब ठीक-ठाक छलैक से बूझि ओभरसीयर साहेब लग जा कऽ बाजल-हाकिम सब तैयार भऽ गेल । आब अपने देखिकऽ हुकुम दियौ हजूर ।

-तोँ देखिए लेलहक तँ हम की देखिऐक होअह, सुरू करह ।' ओभरसियर साहेब बजलाह ।

-जाबत तपाओन नहि हेतै तावत काज कोना सुरू हेतै ?' किसुन हँसैत बाजल ।

किसुन अपन ओस्ताद भोगीलालक कहल ई गप्प कहियो ने बिसरैत छल जे -कोनोटा काज अपना कयने नहि होइछै । देवता-बढ़मक पूजा कऽ कऽ करनी-बसुली धरिहेँ । बिसकरमा, हलुमानजी आ गनेसजीक परसादीसँ जन-मजूरकेँ मुँह मिट्ठा कऽ ओकरासँ काज करबिहेँ ।

भोगीलालक कहब ओ बिसरितय कोना कऽ ? किसुन जे किछु छल से भोगिएलालक असिरबादे । भोगीलाल नामी राज । इलाकामे दोसर राज छलैको नहि । पक्का मकानो तँ एतेक नहि बनैत छलैक । बाबू-बबुआन, रईस-जमिन्दार-यैह सब तँ मकान बनबबैत छल । कहियो काल कोनो-कोनो गाममे मन्दिर बनैत छलैक ईंटक । कहियो काल सरकारी आ महराजी मकान बनैत छलैक । सबठाम भोगीलालक खोज होइत छलैक ।

किसुन जखन दस-बारह बरखक रहय तखने बाप मरि गेल रहैक । ओकर बाप भोगीलालेक संग रेजामे खटैत रहैक । भोगीलालक एकदमे विश्वस्त रेजा आ मीता । से एक दिन किसुनक माय भोगीलालक ओतऽ किसुनकेँ लेने गेलैक आ कहलकैक जे अइ छौड़ाकेँ अपने संग राखि लेथुन । छोट-मोट काज करा कऽ किछु-कऽ दिया दिहऽथिन । ने तँ खाइ बेगर हमरासँ पहिने यैह मरि जेतै ।'

भोगीलाल किसुनकेँ अपना संग लगा लेलकैक । किछु बरख रेजामे काज करबैत रहलैक आ फेर एक दिन ओकरा अपनेसँ करनी धरा देलकैक । अपने पाइसँ करनी, बसुली, पाटा, रुस्सा, सूता-साहुल कीनि कऽ किसुनकेँ दैत कहलकैक- ले बेटा ! औजार तँ दऽ देलियौ, इलिमो हम तेहन देबौ जे जिनगीमे तोहर हाथ क्यौ ने पकड़तौ ।'

भोगीलाल किसुनकेँ अपन जोड़ीदार जकाँ राखऽ लगलैक । पहिने एक रद्दा अपने जोड़य तँ दोसर रद्दा किसुनसँ जोड़बाबय । जोड़ाइ केर एक-एकटा चालि ओकरा सिखबैक । जंजीरा चालि, तोड़िया-पट्टी चालि । कोन ठाम अद्धा ईंट लगतै, कोन ठाम तिनपै लगतै । खिलानक जोड़ाइ कोना होइत छैक, तँ रदाबी कोना जोड़ल जाइत छैक । मन्दिरक गुम्मज-कलस कोना बनैत छैक, तँ महजीद कोना बनाबी- आ एहिना कतोक प्रकारक कारीगरी सिखा कऽ तालिम कऽ देलकैक किसुनके । भोगीलाल बहुतोकेँ राजक काज सिखौलक मुदा जे हुनर ओ किसुनकेँ सिखा देलकैक से केओ अपन बेटोकेँ नहि सिखा सकैत छलैक ।

भोगीलालकेँ अपना बेटा छलैक कहाँ ? ओहो तँ भाग्येक मारल छल । बियाह कयलक कयटा ने, मुदा छल ओ बहुखौक आ बहुबैलौन । मायबाप बच्चामे बियाह करा देने रहैक से जुआन भेलापर मरि गेलैक । अपनेसँ जे बियाह कयलक सेहो अभोग भऽ गेलैक । तेसर बेर एकटा मौगीसँ सगाइ कयलक तँ ओ पड़ाइए गेलैक । एकटा चारिम मौगिकेँ सिनुरा कऽ घर अनलक । थोड़े समयपर फेर ओकर घर बसलैक । ओकरासँ एकटा बेटी भेलैक । चारि-पाँच बरखक जखन बेटी भेलैक तँ ओहो मौगी बेटीकेँ भोगीक भरोसे छोड़ि दोसर मरदसँ सम्बन्ध कऽ चल गेलैक । भोगी फेर एकसर भऽ गेल । तखन ओकरा दृष्टिपर आयल रहैक ओकर एकटा रेजाक विधवा पत्नी, किसुनक माय ।

भोगीलाल कयबेर घुमा-फिरा कऽ किसुनक मायकेँ कहने रहैक, अपना संग सम्बन्ध करबाकलेल । किसुनक मायकेँ तखन किछु ने फुरल रहैक । ओ भोगीलालकेँ कहने रहैक दबले जीहे जे- एहि छौँड़ाकेँ पछुलगुआ बनाकऽ रखबै से लोक की कहतै ?'

भोगीलाल अपन उजड़ल घरकेँ बसाबऽ चाहलक । अपन मइटूगर बेटीकेँ माय दियऽ चाहलक । अवलम्ब बिना बेलल्ला होइत किसुनक मायक धोएल सिउँथिकेँ सिनुराबऽ चाहलक । बपटूगर किसुनमाकेँ नहि बाप तँ कठबाप देबऽ चाहलक । मुदा से

सब किछु ने भऽ सकलैक आ ओ मन्हुआयल चल गेल अपन गामपर । तकर बादे किसुनक माय किसुनकेँ लऽ कऽ भोगीलालक लग आयल रहैक आ, भोगीलाल किसुनकेँ बेटा जकाँ स्वीकार कऽ लेने रहैक । जखन ओ भोगीलालक बेटा जकाँ भऽ गेलैक तँ रेजा जकाँ कोना खटैत रहितैक । किसुन भऽ गेल भोगीलालक चेला । ओस्ताद भोगीलाल आ शागिर्द किसुन । भोगीलाल ओकरा ततबा विद्या दऽ देलकैक जे आब ओ अपनहि ओस्ताद भऽ गेल ।

भोगीलाल किसुनकेँ दैत-दैत अपन बेटी पर्यन्त दऽ देलकैक । किसुन आब सोझे किसुन नहि भोगीलालक मेहमान भऽ गेलैक । किसुनक मायक लगमे जा कऽ जखन भोगीलाल ई प्रस्ताव पहिल बेर देने रहैक, तँ किसुनक माय अकचका जकाँ गेलि रहय । कनेक मरोत काढि कऽ झटसँ टाटक अढ़ऽ भऽ गेलि रहय आ हँसैत बाजलि रहय - तँ हमरा समधिन बनाइए लेलथिन ने ।'

- ई हमरा घर नहि अइलीह तँ हमहीँ हिनका ओतऽ चल अयलियनि । आब की विचार छनि ?'

किसुन मुदा अपन ओस्तादक संग इन्साफ नहि कऽ सकल, से ओकरा मोनमे उपकैत छैक वा नहि से पता नहि ।

किसुन कने क्रोधी स्वभावक भऽ गेल छल । मान-सम्मानक भाव बेसी जागि गेल छलैक । अहंकारो भेल जाइत छलैक । ओ जखन अपन घरवालीकेँ गौना करा कऽ अनलक तँ फेर ओकरा नैहर जाय देबामे हेठी बुझाय लगलैक । नैहरमे जायत तँ ओतऽ पानि भरऽ जायत, घास काटऽ जायत, गाय चराबऽ जायत, पात खरड़ऽ जायत । लोक देखतै तँ की कहतै ? कहतै जे किसुनमाक बोहु पात खरड़ै छै, घास छिलै छै । हमरो किछु इज्जति अछि । हमरो मान-सम्मान अछि । आ अपन ओस्ताद माने ससुर भोगीलालसँ जेना ओकर मोन उचटि गेलैक ।

भोगीलाल बेटीक चल गेलासँ एकदम एकसरुआ भऽ गेल । शरीर कमजोर होइत गेलैक । बयसो तँ बहुत भऽ गेल छलैक । कमा-खटा नहि होइत छलैक आ एही क्रममे असक्क पड़ि गेल । बेटीकेँ समाद देलक, जमायकेँ समाद देलक । ने किसुन देखऽ अयलैक, ने बेटीकेँ आबऽ देलकैक । बेटी कानि-खीजि कऽ जोर जबरदस्तीसँ अपन नैहर चल अयलैक ।

भोगीलालकेँ असरा आब बेटिएक छलैक । बेटी कहलकैक- बाबू तोँ चिन्ता किए करै छह ? तोरा बेटा नै छह तँ हम बेटा जकाँ पालन करबह ।'

भोगीलाल एकटा गाय पोसने छल । बेटी ओकरे पोसि कऽ बापक गुजर कराबऽ

लागलि । किसुनकेँ कतेक गोटे आबि-आबि कऽ कहैक जे तोरा बोहुकेँ घास छिलैत देखलियौ, तँ पात खरड़ैत देखलियौ । किसुनक टोल ओ भोगीलालक टोलक बीचमे बाधक एक छोट फाँक सन पाँतर । एहि टोलक बात ओहि टोल जाइत देरी नहि लगैक । स्वयं किसुन सेहो विदा भेल सासुर जे जेना-तेना अपना घरवालीके लैए आनी, बुढ़बा अपन मरत तँ मरओ ।

ओ बाध जखन पार करैत छल तँ दूरेसँ देखलक एकटा मौगीकेँ घास छीलैत आ कनेक हटि कऽ एकटा गाय चरैत । किसुनकेँ चिन्हबामे भाङठ नहि रहलैक । किसुन तमतमायले पहुँचल सासुर । भोगीलाल खाटपर पड़ल छल । पाछासँ ओकर घरवाली माथपर छिट्टामे घास लेने गाय हकने पहुँचलैक । किसुन ओकरा बेतुकारे गारि पढ़ऽ लगलैक । भोगीलाल उठिकऽ किछु जानऽ चाहलक मुदा किसुन ई कहैत विदा भऽ गेल रहय– गे बेहाया मौगी ! अपन बापे लग रह । हमरासँ तोरा कोनो ताल्लुक नहि ।'

दुनू बाप-बेटी किसुन दिस तकिते रहि गेल ।

से ओस्ताद किसुन ढलैयाक हेडमिस्तिरीक रूपमे काज करैत छल । मुदा ओ बेर-बेर ओहि ठाम आबि जाइत छलि जाहि ठाम तगारीमे माल बोझल जाइत छल आ मौगी सभ माथपर तगारी उठा-उठा कऽ लऽ जाइत छलि । भड़कछ भिड़ने आँचरकेँ डाँड़मे खोसने एकटा स्वस्थ सोंटल देहवाली युवतीपर जा कऽ अटकि जाइत छलैक किसुनकेर आँखि । जखन युवतीक आँखि किसुनपर जाइत छलैक तँ जेना ओ सहमि जाइत छलि । पैरक गति मन्द भऽ जाइत छलैक । तखन ओकर आगाँ ठाढ़ि दोसर मौगी जोरसँ सोर पाड़ि दैत छलै- गय चनरमा ! देरी भेलौ, जल्दी ला ने तऽ मिस्तिरीक हाथ खाली भऽ जेतै तऽ गारी देतौ । मुहझौंसा सबके निर्घिन गारी पढैत जीहो ने गलि जाइ छै ।'

किसुनो अपना कानसँ कय बेर गारि सुनने छलैक । कय बेर बोली दैत से सुनलकैक - खूब ताजा माल छौ !' ताजा मालक संकेत चनरमा दिस रहैत छलैक, से बुझबामे भाङठ नहि छलैक । एक खेप तगारी लऽ जाइमे विलम्ब भेलैक । भाराक नीचामे ठाढ एकटा रेजा चनरमाक माथपरसँ झपटि कऽ तगारी लैत डाँटि देलकैक- झटकारि कऽ किए ने अनै छेँ गए - कहैत एकटा अश्लील विशेषण, वाक्यक अन्तमे जोड़ि देलकैक ।

किसुन ई गारि सुनलक । ओ सहटि कऽ दोसर दिस चल गेल । फेर ऊपरमे ढलाइ देखऽ चल गेल । दर्जनो राज लोहाक छड़सँ सीमेन्ट-कंकरीटकेँ गोजि-गोजि कऽ मिला रहल छल । किसुन निर्देश देलकैक- अए, ओमहर पाटा चला आ लेबल कऽ ढाल ठीक कर । बीचमे लहान भऽ गेलौ । ओहिमे माल दही ।'

-दही रे, जल्दी माल दही, ओस्ताद जतऽ कहै छौ ।' एकटा राज हँसैत जोरसँ कहलकैक ।

कि दोसर राज टीपि देलकैक– रे, माल तँ बड़ बीटर बनल हइ, ओस्तादकेँ पसिन्न पड़ै तब न ।'

किसुन जेना बौखला गेल । भीतरे भीतर गुम्हड़ि कऽ रहि गेल । ओ दोसर दिस जाय लागल तँ एकटा राज उठि कऽ ठाढ़ होइत कहलकैक– लाबऽ ओस्ताद । एकटा बीड़ी पिआबऽ ।'

किसुन जेबीसँ बीड़ी–सलाइ निकालि ओकरा दिस बढ़ा देलकैक । ओ मुँहमे बीड़ी लगा, सलाइ बारि लेसऽ लागल । बीड़ी लेसैत काल ओ किसुनकेँ कने मुस्कियाइत कहलकैक–की हो ओस्ताद ! तोरे आइ ओइ छौंड़िया के भीड़ीमे बड़े जाते देखऽ है । कर ने ले ओकरीए से सादी ।'

– सलीम भाइ तोरा ककरो इज्जति–आबरूक खेयाल नै रहै छौ ।' किसुन धड़धड़ायल चल गेल ।

सलीम मुँह विधुअबैत बाजल– देखहू हो ! अच्छा बात कहलिअइ तऽ ओस्तदबा बिगड़ि गेलै ।'

दोसर राज कनेक जोरेसँ बाजि उठल – रे किसुनमो के इज्जति–आबरू के खेयाल रहै हइ ।'

अबस्से ई बात किसुनक कानमे पड़ल होयतैक । इहो बात अबस्से सुनने होयत जे– ओस्ताद भोगीलालक पोसपुत आ दमाद नहि रहितय तँ इहो रेजामे खटैत रहितय ।

ढलैया काज चलैत रहलैक । दिनसँ साँझ, साँझसँ राति आ रातिसँ भोर भऽ गेलैक । भरि राति कोलाहल मचल रहलैक । राज–मजूर लगातार खटैत रहल । सब थाकि कऽ चूरम चूर भऽ गेल छल । सबसँ बेसी थाकि गेल छल किसुन । छतपर घोला दऽ कऽ झाड़ू देल जा रहल छलैक तखन ओ ओहि ठामसँ बिना ककरो कहने सहटि गेल । ओकरा जेना ऊड़ी–बीड़ी लागि गेल छलैक ।

ओहि ठामसँ हटैत देरी, झोलफलेमे दौड़ऽ लागल । दौड़ैत जा रहल छल, जेना केओ पड़ायल जाइत होइक आ ओकरा पकड़बाकलेल अपस्याँत भेल खेहारने जाइत हो । ओकरा बूझि पड़लैक जेना ओकर इज्जति–आबरू, मान–सम्मान सब चल गेलैक जकरा ओ अपने ठोकरा कऽ चल आयल छल बहुत पहिने । के के ने कनखियौने होयतैक, बोली देने होयतैक, भोगीलालक बेटीकेँ । भोगीलालक ओहि बेटीकेँ जे कहियो ओकर घरवाली छलैक, ओकर इज्जति–आबरू छलैक, ओकर मान–सम्मान छलैक ।

किसुन हकमैत भोगीलालक घरपर पहुँचल । एखनो झोलफल कनेक छलैके । भोगीलाल खाटपर पड़ल छल । आङन सुन्न छलैक । दुरूक्खा लगक एकचारीमे गाय

बान्हल कछमछा रहल छलैक । किसुन भोगीलालक गोड़थारीमे ठाढ़ भऽ दम धरऽ लागल । फेर निहुरि कऽ ओकर दुनू पैर छूबि लेलक ।

भोगीलाल स्पर्श पाबि कऽ सुगबुगा कऽ उठल- के छह भोरे-भोरे हौ ?'

फेर किसुनपर नजरि गेलैक- के मेहमान ? ओ किसुन ?' भोगीलालकेँ बड़ आश्चर्य भेलैक ।

– ओस्ताद । हमरा माफ कऽ दैह । तोहर सब कैलहापर हम पानी फेरि देलियह । हम निमक-हराम भऽ गेलियह । मायक कहल हम नै मानलिऐ । तोहर आ अपन इज्जति-आबरू हम अपनेसँ डुबा देलियह । आब हमरा माफ कऽ दैह, माफ कऽ दैह ।'

भोगीलाल थाहैत-थाहैत ऊठि कऽ बैसि गेल ओ थरथराइत बोले बाजल-देखह किसुन...।'

-नहि, नहि बाबू ! किसुन नै, मेहमान कहक ।' किसुन बिच्चेमे रोकैत कहलकैक- एक बेर मेहमान कहि देबहक तँ हमर सब कसूर माफ भऽ जायत ।'.

किसुन दुनू हाथेँ भोगीलालक पैर छानि लेलक आ माथ टिका देलक- हमरा माथपर अपन सिनेहवला हाथ दऽ कऽ मेहमान कहि दहक नै तँ हम अहीठाँ माथ पटकि-पटकि कऽ मरि जेबह ।' किसुनक आँखिमे नोरक टघार देखि भोगीलालक आँखि सेहो ढबढबा गेलैक ।

भोगीलाल अपन दुनू हाथसँ किसुनक माथकेँ उठा कऽ अपना सोझाँ करैत बाजल- उठऽ मेहमान, उठऽ । मण्डिलक सबसँ चोटीपर रहै छै कलसा । कलसासँ मण्डिल चीन्हल जाइ छै । कलसे ने रहतै तँ मण्डिल बनाइये कऽ की हेतै । हम तँ मण्डिलक कलसा देने छलियह ।'

आब फड़िच्छ भऽ गेल छलैक । गाय एके बेर जोरसँ हुँकरि उठलैक । प्रायः चनरमा आबि गेल छलैक । भोगीलाल संकोच होइत जोरसँ बाजल-आबि गेलैँ गए चनरमा ? जल्दीसँ भनसा कर गऽ, मेहमान आबि गेलथुन ।' स्वरमे जेना अपरिमित उल्लास छलैक ।

किसुन कछमछाय लागल आङनमे जा कऽ लगसँ चनरमाकेँ देखबाकलेल । तावत नीक जकाँ फड़िच्छ भऽ गेल छलैक ।

[मैथिली अकादमी पत्रिका, कथा विशेषांक, नव.-दिस. 1992]



हलुमाना हौरन

कड़कड़ौआ जाड़क मास । पन्द्रह-बीस दिनसँ घनघोर शीतलहरी चलि रहल छलैक । हाथ-पैर ठिठुरि कऽ पाथर भेल जाइत । सौंसे कुहेस लागल छलैक । हाथ-हाथ भरि नहि सुझैत छलैक । बस-स्टैंड सुनसान जकाँ छलैक । बस-स्टैंडक मोसाफिरखानामे जतऽ-ततऽ सुतबाक गऽर ताकि कऽ कतोक लोक घोँकड़ी लगा कऽ सूतल छल । एहने जाड़क भोरुकी रातिमे पटना जाइवला बससँ किछु गोटे उतरल । ओहिमेसँ तीन व्यक्ति एक ठाम हेठ भेल ।

ओहिमे एकटा मर्द छल । वयस पचासक औन-पौनमे । ओ प्रायः पेटक दर्दसँ पीड़ित छल । दोसर चालिस-पैंतालिस वर्षक महिला छलि । तेसर छल बीस-बाइस वर्षक युवक । महिला आ युवक ओहि मर्दकेँ दुनू कातसँ बाँहि धऽ कऽ मोसाफिरखानाक पाया लग बैसा देलकैक । मर्द दुनू हाथेँ अपन पेट जतने चुक्की-माली भऽ कऽ अपन दुनू ठेहुनमे मूड़ी गाड़ि कऽ बैसि रहल । महिला ओकर पीठ ससारऽ लागलि छलैक । युवक बसपरसँ मोटरी उतारि कऽ लऽ अनलक ।

मर्द पेटक पीड़ासँ कुहरैत-कुहरैत कहलकैक – रे गोपाल ! जल्दीसँ कोनो सवारी ताक रे !'

गोपाल ओहि युवकक नाम छलैक । गोपाल महिलाकेँ कहलकै- काकी ! तोँ कका लग रहही । हम कोनो सवारी तकै छिऐ ।' ओ मोसाफिरखानासँ बाहर निकलि कऽ एमहर-ओमहर ताकऽ लागल छल ।

मर्दक कहरब सूनि गोटा-गोटी लोक उठि-उठि ओहि ठाम आबऽ लागल छल । गप्प-सप्पमे लोककेँ महिलासँ पता लगलैक जे रातिमे गाममे मर्दक दहिना पाँजरमे खूब जोरसँ दर्द उठलैक । गामक कम्पोटरसाहेब देखलथिन । ओ देखि कऽ कहलथिन जे किदन अपनाइटिस बिमारी ने होइक । से भेलापर तुरन्ते अपलेसन करऽ पड़तैक तेँ दरभंगा अस्पताल लऽ जा कऽ तुरन्त एमरजेंसीमे भरती कराबऽ लय कहलकैक । संजोगसँ बिचली रातिमे बस भेटि गेल ।

महिला ई कहैत-कहैत गह्वरित भऽ गेलि । ओकर बोल दुखसँ घहराय लगलैक ।

गोपाल जे सवारी ताकऽ गेल, से ओकरा भेटि नहि रहल छलैक । एको गोट रिक्सा

नहि छलैक । एहि जाड़-ठाड़मे कोन रिक्सावलाक जान फाजिल छलैक जे बस-स्टैंडमे ठिठुरि कऽ मरबालेल रहितय ! एकटा टेम्पो मात्र सड़कक किनारमे सड़कसँ उनटा मुँह कऽ कऽ ठाढ़ छल । टेम्पोवला घोँकड़ी लगा कऽ ओहीमे सूतल छल । गोपाल ओकरा अस्पताल चलबालेल पुछलकैक तँ ओ कहलकैक- भोरहरियाक समय छै, घनगर कुहेस लागल छै । रस्ता सुझाइत नहि छै । आ हमर हौरन खराब अछि । बिना, हौरनकेँ एहन समयमे गाड़ी चलयबामे खतरा छै तेँ हम नहि जायब ।'

टेम्पोवला अन्हायल-मन्हायल जकाँ कहि कऽ मुँह झाँपि कऽ सूति रहल ।

गोपाल मुँह बिधुऔने महिला लग आयल । महिला मर्दक पीठ ससारैत पुछलकैक - की भेलौ रे गोपाल ?'

- काकी गय ! एखन तँ एको गो सवारी नै भेटै छै ।' गोपाल मन्द स्वरमे बाजल ।

बसस्टैंडक दोकान सबमे राति कऽ रहनिहार लोक सब गोटा-गोटी जागि गेल छल । एक दिस केओ घूर पजारि देने छलैक, से कतोक गोटे आगि तापऽलेल जमा होअऽ लागल छल । किछु गोटे कुहरैत मर्द ओ ओकरा लग ठाढ़ि महिलाकेँ देखि सहटि कऽ चल आयल छल ।

गोपाल आबि कऽ अपन काकीकेँ टेम्पोवलाक गप्प कहैत छलैक से सूनि कऽ ओहि ठाम ठाढ़ बसस्टैंडमे रहनिहार लोक सबमेसँ केओ टेम्पोवलाकेँ बजा कऽ कहलकैक- रे भाइ ! एमरजेन्सीक पेसेंट छै । अस्पताल पहुँचा दहक ने । हौरन खराब छह, तँ नहि होअह, तँ हलुमाना हौरनकेँ कहक ने ! बरु यैह सब ओकरो मेहनताना दऽ देथिन ।' ई कहि ओ व्यक्ति गोपाल ओ टेम्पोवलाकेँ संग लऽ कऽ हलुमाना हौरनक चाहक दोकानपर जा कऽ भीतरमे सूतल हलुमानकेँ उठाबऽ लागल ।

टेम्पो आ हार्नक रूपमे हलुमाना ! सुनबामे अजगुत जकाँ लागब स्वाभाविक । मुदा हलुमानाक अपन अतीत कथा छैक ।

दस बारह बरखसँ किछु उपरे भेल होयतैक । कतिकी पूर्णिमाक मेलाक समय रहैक । दरभंगा नगरसँ पूब दरभंगा-सकरी रोडमे दू गोट नदीक घाट छैक । कमला नदीपर गौसाघाट आ ओहिसँ आगाँ जीबछ नदीपर जीबछघाट । जीबछ नदीक बड़ महात्म्य । कहल जाइत अछि जे मरौछियाहि स्त्री आ निस्सन्तान स्त्री अथवा पुत्र प्राप्तिक आकांक्षावाली स्त्री जीबछ नदीमे सविधि स्नान करैत अछि तँ ओकर मनोकामनाक अवश्य पूर्त्ति होइत छैक । मिथिलामे जीबछ आ जिबछी नामधारी लोक सब एही जीबछ-कमलाक माङल सन्तान सब थिक । से, मिथिले नहि, मिथिलासँ बाहरोक प्रदेशक हाँजक-हाँज यात्री सब कतिकी पूर्णिमामे जीबछघाट ओ गौसाघाटमे जुटैत अछि ।

ओहू बेर दरभंगाक पुरना बसस्टैंड पर जीबछघाट आ गौसाघाटक मेलाक यात्री सभक भीड़ कतिकी पूर्णिमाक प्रात आपस जयबालेल बसपर चढ़बा काल खूब धक्कम-धुक्की कऽ रहल छल ।

बसस्टैंडक एक कातमे हरिहरक पानक कठघारा छलैक । ओ भोरे भोर आबि कऽ अपन दोकान खोलने रहय । हरिहर अपन कठघराक पटरा सब छोड़ा एक कात रखलक । तकरा बाद कठघाराक अपन सीटपर जाय दोकानकेँ झाड़ि-पोछि कऽ सरिअबितय कि अकस्मात् कठघाराक निच्चाँमे पौआसँ ओठङल नुड़िआयल-पुड़िआयल सूतल एकटा बच्चाकेँ देखलक । हरिहर बच्चाकेँ देखि चौंकि उठल ।

हरिहर बच्चाकेँ कठघाराक तऽरसँ उठा कऽ बाहर अनलकैक । बच्चाक निन्न टुटलैक । ओ डेरायल-चकुआयल चारू कात नजरि घुमा-घुमा कऽ ककरो ताकऽ लगलैक । ओकर घुघसल मुँह देखि कऽ सहजे बूझऽमे आबि रहल छलैक जे ओ खूब कानल छल आ कनिते-कनिते सूति रहल छल । आब जखन निन्न टुटलैक तँ फेर ओ कानऽ लागल छल । मुदा कनबा काल ओकर मुँहसँ आबाज नहि बहराइक । खाली ओ हिचकय आ आँखिसँ दहोबहो नोर बहल चल जाइक ।

हरिहर अपन दोकानक बोइयाममे राखल बिस्कुट निकालि कऽ बच्चाकेँ देलकैक । बच्चाकेँ भूख लागल छलैक । ओ हबर-हबर बिस्कुट खाय लागल । हरिहर कलपरसँ एक डोल पानि भरि कऽ अनलक एक गिलास पानि बच्चाकेँ देलकैक । बच्चा घटघट कऽ पानि पीबि गेल ।

जखन बच्चा थोड़ेक सुस्थिर भेल तँ हरिहर फेर ओकरासँ अपन नाम, बापक नाम, गामक नाम पूछऽ लगलैक । मुदा ओ किछु उत्तर नहि दैक, खाली 'आँ...... आँए......आँ... आँए' बजैत रहैक । हरिहरकेँ तखन बूझऽमे अयलैक जे बच्चा गोङ-बौक छलैक । मुँहमे बकारे ने छलैक । तँ बजितय की !

हरिहर जेना फेरामे पड़ि गेल । आब ओ एहि बच्चाकेँ की करौक ! ओकरा किछु फुराइये ने रहल छलैक जे आब की करी !

हरिहर किछु सोचिये रहल छल कि सहे-सहे चारू कातसँ लोक आबि-आबि बच्चा लग एकट्ठा होअऽ लागल । सब अपन-अपन विचार व्यक्त करय जे ई बच्चा कमलाकातक मेलासँ बौखि कऽ एतऽ चल आयल अछि । भऽ सकैत छैक जे कोनो कमलाकातक यात्री बससँ चल गेल आ भीड़-भाड़मे ओकर बच्चा एही ठाम छूटि गेलैक । बच्चा चकुआयल चारू कात तकैत रहैक ।

बसस्टैंडपर लोकक सामान चढ़ौनिहार एकटा जवान बाजल- हरिहर भाइ ! की

छगुनतामे पड़ल छह ! चलह, एकरा लऽ कऽ सौंसे बसस्टैंडमे आ रोडपर घुमा दैत छिऐक। सम्भव छै जे केओ एकरा चीन्हि जाइ। एकटा बच्चा बौखि कऽ आबि गेल छै, सेहो तँ लोक जानि जेतै।'

हरिहर आ ओ व्यक्ति बच्चाकेँ डेन धयने सौंसे बसस्टैंड आ ओहिसँ बाहर मेनरोडपर बौआ आयल। जतऽ-जतऽ बस-यात्रीक झुंड देखैक ततऽ-ततऽ खूब जोरसँ बाजय - ई बच्चा बौखल -भूतिआयल आबि गेलैए। केओ चीन्है छिऐ ?'

केओ ने चिन्हलकैक ओहि बच्चाकेँ। हरिहर हारि-दारि कऽ ओकरा आनि कऽ अपन दोकानपर दोसर कात बैसा देलकैक जे केओ एकर चिन्हार भेटतैक तँ लऽ जयतैक। बच्चा भरि दिन अबैत-जाइत यात्री सब दिस टुकुर-टुकुट तकैत रहल। ने ओकरा केओ चिन्हलकैक, ने ओ ककरो चिन्हलकैक।

हरिहर भरि दिन ओही बच्चाकेँ लऽ कऽ चिन्तामे पड़ल रहल। जकरा लग एकर चर्चा करैत रहैक से भाँति-भाँतिक अपन-अपन विचार दैक। कय गोटे ईहो विचार देलकैक जे थानापर सनहा करा दहक, ने तँ फेरमे पड़ि जयबह। पानक दोकान चला कऽ परिवार चलौनिहार हरिहर अबुह-अथाहमे पड़ि गेल।

बच्चाक केश कैंचीसँ दकचि कऽ काटल छलैक। नव हाफशर्ट आ नवे पैंट पहिरने छलैक। गरदनिमे कारी डोरामे गाँथल सहोदरा, हलुमानी आ हैंठा पहिरने छल। बच्चाक हाव-भावसँ बड़ कठिनतासँ हरिहर अनुमान कऽ सकल जे बच्चा अपन माय-बापक संग कमला कात आयल छल। ओतहि ओकर मूड़न भेल छलैक।

हरिहर बच्चाक गरदनिक सहोदरा देखि कऽ अनुमान कयलक जे बच्चा प्रायः मरौछियाह अछि। जीबछ-कमलाक माङल अछि। माय-बाप कबुला कयने होयतैक तेँ कतिकी पुरनीमा दिन जीवछघाटमे, ने तँ गौसाघाटमे कमला-किनारमे एकर मूड़न करौने होयतैक।

मेलामे बच्चा कोनो बैलूनवलाकेँ देखि कऽ, कोनो खेलौनाक दोकान देखि कऽ, की मेलामे भेनिहार खेल-तमासाकेँ देखि अपन माय-बापक आङुर छोड़ि कऽ ओहि दिस सहटि गेल होयत। लोक सभक रेड़ामे ओ ठेलाइत-ठेलाइत माय-बापसँ दूर भऽ गेल होयत। आ लोकक संग-सोरमे भटकैत-भटकैत एहि बसस्टैंड धरि चल आयल होयत। से, कखन, कोना ? ई बूझब कठिन छलैक हरिहरकलेल।

दोकानपर जतेक गाहक अबैक, हरिहर ओहि बच्चाक विषयमे कहैक जे- ई बच्चा भुतिया कऽ आबि गेलैक अछि। अपना इलाकामे एकर चर्चा करबैक।' मुदा कय दिन बितलो उत्तर केओ खोज-खबरि नहि कयलकैक। हरिहरकेँ अवधारि लेबऽ पड़लैक

जे आब एहि बच्चाक सम्भवत: हमरे पालन करबाक अछि । भारी तँ बूझि पड़लैक मुदा दोसर उपाइयो नहि छलैक । ओकरा कतऽ कोना कऽ अनाथ जकाँ बैला दितैक !

हरिहर बच्चाकेँ ओहि दिन रातिमे अपना गामपर लेने गेलैक । दोसर दिन नहयबाकलेल ओकरा देहपरसँ पहिरन सब हटौलकैक । बूझि पड़लैक जे बच्चा कोनो सामान्ये घरक छैक । अपनेसँ ओकरा देहमे तेल लगाबऽ लगलैक तँ ओकर बाम हाथक फट्टीपर हनुमानजीक आकृतिक गोदना गोदल देखलक । गरदनिमे पहिरने हलुमानी आ हाथक फट्टीपर हनुमानजीक आकृति देखि कऽ हरिहर ओहि बच्चाकेँ हलुमाना कहऽ लगलैक ।

हरिहर सब दिन हलुमानाकेँ अपना संग लेने आबय आ दोकानपर बैसा दिअय । हलुमाना भरि दिन अबैत-जाइत यात्री सब दिस तकैत रहय । कखनो कऽ दोकानसँ उतरि कऽ नव पहुँचल बसमे जाकऽ जेना ककरो ताकऽ लागय । आ फेर ओकर आँखिमे नोर ढबढबा जाइक । हरिहरकेँ जखन ध्यान जाइक जे हलुमाना बड़ी कालसँ अपन जगह पर नहि अछि तँ कठघारापरसँ उतरय । हलुमानाकेँ ताकि कऽ पकड़ि आनय आ ओकरा अपन जगहपर बैसा दैक ।

हलुमाना मुदा अपना स्थानपर स्थिर चित्त, संच-मंच भऽ कऽ बैसय नहि । बस सभकेँ देखबालेल सहटि कऽ चल्ले गेल करय ।

एक दिन एहिना हरिहर पानक गाहकमे ओझरायल रहय कि एके बेर खूब जोरसँ एकटा विचित्र प्रकारक चित्कार सुनलक 'घिर्र...र्र....र्र' । हरिहर देखलक, हलुमाना अपना जगहपर नहि अछि । चारू कात नजरि दौड़ौलक । ओ बसस्टैंडक गेटक कतबहिमे एकटा युवककेँ हलुमानाकेँ डेन पकड़ि कऽ घीचैत देखलक । ओ युवक पैजामा आ टीशर्ट पहिरने छल, ओकरा एकटा हाथमे पाँच-सातटा चाकलेट छलैक आ दोसर हाथसँ हलुमानाक डेन पकड़ि कऽ घीचि रहल छल आ हलुमाना अपनाकेँ छोड़यबाक कोशिश करैत चिचिया जकाँ रहल छल - आँ ....आँए.........घिर्र.....र्र......र्र । घिर्र.....र्र.......र्र ।'

हरिहर 'हे...हे....हे' करैत कठघारापरसँ फानल आ गेट दिस दौड़ल । ओ युवक हलुमानाकेँ छोड़ि लत्ते-पत्ते पड़ायल । हरिहर हलुमानाकेँ आनि कऽ बैसौलक । इसारासँ ओकरा एमहर-ओमहर आ खास कऽ गेट दिस जयबासँ मना कयलकैक । से नहि कयलापर चाटसँ मारबाक इसारा कयलक ।

हलुमाना मुदा संचमंच बैसऽवला नहि छल । जखन हरिहर गाहकमे खूब ओझरायल रहैत छल, तखन ओ चुपचाप ससरि कऽ बस सब लग चल जाय आ भुखायल आँखिसँ ताकऽ लागय आ तकिते रहय ।

हरिहरकेँ हलुमानाक एहि चरजापर तामसो भऽ जाइक मुदा ओ हलुमानाक मनक

पीड़ाकेँ बुझैत छलैक । ओ बुझैत छल जे हलुमाना अपन माय, बाप वा कोनो अपन चीन्हल लोकके आतुरतासँ तकैत छल जकरासँ ओ बिछुड़ि गेल छल ।

हरिहर हलुमानाकेँ काँच नारियरक छोट-छोट फाँक बना कऽ बेचब सिखा देलकैक । एक चौअन्नीमे एक फाँक, एक अठन्नीमे दू फाँक, एक टाकाक सिक्का अथवा नोटमे चारि फाँक । एकटा परातमे नारियरक फाँक सजा कऽ बसस्टैण्डमे घूमि-घूमि कऽ बसक भीतरमे पैसि कऽ ओ नारियर बेचऽ लागल । आन-आन बेचनिहार तँ मुँहसँ बाजि-बाजि कऽ बेचय । मुदा बाणी-विहीन हलुमाना चम्मचसँ थारीकेँ खूब जोरसँ झनझना दैक । लोक जखन ताकऽ लगैक तँ ओकरा दिस ओ नारियरक फाँक किनबाक इसारा करैक ।

जन्तु गुणेँ हलुमानाक बिकरीयो बेजाय नहि होइक । किछु लोक तँ अपन आवश्यकताक अनुसार कीनय आ किछु लोक ओकरा प्रति दयाभावसँ कीनय । कहियो काल हलुमानाक छोट वयस आ बौक होयबाक कारणेँ केओ-केओ बलजोरी सेहो देखाबऽ लगैक ।

एक दिन एकटा हीरोटाइप छौंड़ा एक टाकामे चारि गोट नारियरक फाँकक स्थानमे पाँच गोट फाँक जबरदस्ती लेबऽ लगलैक । हलुमाना रोकबाक चेष्टा कयलकैक, मुदा ओ छौंड़ा थारीमे एकटा सिक्का राखि पाँचटा फाँक उठाइये लेलकैक । हलुमाना 'आँ.... आँए' करैत एके बेर चीत्कार कयलक......घिर्र....र्र..र्र । घिर्र...र्र....र्र ।

बसस्टैंडक सब दोकनदार सब हलुमानाक एहि चीत्कारसँ परिचित भऽ गेल छल । से, सुनैत देरी सभ दौड़ल । लोक सभकेँ देखि छौंड़ा तँ सटक सीताराम भऽ गेल । ओ घिघियाइत बाजल जे– हम जबरदस्ती कहाँ लेलिऐक अछि ? ओ एक रुपैयामे चारिटा कहलक तँ हम कहलिऐक जे पाँचटा दही आ पाँचटा उठा लेलिऐक ।' ई कहि ओ पाँचम फाँक थारीमे राखि देलकैक ।

एक दिन बसक भीतरमे हलुमाना नारियर बेचै लय थारी टनटनबैत छल । बसमे भीड़ छलै । एकटा महिला कोरामे बच्चाकेँ लेने ठाढ़ि छलि । बच्चा हलुमानाक थारी दिस हाथ बढ़ौलकैक । महिला ओकर हाथ समेटि लेलकैक । बच्चा बेर-बेर ठुनकैत नारियरलय लौल करैत थारी दिस हाथ बढ़बैत रहलैक आ महिला गोँहछैत ओकर हाथ समेटैत रहलैक । हलुमाना थारी टनटनबैत प्रतीक्षामे छल जे बच्चाक माय बच्चाक लटारम्ह देखि एकोटा फाँक कीनि लेतैक । से भेलैक नहि । मुदा बच्चा अकस्मात् नमरि कऽ थारीमेसँ एकटा फाँक उठा लेलकैक । महिला झमाड़ि कऽ ओकरा हाथसँ फाँक छीनि थारीमे राखि देलकैक ।

हलुमाना ई देखैत रहल । बच्चा आ ओकर मायक अपरतीब भेल मुँह देखैत रहल । फेर ओ एकटा फाँक थारीमेसँ उठा कऽ बच्चाक हाथमे धरा देलकैक । महिला मना करैत कहलकैक -बौआ रे ! हमरा पाइ नहि अछि जे कीनि कऽ देबैक ।'

सीटपर बैसल एक दोसर प्रौढ़ा महिला कहलकैक – हय बेचारी, बच्चाकें कोना निठोहर करैत छहक ? चारिए आनामे तँ दैत छैक । कीनि देबहक से नहि ।'

ओ महिला विवश मुद्रामे अनिच्छापूर्वक आँचरक खूटमेसँ एकटा एकटकही खोलि कऽ हलुमाना दिस बढ़ा देलकैक । हलुमाना एक बेर बच्चा दिस देखलक । फेर महिला दिस ताकि नोट ओकरा आपस कऽ कऽ बढ़ि गेल । दोकानपर आबि हरिहरकें पाइ देलकैक । हरिहर एक फाँकक पाइ कम देखि कम होयबाक इसारा कयलक । हलुमाना अपन इसारासँ बुझा देलकैक जे एकटा फाँक बिनु पाइ लेने एकटा बच्चाकें दऽ देलकैक आ हरिहरक मुँह ताकऽ लागल । हरिहर जेना अभिभूत भऽ गेल हो तहिना ओकरा दिस तकैत पीठकें थपथपा देलकैक ।

साल लागि गेलैक । कातिकी पूर्णिमामे लोक सभक भीड़ देखि हलुमाना हरिहरकें गौसाघाट चलबाक इसारा करऽ लगलैक । ओकर हाथ पकड़ि ओमहर चलबाक लेल जिद्द करऽ लगलैक । हरिहर हलुमानाकें संग लऽ गौसाघाट गेल । हलुमाना ओकरा जीबछघाट धरि लऽ गेल । गौसाघाटसँ किछु पूब स्थित जीबछघाटक जीबछ धारमे अधिक महिले सब नहाइत छलि सन्तानक कामना लऽ कऽ । फेर ओहि ठामसँ गौसाघाट आबि डूब दैत छलइ । गौसामे लोकक एत्ता नहि । देहसँ देह जेना छिलाइत होइक । हलुमाना हरिहरक आङुर धयने सौंसे मेला बौआइत लोकक मुँह तकैत रहल । मुदा केओ एहन नहि भेटलैक जकरा ओ पहिने देखने होइक ।

समय बीतैत गेलैक । हलुमाना छेँटगर होइत गेल । आब बसक छतपर लोकक सामान सेहो चढ़ाबऽ–उतारऽ लागल छल । ओहूसँ कमा लैत छल । जे पाइ कमाइत छल से हरिहरकें दऽ दैत छलैक । हरिहरकें हलुमानाक भविष्यक चिन्ता खयने जाइत छलैक । तें ओकर कमायल पैसाकें फराक कऽ जमा रखने जाइत छल । हलुमानाकें कोनो रोजगारक असरा धरयबाक निमित्त ओ सोचिते रहैत छल । एकबेर मौका लगलैक तँ बसस्टैंडक कैम्पसेमे पानक कठघराक बगलमे चाहक दोकानक जगह भेटि गेलैक । अपने चाहक दोकान करऽ लागल आ हलुमानाकें पानक दोकानपर बैसा देलक । दुनू दोकान चलऽ लगलैक । हलुमाना तँ हरिहरक समाङे जकाँ भऽ गेल छलैक । जकरा नहि बूझल छलैक पूर्वक बात, से हलुमानाकें हरिहरक बेटे बुझैत छलैक ।

समयक संग सब किछु बदलैत गेलैक । हरिहरक वयस ढलान दिस बढ़ऽ लगलैक तँ हलुमानक जुआनी फूटऽ लागल छलैक । देहमे एकटा चकमकी, एकटा कठमस्ती आबि गेल छलैक । मोँछक पम्ह करिछौन होअऽ लागल छलैक । गलमोच्छा बढ़ऽ लागल छलैक । छरेछाँट जबान बनबाक भूमिका हलुमानाक अंग–अंगमे झलकऽ लागल छलैक । आब हरिहर आ हलुमाना दुनू रातियोमे चाहेक दोकानपर रहऽ लागल, किन्तु किछु बात एहन छलैक जे हलुमानामे ओहिना छलैक ।

एखनो ओ रहि-रहि कऽ अबैत-जाइत बस सबमे जा कऽ हुलकी दैत रहैत छल। कतिकी पूर्णिमामे गौसाघाट मेलामे थारीमे नारियर राखि कऽ बेचऽ जाइत छल। नारियर बेचब तँ एकटा बहाना छलैक। वास्तवमे ओ अपन ओहन अंगित ओ परिचितकेँ ताकऽ जाइत छल जकर आकृति-स्मृति सब धुन्धि पड़ि गेल छलैक। तथापि ओकर भुखल-पियासल आँखि बौआइत रहैत छलैक आ साँझ कऽ ओहि आँखिमे विराट शून्य लेने बसस्टैंड आपस आबि जाइत छल आ हरिहरसँ किछु बिनु बजनहि बेंचपर असोथकित भऽ कऽ पड़ि रहैत छल। हरिहर ओकर अवसादक धाहकेँ पचयबाक लेल ओकरा ओहिना छोड़ि दैत छल।

तेसर बात ओकर 'आँ....आँए.....' करैत तीव्र चीत्कारक स्वर 'घिर्र....र्र....र्र.....' आरो तीव्रतर भऽ गेल छलैक। कहियो काल कोनो-कोनो टेम्पोवलाक हौरन खराब रहैत छलैक आ दूरक अथवा रिजर्फ सवारी भेटि जाइत छलैक तँ ओ सभ हलुमानाकेँ बैसा लैत छलैक। हलुमाना ककरो टेम्पोपर तखने बैसैत छलैक जखन हरिहर अपन सुहकार दैत छलैक। टेम्पोपर हलुमाना भरि रस्ता हॉर्नक बदलामे अपने चीत्कार करैत जाइत छल- आँ......आँए.....घिर्र...र्र....र्र....... ।' हलुमानाक ई कण्ठ ध्वनि ततेक तीव्र होइत छल जे ओकरा आगाँमे ट्रकक हॉर्न आ सीटी मद्धिम बूझि पड़ैत छलैक। तेँ कतोक बस ड्राइवर कण्डक्टर, खलासी आ टेम्पोवला सभ हँसीमे हौरन कहऽ लागल छलैक— हलुमाना हौरन।

जाड़ मासक कुहेस लागल ओहि भोरमे गोपाल ओहि टेम्पो ड्राइवरक संग जा कऽ हलुमानाकेँ उठयबाक चेष्टा कयलक। मुदा हलुमाना उठल नहि, खाली आँहि-ऊँहि करैत रहल। ओहुना ककरो कहलापर हलुमाना उठि खड़ा होइतय आ हौरनक काज करबालेल चलि दितय से बात नहि छलैक। ओ टेम्पोपर हौरन बनि कऽ जाइलेल तैयार नहि भेलैक, ओ ओढ़नासँ मुँह-कान झाँपि कऽ फेर सूति रहल।

तीनू गोटे निराश भऽ कऽ घुमल चल अबैत छल कि ओ सब देखलक हरिहरकेँ मोबिलवला खाली डिब्बा लेने निकास दिससँ अबैत। ओ तीनू गोटे दिस जिज्ञासासँ तकलकैक- की बात ?'

गोपाल ओ टेम्पो ड्राइवरक संग जे तेसर व्यक्ति छलैक तकरा हरिहर पुछलकैक- की छै हौ भाइ !'

ओ व्यक्ति मोसाफिरखानाक पाया लग बैसल मर्द आ जनानी दिस देखबैत सब बात कहलकैक। तावत गोपाल सेहो लगमे सहटि कऽ चल आयल आ अपन पित्तीकेँ तुरन्त अस्पताल लऽ जयबाक आतुरता देखौलकैक।

हरिहर बिना कोनो बात बजने ओहि पुरुख-महिलाक लगमे आयल। ओ किछु पुछितैक ताहिसँ पहिनहि ओ महिला अत्यन्त आर्त्त भऽ कौलति करैत कहलकैक-

बाबू ! कोनो तरहेँ हमरा सबकेँ अस्पताल पहुँचबा दियऽ । कम्पोटरबाबू किदन बिमारीक नाम कहलथिन, जे- से हेतै तँ तुरन्त अपलेसन करऽ पड़तै । गरीबक जान बचा लियौ बाबू !'

ई कहैत-कहैत महिला दुनू हाथेँ हरिहरक पैर पकड़ि लेलकैक । हरिहर एकाएक अकबका गेल । एतबहिमे औरो कय गोटे उत्सुकतासँ आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल छल । हरिहर ओहि महिलाक दुनू हाथ पकड़ि कऽ उठबैत कहलकैक - ई कऽ कऽ किएक पाप चढ़बैत छी ? मनुक्खे मनुक्खक बेर-विपत्तिमे काज अबैत छै ने !'

महिला करुण स्वरमे कहलकैक- कोनो उपाय कऽ दियऽ बाबू ! बड़ गून मानब ।'

हरिहर महिलाकेँ आश्वस्त करैत कहलकैक - अच्छा, अच्छा ! अहाँ शान्त रहू । सभ इन्तजाम भऽ जाइ छै ।'

हरिहर ओहि तीनू व्यक्तिक संग दोकानपर आयल । हलुमानाकेँ सोर कऽ कऽ उठौलकैक । हलुमाना हरिहरक आहटि पबितहि फुरफुरा कऽ उठि गेल आ धड़फड़ा कऽ आँखि मीड़ैत हरिहरक आगाँमे आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल । भाव एहन जेना- की कहै छह ?'

हरिहर ओकरा इसारासँ सब बात बुझा देलकैक । लगमे ठाढ़ गोपाल ओ टेम्पो ड्राइवर तथा मोसाफिरखानाक पायाक लगमे ठाढ़ि महिला ओ दर्दसँ कुहरैत बैसल पुरुख दिस इसारा कऽ कऽ देखौलकैक ।

हलुमाना चुपचाप हरिहरक मुँह दिस तकैत रहल । ककरो की मजाल जे हरिहरक हुकुमक बिना हलुमानासँ कोनो काज करा लेत । मुदा हलुमानाकेँ हरिहरक हुकुम भेटि गेलापर केओ रोकियो ने सकैत छलैक । ओ जेना साक्षात् हनुमाने बनि जाइत छल ।

हलुमाना मुँहो-हाथ धो लितय सेहो नहि । ओ धड़फड़ीमे असगनीपर राखल कपड़ा घिचलक । हबर-हबर पहिरलक । गोपाल आ ओहि टेम्पो ड्राइवरक संग महिला-पुरुष लग आयल ।

बससँ उतरैत आ बसमे चढ़ैत पसिंजर सबकेँ गहिकी नजरिसँ देखबाक अभ्यास हलुमानाकेँ सहसा मन पड़ि गेलैक । ओ महिलाकेँ सेहो आँखि निराड़ि कऽ देखऽ लगलैक आ थोड़ेक काल देखितहि रहल । सहसा ओ 'आँ...आँ....एँ' कहैत खूब जोरसँ चीत्कार कयलक- घिर्र.....र्र...र्र, घिर्र....र्र....र्र..आ भरि पाँज कऽ महिलाकेँ धऽ लेलक ।

महिला हलुमानाक एहि आकस्मिक विचित्र व्यवहारसँ अकचका गेलि । ओ हलुमानाकेँ झमाड़ि कऽ ठेलैत बाजलि - मर्र ! ई चकतबा-जनिपिट्टा एना किए करै छै ? किछु आँखि देखलेँहेँ रे।'

हलुमाना तलमला कऽ पाछाँ भरेँ खसि पड़ल आ फेर चीत्कार करैत महिलाकेँ अपन गरदनिक सहोदरा, हलुमानी आ हैंठा देखौलकैक । फेर अपन बामा हाथक फट्ठी उनटा कऽ ओहिपर गोदल हनुमानजीक आकृति देखबैत महिलाक पैर छानि दुनू पैरक बीचमे मूड़ी घुसिया कऽ खूब जोरसँ 'आँ....आँएँ......आँ....आँएँ' करऽ लगलैक ।

महिलाकेँ अकस्मात् बोध भेलैक जे ई कमलाकांतमे हेरायल-भुतियायल, बौखल-बिछुड़ल ओकरे बौका बेटा थिकैक । ओ हलुमानाकेँ उठा कऽ भरि पाँज कऽ धऽ लेलक घाड़ाजोड़ी कऽ कऽ विलाप करऽ लागलि- बाबू रे बाबू ! अपना मायकेँ दुखनी बना कऽ कतऽ चल गेल छलही रे बाबू ! अछैते पूतेँ हमरा निपुत्तर पाथर बना कऽ कोना नुकायल छलही रे बजरंगी !'

पुरुष जे एते काल ठेहुनमे मूड़ी गाड़ने छल से मूड़ी उठा कऽ तेना ताकऽ लागल जेना ओकर सब रोग-व्याधि हरण भऽ गेल होइक ।

हरिहर चिरविरहिन माइ-पूतक एहि अकल्पित मिलनकेँ हर्षाश्रुक संग देखैत रहल, ठकुआयल संग ।

[लेखन- 24 मार्च 2006, प्रकाशन- जखन तखन, अंक-6, अक्टू.-दिस. 2006]



कहाँ छें रे नुनुआँ !

रातिमे सुखलाल जखन खाय लय बैसल तँ अपन घरवालीकें चौल करैत कहलकैक – गय ! जहिया हमर बाबू आ कक्का तोहर घरदेखी कऽ कऽ आयल रहौ तँ बाजल रहै जे कनियाँ मनुक्ख सन छै, आ आब तों कोन एहन अलखसुनरी आ इनरासनक पऽरी भऽ गेलें जे नित्तह लोक तोरा निँघारइ लय कहाँ–कहाँसँ अबैत रहै छौ। मारि फोटो घीचइ छौ आ एकबारमे छपबै छौ। गय ! तीन–तीन धीया–पुता भेलाक बाद कोनो मौगी एते सुन्नरि भऽ जेतइ से ने केओ आँखिएँ देखलक, ने काने सुनलक।'

– चुपचाप खाओ आ अनेरे बर्र–बर्र नै करओ। बिआह बेरमे यैह कोन अलखक चान रहै ?' सोनमतिया अपन घरवलापर कुन्हरैत बाजलि– लोककें हम बजाबऽ जाइ छिअइ जे हओ लोक सब, आबऽ हमरा निँघारऽ। ई चकतबा–जनिपिट्टा बिजैयाक सार ई सब फसादि ठाढ़ कऽ देलक। वैह सरधुआ बिजैयाक संग आयल छल। बिजैया कहलक जे गय भौजी ! छागरकें तों दूध पिअबैत छही, से हमरा सारकें बिसबासे ने होइ छै। वैह बिजैयाक सार एकबारमे की–कहाँ छपबा देलकै। से आब हमरा जानक कबाहटि भऽ गेल।'

–कबाहटि की भऽ गेलौ ? आब तँ लोक सब तोहर दरसन करऽ अबै छौ। बड़का लोक जकाँ तोरो फोटो घीचइ लय खेखनियाँ करैत रहै छौ। परसू बढ़मथानमे बड़का सभा हेतै। इलाकाक हगामा लोक ओतऽ जमा हेतै। ओहिमे परोपट्टाक मुखिया– सरपंच, इलाकाक एमेले, एमपी सब रहतै। पाटीवला सब रहतै। तकरा बीचमे मनिस्टर साहेब तोहर मान–सम्मान करथुन।' सुखलाल खाइत–खाइत कहैत रहल – सौंसे गुलंजर उड़िआइ छै जे आब तोरा लोक सब पंचाइतक मेम्बर–मुखिया बनाबऽ चाहै छौ। कहियो एमेले सेहो बनाइए देतौ।'

सोनमतिया घरवलाकें गोँहछल स्वरमे कहलक – हम नै जाइ छी, नेतागीरी करऽ। अपने जे दुख–धन्धा अछि, ताहीमे रहब। हमरा बदला यैह चल जाओ नेता बनै लय। हाथीक पैरक खोल सन पैजाम सिया लेअओ, घुट्ठी धरिक कुरता सिया लेअओ। दुनू पहीरि कऽ अनेरे नेताजी बनि जायत !'

सुखलाल कनेक हँसैत मुदा गम्भीर स्वरमे कहलकैक – से तँ हेतै बादमे। मुदा पहिने, परसू जे लोक तोहर मान करतौ, ताहिलय नूआँ आर सेहो तँ साफ कऽ लितें ?'

सुखलाल आ सोनमतिया अछि जऽन–बोनिहार। सुखलाल अछि बड़ काजुल। मन लगा कऽ काज करैत अछि, तें कहियो बैसाड़ी नहि रहैत छैक। सोनमतिया लोकक

गोबर पथैत अछि । लोकक आङन-घरमे कुटिया-पिसिया आ टहल-टिकोरा सेहो कऽ दैत छैक । अपनहुँ दू-तीनटा गाय पोसने अछि । ओकरा सबलय नितह घास कऽ कऽ अनैत अछि । सब मिला कऽ अपन परिवारकेँ दुखम-सुखम चलबिते अछि ।

सोनमतिया जखन सासुर आइलि छलि तँ देखने छलि भरि बथान बकरी-छकरी । बकरी ओकरा नहि सोहाइ छलै । लोक बकरी पोसैए, ओकर बच्चा, छागरकेँ पोसि-पालि कऽ चिकबा हाथेँ बेचि दैत अछि, बध करबालय । तेँ सोनमतिया बकरी पोसबकेँ पसिन्न नहि करैत छलि । से जखन ओ सासुर बसऽ लागलि तँ अपन हिस्साक बकरी-पठरू सब सुखलालकेँ मना कऽ हटबा देलक । दोङा करा कऽ आयलि छलि तँ नैहरसँ एकटा बाछी माय-बापसँ माङि आयलि छलि । आब ओही बाछीक पालि बढ़ैत-बढ़ैत तीन थान गाय भऽ गेल छैक ।

सोनमतियाक आङनमे सोनमतिया लगा कऽ चारि घरवासी । सुखलालक बाप चारि भाँइ मुदा ककरोसँ ककरो मिलान नहि । तेँ सब फराक-फराक छल । सभक घर फराक मुदा आङन एक्के । सभक जीवन निर्वाह ओहिना होइत छलैक जेना सुखलालक । फरक एतबे जे आन सब बकरी पोसने छल आ सुखलाल गाय । सुखलालक माय मरि गेल छलैक । आन पितिआइनियो सबमे आब बड़की पितिआइनिटा जीबैत छलैक । बेस ठेङाठाही छलैक, मुँहक बेस जोरगरि ।

बड़की पितिआइनिकेँ बहुत रास बकरी छलैक । एकटा बकरी बिअयलैक- दूटा पठरू । एकटा छागर, एकटा पाठी । बकरीकेँ छेड़बाहि धऽ लेलकैक । ओकर दबाइ-वीरो होअऽ लगलैक, मुदा ओ बचलैक नहि । छागर-पाठी दूध बिना बिलो-बिलो होअऽ लगलैक । दुधकट्टू भऽ कऽ पहिने पाठी मरि गेलैक । आब छागर सेहो हुकहुक करऽ लगलैक ।

ओहि दिन छागर नितुआन, लारो-बातो भेल पड़ल रहैक, भेलैक जे इहो जे छन जे पल छैक । आङनक सब घरक मौगी सब देखऽ गेलैक । ओ सब आबि कऽ थहाथही भऽ गेलैक । सोनमतियाकेँ दू मास पहिने तेसर सन्तान भेल छलैक । ओ अपना घरसँ कमे काल बहराइत छलि । माल-जालक ताकछेम, घास-पात, गोबर-कड़सी सुखलाल आ ओकर दुनू बेटा-बेटी सम्हारैत छलैक । आङनमे हल्ला होइत सूनि सोनमतियाकेँ घरमे रहल नहि भेलैक । ओहो पठरूकेँ देखऽ चलि आइलि । उज्जर रंगक नवजात पठरू लबेजान भऽ कऽ पड़ल छलैक । बड़की पितिआइनि खुरचनमे दूध लऽ कऽ ओकरा पिअबैत छलैक मुदा दूध ओकरा मुँहमे नहि जा कऽ बहि जाइत छलैक ।

सोनमतिया पठरूकेँ एकटक देखैत रहलि । अकस्मात् की ने की फुरलैक, ओ पठरूकेँ उठा कऽ कोरमे लऽ लेलकैक । ओकर देह हँसोथैत ओकर मुँह अपन छातीसँ सटा देलकैक । छातीसँ मुँह सटैत देरी पठरू चुभुर-चुभुर दूध पीबऽ लगलैक आ बड़ी

काल धरि पिबैत रहलैक । सोनमतिया अपन कोरसँ पठरूकेँ उतारि कऽ धरतीपर रखलक तँ पठरू टनमना कऽ नहूँ-नहूँ कूदऽ लगलैक ।

सोनमतिया पठरूकेँ भिनसर-साँझ दूध पिआबऽ लगलैक । पठरू आब खूब कूदऽ-फानऽ लगलैक । सोनमतियाकेँ अरोस-पड़ोसक मौगी सब कहल करैक जे -गय ! अपन बच्चाक हिस्सा छीनि कऽ बड़की काकीक पठरूकेँ दैत छहिन तँ अपन बच्चा दुधकट्टू नै भऽ जेतौ ? तोँ अकरहर करै छेँ ।'

-जकरा जौआँ जनमै छै, से कोना पोसै छै ?' सोनमतिया हँसीमे बातकेँ उड़बैत कहैक - बूझ जे हमहूँ जौएँ बच्चा पोसै छी ।'

पठरू जेना सोनमतियाकेँ नीक जकाँ चीन्हि गेलैक । आङनमे सोनमतियाक कनेको अहट पबैत देरी ओ कुदैत ओकरा लग चल अबैक आ जबरदस्ती ओकर देहपर खूर अरोपि कऽ चढ़ि जाइक । सोनमतियाक मुँह आ छातीसँ अपन थुथुन सटा दैक । बादमे भोरे-भोरे सोनमतिया घरक फट्टकमे जा कऽ ओ ढाही मारऽ लगलैक ।

सहे-सहे पठरू माँड़, रोटी, कोड़ाइ आ घास-पात सेहो खाय लगलैक । कनेके दिनमे बेस छेटगर आ मोटा कऽ भकुना भऽ गेलैक । सोनमतिया घास कऽ कऽ बाधसँ आबय तँ पठरूलेल कोमल-कोमल अपोआङ लेने आबय आ अङना अबिते सोर पाड़ैक- कहाँ छेँ रे नुनुआँ ।' मुदा ओकर मुँहक बोल पूरो ने होइक कि पठरू आबि कऽ ओकरा देहपर छड़पऽ लगैक ।

सोनमतिया आ ओकर नुनुआँक बात सौंसे गाममे पसरि गेल छलैक । गाममे पढ़ल-लिखल लोक छल विजय । ओकर सार आयल छलैक । सार छलैक कोनो एकबारक संवाददाता । ओ सोनमतिया आ ओकर नुनुआँ पठरूक वृत्तान्त जनलक । अपना आँखिएँ देखलक । बड़ अद्‌भुत लगलैक । ओ एकटा मर्मस्पर्शी समाचार बना कऽ एकबारमे पठा देलकैक । एकबारमे प्रथम पृष्ठपर बौक्समे समाचार छापि देलकैक । समाचार छपैत देरी सोनमतिया अद्‌भुत प्राणीमित्र महिलाक रूपमे विख्यात भऽ गेलि ।

एकबार, रेडियो आ दूरदर्शनवला सब आ आनो-आनो लोक सब सोनमतियाक एक झलक देखबालेल आबऽ लगलैक । साइकिल आ मोटरसाइकिलक तँ बाते नहि, जीप आ मोटरोक आवागमन गाममे बढ़िते गेलैक । अपरिचित लोक सब कैमरा आ भीसीआर लेने सोनमतियाक फोटो घिचबालेल बेकल बौआय लागल छल । गाम आ इलाकाक चौक-चौराहा, चट्टी, चाहक दोकान, सबतरि सोनमतियेक चर्चा चलऽ लागल । चर्चा इहो चलऽ लागल जे सोनमतिया एबरी मुखियालय ठाढ़ि भऽ जाय तँ, जीति जयबे करत एमेलेओमे ठाढ़ि भऽ जाय तँ केओ माइक लाल ओकरा हरा नै सकतै ।'

सोनमतियाकेँ मुदा बड़ विपत्ति भऽ गेलैक । के कहाँ आबि-आबि कऽ ओकरासँ

खोधि-खोधि पठरू आ ओकर सम्बन्धमे पूछल करैक । एके बातकेँ दोहरबैत-दोहरबैत ओ गोँहछि जाय । कय बेर किछु कहबामे अकबकाइयो जाय । मुदा लोक मानय तखन ने ! अपन काज-धन्धामे से ओकरा ओझर होअऽ लगलैक ।

ओमहर क्षेत्रक एमेले साहेबक कानमे सोनमतियाक प्रसिद्धिक खबरि पड़लनि । ओ दौड़ल अयलाह गामक मुखियाक ओतऽ । मुखियाकेँ ओ डँटैत कहलथिन - गामक राजनीति करै छह आ एतबो बात नै बुझै छह जे सोनमतिया तोहर सब मुखियागीरी घोसाड़ि देतह । ओकरा अपनामे मिला कऽ राखह । कतेको लोक ओकरा देखऽ अबै छै । ओ गरीब लोक अछि, ककर की सत्कार करतै ? तोँ बाहरसँ अयनिहार लोकक चाह-पान, जलखै आदिक व्यवस्था अपना ओहि ठाम करहक ।'

मुखियाजी भीतरे-भीतरे गुम्हड़ि कऽ रहि गेलाह, सब फसादिक जड़ि थिक ई छागर...।

एकबारं, रेडियो आ टीवीमे इहो समाचार आयल जे सोनमतिया आ ओकर नुनुआँ छागरकेँ देखबालेल आगन्तुकक संख्या बढ़िते जा रहल अछि । मुखियाजीक दलानपर स्वागत-सत्कार चलऽ लागल । सहे-सहे सोनमतिया आ ओकर नुनुआँ छागरक प्रसंग राजनीतिक रंग पकड़ऽ लागल । सब पक्ष ओकरा अपन भोट-बैंक बनयबाक जोगाड़ धरयबामे उपरा-उपरी करऽ लागल ।

एहि क्षेत्रक एमपी छलाह दिल्लीमे बैसल । हुनक समर्थक सब गामक मुखिया आ क्षेत्रक एमेलेक क्रिया-कलापक सूचना दैत सोनमतियाकेँ अपना दिस अनबाकलेल किछु करबाक विचार देलकनि । नहि तँ अगिला चुनाओमे पछड़ि जयबाक सम्भावना बुझाओल गेलनि ।

संसदक अधिवेशन चलि रहल छल, तेँ ओ चोट्टे आबि नहि सकैत छलाह । छलाह ओ अपना पाटीक दबंग नेता । संसदमे जा कऽ ओ सोनमतिया नामक एक ग्रामीण महिला द्वारा एकटा मातृहीन पठरूकेँ अपन दूध पिआ कऽ पोसबाक चर्चा करैत एकरा महान् मानवीय आदर्श सिद्ध कयलनि । सरकारसँ माँग कयलनि जे एहिपर सरकार किछु करय । हुनक भाषणसँ सौंसे संसद अभिभूत भऽ उठल । आनो-आन पाटीक लोक हुनक समर्थन कयलकनि । सरकार दिससँ तत्काले उत्तर देल गेल जे सोनमतीदेवी द्वारा पोसल गेल छागर मानव ओ पशुक मध्य भावनात्मक सम्बन्धक प्रतीक रूपमे राष्ट्रिय धरोहर घोषित कयल जाइत अछि। सरकार दिससँ ओकर सुरक्षा आ घास-पानिक व्यवस्था कयल जायत । ओकरा कोनहु प्रकारक आघात करब दण्डनीय अपराध होयत । जहिया ओ छागर स्वाभाविक रूपेँ मरत, तहिया ओकर पार्थिव शरीरकेँ रासायनिक प्रक्रियासँ सुरक्षित कऽ राष्ट्रिय संग्रहालयमे राखल जायत । मातृरूपा महती नारी सोनमतीदेवीकेँ हुनकहि गाममे सरकारक पर्यावरण-मन्त्री स्वयं जाय हुनका 'प्राणी माता'क रूपमे सम्मान करथिन । एहिलय तिथि सेहो निर्धारित भऽ गेल ।

इलाका भरिमे उत्साहक लहरि आबि गेल । टीसनसँ गाम धरिक सड़कक मरम्मति होअऽ लागल । गामक गल्ली-कुच्ची साफ भऽ गेल । गामक भङठल कल सबमे वाशर लागि गेल । कलक टूटल चबूतरा बनि गेल । सोनमतिया आ ओकर नुनुआँ छागरक सम्मान करबाक दिन लगिचायल जाइत छल । तैयारीमे तेजी होइत जाइत छल । बढ़मथानक बड़का परतीक झाड़-झंखाड़ काटि, छीलि-छालि कऽ सरिआम आ चिक्कन कयल जा रहल छल । मन्त्रीजी दस बजे आबि जयताह । मुखियाजीक ओतऽ मन्त्रीजी ओ अन्यान्य नेतागण दुपहरमे भोजन करताह । बेरुक पहर मन्त्रीजी सोनमतीदेवीक सम्मान करथिन, नुनुआँ छागरकेँ राष्ट्रिय धरोहर घोषित करताह, भाषण करताह आ चल जयताह ।

सुखलालक बड़की पितिआइनिकेँ ई सब नहि सोहा रहल छलैक । ओ तँ छागरकेँ बेचऽ चाहैत छलि । छओ-सात सयसँ अधिके दाम पयबालय टक लगौने छलि । मुखियाजीक अपन एकटा खास आदमी बड़की पितिआइनिकेँ कहियो देलकैक - गय ! मुखियाजी ओतेक कहलकौ छागर बेचऽलय तँ कहलही जे सात सयसँ कममे बेचबे ने करब । आब लैत रह सात सय ठनठनौआ !'

बड़की पितिआइनिकेँ पोसल-पालल छागर हाथसँ बेहाथ होइत बूझि पड़लैक । छागर बेस छेटगर-मँसुगर भऽ गेल छलैक । आब ओकरा मायक दूधक कोनो प्रयोजन नहि रहि गेल छलैक । तेँ बड़की पितिआइनि सोनमतियासँ छागरकेँ दूरे राखऽ चाहैत छलि; तेँ ओ सोनमतियासँ बलहुँ झगड़ा करबालेल वृत्त रहैत छलि । छागरकेँ घेरि-बान्हि कऽ रखबामे फिरीसान रहैत छलि ।

छागर मुदा आब छिट्टातर झाँपि कऽ राखऽवला रहि नहि गेल छलैक । बड़की पितिआइनि छागरकेँ कतबो बान्हि-छेकि राखय ओ सोनमतियाक अहट पबितहि सब बान्ह-छान तोड़ि-ताड़ि सोनमतिया लग आबि कऽ ओकर मुँहसँ थुथुन सटा कऽ मेँ-मेँ करऽ लगैत छल । सोनमतिया ओकरा दुलारसँ कोमल घास खुआ दैत छलि । छागर फेर सोनमतियाक चारू कात कूदऽ, फानऽ आ मकऽ लगैत छल ।

आइ सोनमतियाकेँ बेरुक पहर मान-सम्मान होइतैक तेँ फुरसति नहि रहितैक । घास नहि अनैत तँ माल-जाल उपास पड़ि जैतैक । तेँ खूब भोरे ऊठि कऽ घास करऽ चल गेलि । तेँ छिट्टा भरि घास कऽ सबेरे चलो आयलि । छिट्टाक घास आङनमे पटकलक आ सोर कयलक- कहाँ छेँ रे नुनुआँ ।'

मुदा नुनुआँ ओकरा लग नहि अयलैक । सोनमतियाकेँ छगुनता होअऽ लगलैक । एमहर-ओमहर ताकि-हेरि कऽ ओ बड़की पितिआइनिकेँ जा कऽ पुछलकैक- हय बड़की काकी ! नुनुआकेँ नै देखै छिअइ । कतऽ छै ?'

बड़की पितिआइनि तुरछल बोल कहलकैक- कतऽ छै से हम की जानऽ गेलिअइ ? भोरे-भोर तँ तोरे फट्टकमे हुदुक्का मारऽ जाइ छौ ।'

सोनमतिया कननमुँह होइत बाजलि – हम तँ आइ भोरगरे घास करऽ बोन चल गेल छलिअइ ।'

बड़की पितिआइन बमछि कऽ गारिक तऽर करऽ लगलैक – गय धोँछी ! निमझानी ! समङ्गाडाही ! हमरा छागरकेँ अपना कऽ खेल-बेल कयलेँहेँ आ पुछै छेँ नुनुआँ कतऽ छौ ?'

सोनमतियाक जी हदरि गेलैक । ओहि ठामसँ घूमि गेल । लोकक बाड़ी-झाड़ीमे ताकऽ लागलि । ओ जोर-जोरसँ सोर करऽ लागलि – कहाँ छेँ रे नुनुआँ ? अर्र, लिह, लिह ! अर्र, लिह, लिह !'

बाटमे जैह भेटैक तकरे पूछि दैक- नुनुआँकेँ देखलहक अछि ?'

-नहि' उत्तर सूनि निराश भऽ कऽ फेर ताकऽ लागय ।

इनारमे हुलकी दऽ कऽ देखलक, कतहु ओहिमे खसि तँ नहि पड़लैक ! पोखरिमे जाकऽ तकलक डूबि तँ ने गेलैक ! सोनमतियाक जी हदरल जा रहल छलैक । ओ बुकौर लागल स्वरेँ जोर-जोरसँ चिचिआय लागलि – कहाँ छेँ रे नुनुआँ ! कहाँ छेँ रे नुनुआँ ।'

तकैत-तकैत दुपहर भऽ गेलैक । सोनमतिया बेहाल भेल बौआइत रहलि । बाटमे अपने टोलक एकटा लोक बाधसँ चल अबैत भेटलैक । ओकरो पुछलकैक – ओमहर नुनुआँकेँ देखलहक अछि ।'

ओ कहलकैक- गय सोनमतिया भौजी ! राति खन झोलफलमे मुखियाजीक खास आदमीकेँ तोरा बड़की पितिआइनिसँ गप्प करैत देखने छलियौ । किदन, सय-सैकड़ाक गप्प होइ छलै । कतौ नुनुआँकेँ तोहर पितिआ सासु बेचि तँ ने देलकौ ।'

सोनमतिया छाती पीटि-पीटि कऽ हाक्रोश कऽ उठलि ।

गाममे धूरा उड़िया रहल छल । मन्त्रीजी, एमपी, एमेले आ आन-आन नेतागण आबि गेल छलाह । मुखियाजीक दलानमे सभक भोजनक व्यवस्था छल । एक बेरमे पचास-साठि गोटे भोजन कऽ सकैत छल । पहिल खेपमे मन्त्रीजी ओ विशिष्ट लोक भोजन करताह । फेर दोसर-तेसर खेपमे आन-आन लोक खैतय । ओहि ठाम छल कार्यकर्त्ता आ परसनिहार बारिक सब । बाहरी लोकक प्रवेश वर्जित छल, तैयो बहुतो तमसगीर खरिहानमे आबि कऽ जमा भऽ तमासा देखि रहल छल ।

भोजनक पाँतीमे, बीचमे मन्त्रीजी छलाह । दुनू कात क्षेत्रक एमपी आ एमेले बैसल । फेर आन-आन लोक । मन्त्रीजी मुखियाजीकेँ सेहो बैसबाक आग्रह कयलथिन । पाँतीक बीचमे थोड़ेक घुसुक-फुसुक कऽ मुखियाजीकेँ सेहो बैसाओल गेलनि । पातपर

भाँति-भाँतिक भोज्य सामग्री परसल गेल- फुलकी, पोलाओ, माछ, माँसु, मधूर दही आ चहटगर तरकारी, अँचार; सभक व्यवस्था कयल गेल छल । भोजन आरम्भ भेल । सब खाइत-खाइत विभिन्न वस्तुक प्रशंसा करथि । खास कऽ माँसु बड़ स्वादिष्ट बनल छल । मन्त्री, एमपी, एमेले साहेब आ मुखियाजीक पातपर तरल करेजी अहगरसँ देल गेल छलनि । ओहिमेसँ एक गोटे बजलाह - हे ! एहन सोअदगर माँसु तँ आइ धरि कहियो ने खयने छलहुँ .... ।'

तावत तमसगीरक पछिला भागसँ एकटा नारी कंठक चीत्कार सूनऽमे आयल । लोक सभ पाछाँसँ ढनमना-ढनमना खसऽ लागल । लोकक भीड़केँ ठेलैत-ठालैत, छाती पीटैत सोनमतिया आबि रहलि छलि । चारि पाँचटा युवक ओकरा पकड़ि कऽ रोकबाक चेष्टा कयलक । मुदा सोनमयिा सबकेँ झमाड़ि कऽ ठेलि देलक । ओकर फूजल केश उधिया रहल छलैक । देहपरसँ आँचर खसि कऽ नीचाँ पाछाँ दिस लेटा रहल छलैक । ओ अपन उघार छातीकेँ दुनू हाथक तरहत्थीसँ पीटैत चिचियाइत जा रहल छलि - कहाँ छेँ रे नुनुआँ ! कहाँ छेँ रे नुनुआँ !'

सोनमतिया दलानक निचला सीढ़ी लग आबि कऽ तराँहि दऽ खसल आ सीढ़ीपर अपन माथ पटकऽ लागलि । फेर चिचिया कऽ विलाप करैत बाजऽ लागलि - दैवा रे दैवा ! डकूबा सब हमर नुनुआँ मारि कऽ खा जाइ गेल, रे दैवा ! नुनुआँ रे नुनुआँ ।'

ओ पाँतीमे बैसल लोक सबकेँ अपन उघार छाती देखा कऽ पीटैत बाजलि- रे रछच्छा सब ! हम एही छातीक दूध पिआ कऽ नुनुआकेँ पोसने छलिअइ ! एही छातीक दूधसँ नुनुआक देहक लीधुर आ माँसु बनल छलै ! रे रकसबा सब रे रकसबा सब ! मनुक्खेक माँसु सवादि कऽ खेबाक छलौ तँ अपन बेटाकेँ मारि कऽ ओकर कोँढ-करेज किए ने खाइ जाइ गेलेँ... ।' ओ विलाप करऽ लागलि- तोरा मारी कऽ खाइये गे... ल. ..उ... रे... नू... नू... आँ... अँ हँ हँ.....!!!

स्तब्ध मन्त्रीजीक हाथक कओर हाथेमे रहि गेलनि । ओही संग पाँतीमे बैसल लोकक हाथ सेहो रुकि गेलैक । दलान आ खरिहानमे करमान लागल कार्यकर्त्ता आ तमसगीर सब ठकुआयल सोनमतियाकेँ देखि रहल छल- आइ एही प्राणीमाता सोनमतीदेवीक मान-सम्मान करबालेल एतेटा आयोजन भेल छल । जकरा दुआरेँ सोनमतियाक अभिनन्दन होइतैक तकरालय ओ अहुछिया कटैत छलि- कहाँ छेँ रे नुनुआँ ....!

[लेखन- 13 मार्च 2003, प्रकाशन- भारती मंडन, अंक - 10]



एक निमूधनक आत्मकथा

एहि खुट्टापर अयना कतेक बरख भऽ गेल तकर ठेकाने ने अछि। जहिया आनल गेल रहय तँ हम एकदम नवकवेर रही। जखन हम दुदन्त भेलहुँ तँ हमर पहिलुक पोसिन्दा हमरा डोरी लगा कऽ हाटपर अनने छल। हम ई नहि बुझलिऐ जे हमरा बेचऽलय हाटपर अनने छल। हम तँ बुझलहुँ जे चरबऽलय खेत दिस लऽ जा रहल अछि। तेँ हम बड़ उछाहसँ चलल रही। मुदा हाटपर देखलिऐ बहुत रास गाय, महीस, बड़द, बाछा, बकरी, घोड़ा सभक मेला।

लोक आबय, मुँह खोलय, दाँत देखय। फेर नाङरि ऐंठि दिअय। नाङरि ऐंठने हमरा दुखाय लागय आ हम छड़पि उठी। देखनिहार सब हमर पोसिन्दासँ थोड़ेक काल जोर-जोरसँ गप्प करय आ दोसर माल देखऽ चल जाय। अन्तमे जाहि खुट्टापर एते दिनसँ छी तकर मालिक दू-तीन गोटेक संग हमरा लग आयल। देखबामे हमरा भलमानुष लागल। ओ हमर पोसिन्दाकेँ पुछलकै - कय दाँत?'

-दू दाँत सरकार!' पोसिन्दा बाजल।

मालिक हमरा किल्होरिपर हाथ रखलक आ हमर पीठ सोहराबऽ लागल। हमरा, से नीक लागल। हम एहि बेर छड़पलहुँ नहि, खाली देह सिहरा देलहुँ। हमर रंग, हमर हाड़-काठ, हमर सिंघौटि मालिककेँ पसिन्न पड़ि गेलैक। ओ पोसिन्दासँ दाम-दोगाओन करऽ लागल। आखिरमे दाम पटि गेलै। मालिक एक मुट्ठा नोट गनि देलकै। पोसिन्दा नोट लऽ कऽ धोतीक खूटमे बन्हलक आ हमर डोरी मालिककेँ धरा देलकै। हमरा ओकरा संग चलबाक मोन नहि होइत छल मुदा तैयो चलऽ पड़ल।

मालिक सबसँ पहिने हाटेपर एक छिट्टा घास कीनि हमरा आगाँ राखि देलक। हम भिनसरेसँ किछु खयने नहि छलहुँ। भूख लागल छल तेँ हबर-हबर हबक्का मारि कऽ खाय लगलहुँ। घास खयलाक बाद मालिक हमरा नमबैलय पोखरिमे लऽ गेल। भरि छाक पानि पीलहुँ। मोन अघा गेल।

मालिक तीनू जन हमरा हँकने-हँकने अपन गामपर लऽ अनलक। काठक तामामे दूबि, अच्छत आ जल लऽ गिरथाइन हमर सींघ आ खुर पुजलनि। फेर कल जोड़ि कहलनि- हे महादेव! अहाँ सगुनिआँ भऽ कऽ हमरा खुट्टापर रहब।'

एना भऽ कऽ पहिलका पोसिन्दाक घरवाली कहाँ कहियो बजैत छलि । ओ तँ सब दिन अपन घरवलाकेँ खोभाटैत रहैत छलै जे– सब दिन एकरा छिल्ला घास खिअबैत रहू । कहै छै खाँटी बछौड़िआ नसल के छइ तँ हाट चढ़ा कऽ बेचि ने अबौ । ओइ रुपैआसँ घरक आन काज सब करब । आब कते दिन खुट्टापर बन्हने रहतै ?'

नवकी गिरथाइनिक बोल सुनि जेना हम विभोर भऽ गेलहुँ । हम पहिलका पोसिन्दाकेँ बिसरऽ लगलहुँ ।

मालिक हमरा आनि कऽ खुट्टामे बान्हि देलक । दोसर खुट्टामे पहिनहिसँ एकटा आर भैआरी बान्हल छल । हमरासँ उमेरमे बड़ जेठ तेँ हम ओकरा बड़े भाइ कहऽ लगलिऐ । ओ हमरा देखिते हफऽ लागल । मालिक नादिमे भुस्सा आ कोड़ाइ मिला कऽ सानी बना देलकै । हम भरि बाटक थाकल–भुखल छलहुँ तेँ हाँञि–हाँञि खाय लगलहुँ । मुदा बड़े भाइ हमरा हुरपेटिकऽ अपने खाय लागल । हम सहमिकऽ पाछाँ हटि गेलहुँ । फेर हमहूँ खायब सुरू कयलहुँ बड़े भाइ फेर हुरपेटा मारलक । हमरा बड़ तामस भेल । हमहूँ ओकरा पेटमे दुनू सींघ अड़ाय हुरपेटने–हुरपेटने नादिसँ दूर ठेलि देलिऐक । मालिक 'हाँ हाँ' करैत दौड़िकऽ आयल आ हमरा दुहूकेँ डँटैत ठेलिकऽ फराक कयलक । ओ हमरा ओ ओकरा दुहूकेँ पीठि पोछि थपथपा देलक ।

बड़े भाइ गुम्हड़ि कऽ हमरा दिस तकलक जेना कहैत हो जे– बौआ ! एखन जुआनीक जोश देखबै छेँ । बूझि पड़तौ हट्ठामे ।'

दोसर दिन हरबाह बड़े भाइ आ हमरा कान्हपर पालो आ हरखाड़ा टाङि कऽ खेतपर लऽ गेल । ओहि ठाम हर लाधल गेल । हरवाह लागनि पकड़ि कऽ होहकारी दऽ कऽ हाँकऽ लागल । हम ठाढ़े रहलहुँ । हमरा कान्हपर पालो पड़ल छल से भारियो लगैत छल, गुदगुदिओ लगैत छल । हरवाह हमर नाङरि पकड़ि कऽ ऐँठि देलक । हम एके बेर छड़पि पालो पटकि देलहुँ आ खेतमे चारू कात मकऽ लगलहुँ । हरवाह, मालिक आ एकटा जऽन तीनू मीलि कऽ हमरा घेरि कऽ पकड़लक आ फेर पालो कान्हपर राखि हरमे जोति देलक । एहि बेर जोतीकेँ हमरा गरदनिसँ लपेटि पालोक कनैलमे बान्हि देलक ।

बड़े भाइ शान्त ठाढ़ छल । हमरा दिस तकैत जेना कहैत हो – बाउ, एतबेमे छड़पै छेँ ? सब सेखी ने घोसरि जेतौ ।'

हरबाह फेर टिटकारी दैत एक पयना पीठपर बैसा देलक । हम पालो पटकि देबाक कोसिस कयलहुँ । मुदा गरदनि पालो संग फसल छल । हम लुद्द दऽ बैसि गेलहुँ । हरबाह हमरा दू–तीन बेर पयनासँ हुरेठलक – उठ, उठ ।' दू पयना मारबो कयलक । हम देहकेँ और पाड़ि देलहुँ । उठबे ने करी ।

हरबाह मालिककेँ कहलकै – अओ मालिक ! अहाँ तँ हाटपर ठका गेली । बड़द हिछनर अछि । एकरासँ खेती नहि होयत । एहि कोढ़िआठ बड़दकेँ खुट्टा परसँ हटाउ ।'

मालिक बाजल– बड़द तँ बड़ पनिगर छै । पानिसँ रत-रत करै छै । पहिल बेर हरमे जोतयलैए तेँ एना करै छै । कने रितिआय दही ।'

हरबाहक 'हिछनर' कहब हमरा बड़ अधलाह लागल । हम कोढ़िआठ ? हम कामचोर ? हरबहबा हमरा बुझलक की ?'

मालिक हमरा लगमे आयल । देहकेँ हँसोथलक से हमरा नीक लागल । ओ पीठ थपथपौलक । फेर गरदाम आ नाथ पकड़ि कऽ उठबैत कहलक– उठ बाउ ।'

हम फुरफुरा कऽ उठि गेलहुँ । एहि बेर हरबाह हँकलक आ हम हर बहऽ लगलहुँ । आ बहैत रहलहुँ । हरबाह एक बेर 'हे हे' कहय तँ हम चारि धाप बढ़ि जाइ आ बड़े भाइ पाछुए रहि जाय ।

दुपहर बितलाक बाद खुट्टापर अयलहुँ तँ बड़ थाकि गेल छलहुँ । एहन काज कहियो कहाँ करऽ पड़ल छलय । पहिल पोसिन्दाक ओतऽ तँ बस, खो मंगला पड़ल रह । कोनो चिन्ता-फिकिर नहि ।

बड़े भाइ बड़ कुटिल दृष्टिसँ हमरा दिस तकैत छल, जेना कहैत हो– आब कहू मन केहन लगैए ?' हम मरमसि कऽ रहि गेलहुँ ।

मुदा बड़े भाइ तते खराब नहि छल जते हम बुझैत छलिऐ । रातिमे जखन बैसल दुनू गोटे पाजु करै छलहुँ तखन बड़े भाइ अपन थुथुन हमरा थुथुनमे रगड़ऽ लागल जेना कहैत हो – बाउ, बड़ ठेहिआ गेलेँ ? पहिल दिन छलौ ने ! घट्ठा-पिट्ठा पड़ि जेतौ तखन नै थकबेँ । बड़द बहनहि बड़िया ।'

ओ अपन जीहसँ हमर देह चाटऽ लागल । हमरा ओकर चाटब बड़ नीक लागल । संगक सुख एतेक नीक होइ छै पहिने कहाँ बुझने छलिऐ !

आस्ते-आस्ते बड़े भाइ आ अमर जोड़ी तेहन बैसि गेल जे गामक लोको सब प्रशंसा करऽ लागल । लऽ दऽ कऽ तीनटा तँ काज छल – हर जोतब, दाउनि बहब आ गाड़ी घीचब । से बड़े भाइ आ हमरामे तेहन ताल-मेल बैसि गेल जे कोनो काज आब भिड़हगर नहि बूझि पड़ैत छल । आन किसान सब हमर जोड़ीकेँ अपना काजमे लऽ जयबा लेल मालिककेँ खोसामद करैत रहैत छलैक । खास कऽ अगहन मासमे धान दाउनि करैलय आ चैत मासमे रब्बी दाउनि करैलय अवश्ये माङि कऽ लऽ जाइत छल । मालिककेँ जहिया अपन दाउनि नहि होइत छलै तहिया हमरा सबकेँ जाय दैत छल । मुदा संगहि चेता दैत छलैक– खबरदार ! हमरा बड़दकेँ ने एको सटका मारब, ने नाङरि ऐंठब आ ने मुँहमे जाबी लगायब वा मुँह बान्हब ।'

दाउनिमे जाइ तँ बड़े भाइकेँ मेहिआ बड़द बनाऔल जाइक आ हमरा पाटिमे जोतल जाय । हम तँ हँकैत देरी हवा-बिहाड़ि भऽ जाइ । कड़ाममे जोतल बिचला बड़द सब पछुआ जाय आ दौनिवाहक सटकाक मारि खाय । एहिलय ओ सब हमरापर कुड़बुड़ाइतो रहय । मुदा हमरालेल, बड़ौर सातीलय ।

हमर हरबाह पहिल दिन जे गंजन कयलक ततबे धरि । फेर कहियो ओना नहि कयलक । मालिक हमर सभक बड़ ध्यान राखय । साँझ कऽ घर आ भोरमे बाहर करब । थरि साफ करबा राखब । सानी, भुस्सा आ पोआर आनि कऽ देब । भिनसर दुपहर आ साँझ कऽ 'हेआ हेआ' कहैत नमायब । साँझुक पहर मच्छड़सँ बचयबालय घूर करब । जाड़ मासमे राति कऽ झोली ओढ़ा देब । ई सब काज हमर मालिक अपनेसँ करैत छल । गिरथाइन हमरा सबकेँ बड़ मानय । सब दिन एक कठौत कऽ माँड़ नादिमे ढारि जाय । एकटा कऽ रोटी खुआ जाय आ मालिक गामपर नहि रहै तँ वैह हमर खोज-पुछारि कयल करय ।

सालमे एकबेर हमर सभक पाबनि पखेब होइत छल । ओहि दिन मालिक पोखरिमे लऽ जा कऽ माँजि कऽ नहबैत छल । सींघमे तेल लगबैत छल । नव-नव नाथ, गरदाम, ठेक रङि कऽ पहिरबैत छल । देहपर गुलाबी रंगक थप्पा दैत छल । गोधन बनाओल जाइत छल । हरबाह सोन्हाओन कूटैत छल आ बेरुक पहर काँड़ीमे भरि कऽ सोन्हाओन पिआओल जाइत छल । सोन्हाओन पीबि कऽ तँ मिजाज मस्त भऽ जाइत छल । बड़े भाइ आ हम बम-बम करऽ लगै छलहुँ ।

मालिक कहल करै जे– हमर ई जोड़ा बड़द बड़ भगमन्ता अछि । एकरे खुरक प्रतापे कोठी सबमे भरल बारहो विरहिन्नी अन्न, खरिहानमे पोआरक टाल आ भुसखारमे भुस्सा अछिन्नरय अछि ।'

एना कतेक दिन बीतल से ठेकान नहि अछि मुदा सुनलिऐ एकबेर जे मालिकक सबसँ सेरगर तीन-चारि बिगहा जमीन सरकार लऽ लेलकै कोनो आफिस बनाबऽलेल । मालिकक सौंसे परिवार हाहि काटऽ लागल छलै । हमरा सभक काज एकदम कम भऽ गेल । पहिने कहियो हर कामहि नहि होइत छल । आब बेसी काल बैसाड़िए रहैत छल ।

मालिकक उमेर उतारपर भऽ गेल छलै । बेटा सब नोकरी-चाकरी करऽ लगलै । जतबो खेत बचल छलै तकरा अबाद करऽमे मालिक सकै नै छलै । तेँ सब खेत बटैया लगा देलकै । हमरा सबकेँ एकदमे बैसाड़ी भऽ गेल ।

खेती-बाड़ी नहि होयबाक कारणे पोआर-भुस्सा सेहो बेसी नहि होइत छलै । हमरा सभक घास-भुस्सामे सेहो कोताही होअऽ लागल । हमर दुनू गोटेक देह लटऽ लागल ।

बड़े भाइक उमेर बेसी भऽ गेल छलै । ओ बुढ़ा गेल छल । लटि कऽ कंक भऽ गेल । ओकरा चलऽ-फिरऽमे सेहो कष्ट होइ छलै । ओकर दुख हम बुझै छलिऐ मुदा किछु

कऽ नहि सकै छलिऐ । एक दिन मन्हुऐल पड़ले रहल । विवश आँखिसँ तकैत कहने छल जेना –बाबू ! आब हम नै खेपबौ । भूल–चूक माफ करिहेँ । जतबा सक लागउ, मालिकक नोनक सैरिअति दिहै ।'

बड़े भाइ आँखि मूनि लेलक । मालिक आबि कऽ ओकरा देखलकै । ओकर आँखि नोरा गेलै । ओ दुनू हाथसँ हमर थुथुन पकड़ि कऽ कहलक– महादेव, तोहर यार चल गेलह ।'

लोक सब बड़े भाइक देहकेँ बाँसमे टाङि कऽ लऽ गेलै । हम उदास आँखिएँ देखैत रहलहुँ । कोँढ़ फाटऽ लागल तँ बड़े भाइक खुट्टामे अपन देह रगड़ऽ लगलहुँ । भेल जेना खुट्टामेसँ बड़े भाइ बजैत हो– आब कहू मन केहन लगैए ।' आँखिमे नोर भरि गेल ।

हमर उमेर बेसी भऽ गेल जरूर । लटियो गेल छलहुँ मुदा अथबल आ कोढ़ियाठ नहि भऽ गेल छलहुँ । जोड़ी लगलापर एखनो ओहिना हर बहि सकै छलहुँ, गाड़ी घीचि सकै छलहुँ, दाउनि कऽ सकै छलहुँ । मुदा भऽ गेलहुँ एकसर । एकसरे की कऽ सकितहुँ ? एकसर तँ बेरस्पतियो झूठ । उदास, झूर–झमान भेल झखैत रहैत छलहुँ । लोकक खोजो–पुछारि कम भऽ गेल छल । मालिककेँ जे सक लगै छलै, से करै छल ।

एक दिन मालिकक बेटा–पोता सब जुटल छल । सब अपनामे विचार करै छल जे– खेती–बाड़ी आब अपने करै नै छी । तखन ई एकाढ़ बड़द राखिकऽ छुच्छे घास–भुस्सा जोड़ैत रही ताहिसँ कोन फल ? गाय–महींस तँ ई छीहे ने जे दूध हेतै कि पालि बढ़तै । तेँ जे दाम दिअय ताहिमे एकरा बेचि देल जाय ।' मालिक चुपचाप सुनैत रहल । हमरा सूनि कऽ बड़ तामस भेल मुदा खुरछाही काटब छोड़ि और की कऽ सकैत छलहुँ !

ओही दिन एकटा खरिदवाल आयल । मोल–मोलइ भेल आ ओ मालिककेँ एक मुट्ठी टाका देलकै । मालिक हमर रस्सी खोलि कऽ खरिदवालक हाथमे दऽ देलकै । माल–जाल बेचनिहार खरिदवालकेँ अपन मालक रस्सी नहि दै छै । मुदा ई अलच्छ हमर रस्सी सेहो दऽ देलकै ।

हमरा खरिदवाल लऽ कऽ चलऽ लागल तँ हम थोड़ेक मूड़ी पाछाँ दिस घिचलहुँ । मुदा आखिरकार ओकरा पाछाँ–पाछाँ घिचाइत जाइए पड़ल । हम रस्ता भरि हकन्न कनैत रहलहुँ । सोचैत रहलहुँ जे ककरालेल जिनगी भरि बहैत रहलहुँ ? नोनक जे सैरिअति दैत रहलिऐ तकर यैह फल ? पीबि लेलहुँ आ ओँघरा देलहुँ ?'

खरिदवाल अपना खुट्टापर लऽ जा कऽ बान्हि देलक आ एक पाँज पोआर आनि कऽ आगाँमे धऽ देलक । खायब की कपार ? मोन पड़ि गेल गिरथाइनिक कयल चुमान आ विनती ।

राति भऽ गेल । निसबद भऽ गेलै । हमरा खुट्टामे बान्हल–बान्हल कछमच्छी उठि

गेल । हम जिनगीमे कहियो रस्सी नहि तोड़ने छलहुँ । मुदा आइ नहि रहल गेल । हम पूरा जोर लगा कऽ रस्सी तोड़ि लेलहुँ । भरि बाट हम ठेकनबैत आयल छलहुँ से राता-राती पड़ायल-पड़ायल अपन मालिकक खुट्टापर चल अयलहुँ ।

भोरमे अपना खुट्टापर हमरा देखि मालिकक परिवारक लोक घौंचाल करऽ लागल। मालिक सेहो हमरा लग आबि पीठपर हाथ दैत कहलक– पड़ा कऽ चल एलही ?' ओकर मुखड़ापर हमरा तामसक बदला हुलासेक भाव बूझि पड़ल । बेटा सब विचार करऽ लागल जे- बड़दकेँ कोनो आदमी द्वारा हँकबा कऽ खरिदवालक ओतऽ पठबा देल जाय । तावत हकासल-पिआसल पिठिआठोक खरिदवाल सेहो हमरा तकैत-तकैत ओतऽ पहुँचि गेल । हमरा तँ भेल जे एक हुरपेट दिऐ ओकरा ।

ओ हमरा हाँकि कऽ, लऽ चलबालय सुरफुराय लागल कि मालिक आङनसँ आयल । ओ रुपैयाक मुठड़ा खरिदवालकेँ दैत कहलकै- अओ बाबू । ई बड़द अहाँक खुट्टापर नहि रहत । आब एकरा हम नहि बेचब । अहाँ अपन टाका आपस लऽ लिअऽ ।'

मालिकक बेटा सब जोर-जोरसँ बाजऽ लगलै – ई की करै छी बाबू ! बिकायल बड़द आपस किए लेबै । जाहिसँ कोनो फयदा नहि होयत तकरा खुट्टापर बान्हि कऽ रखबामे कोन बुधियारी !'

मालिक हमर गरदाम पकड़ि कऽ बाजल- बौआ ! जाबत सामर्थ्य छल, अर्जनक शक्ति छल तावत अरजि-अरजि अहाँ सभक पालन-पोषण करैत रहलहुँ । आब ओ सामर्थ्य नहि रहल । आब हम कोनो लाभ नहि दऽ सकैत छी तँ की हमरा बैला देब ? इहो भरि जिनगी अहाँ सभलय बहैत रहल । एतेक धन-सम्पत्ति अरजि देलक । आब एकर शरीर थौसि रहल छैक । कोनो लाभ नहि दऽ सकैत अछि तेँ किछु टाकाक बदलामे बेचि कऽ हाँकि दिऐक से उचित अछि ? ई निमूधन अछि, बाजि नहि सकैत अछि । मुदा बुझैत छैक सब किछु । तेँ ने पड़ा कऽ अपना खुट्टापर फेर चल आयल । जावत हम जीबैत छी ताबत ई हमरे खुट्टापर रहत । हमरा बाद जे करी ।'

मालिक फेर हमरा हाँकि कऽ बैला देत, से सोचि कऽ हमर सौंसे देह काँपऽ लागल छल । रोइयाँ सब ठाढ़ भऽ गेल छल । मुदा, मालिकक बोल सूनि कऽ जेना हमर अंग-अंग कृतज्ञतासँ भरि गेल । जँ मनुक्ख रहितहुँ तँ मालिकक गरदनि पकड़ि कऽ भरि पोख कनितहुँ । हम अपन कृतज्ञता देखयबाकलेल मालिकक पैर चाटऽ लगलहुँ आ मालिक हमर देह सोहराबऽ लागल ।

[लेखन- 10 अप्रैल 2001, प्रकाशन- रचना, जनवरी-मार्च 2003]



उपकारक बदला

सोमन गरीब लोक छल । ओ बूढ़ भऽ गेल छल । गुजर हेतु ओ किछु किछु धन्धा करैत रहैत छल । गरमी मास अबैत छलैक तँ ओ ताड़क पंखा बेचि-बेचि कऽ अपन परिवारक पालन-पोषण करैत छल ।

गरमी मासमे भरि दिन कचहरी, बजार आ मोहल्ला सबमे घुमि कऽ पंखा बेचैत छल । मुदा दुपहरमे जखन लोक अपना घरमे आराम करैत रहय तँ ओकर पंखा नहि बिकाइक । तेँ ओ दुपहरमे एकटा गाछ तर आबि कऽ विश्राम करय । जखन बेर खसैक । गरमी कम होइक तँ फेर पंखा बेचऽ चल जाय ।

दुपहरमे विश्राम करऽ आबय तँ पंखा बिकायल रहैक ताही पैसामेसँ किछु निकालि लेअय । ओहि पैसासँ बजारसँ खयबाक वस्तु कीनि कऽ लेने आबय । कहियो मुरही, कहियो फुटहा । कहियो कचुड़ी तँ कहियो गुलगुल्ला कीनि लेअय । ओहि गाछ तर आबि खा लेअय । लगमे एकटा कल रहैक, ताहिसँ पानि पीबि लेअय आ पड़ि रहय । नित्य दिन ओ एहिना करय ।

एक दिन दुपहरमे गाछ तरमे बैसल रहय । जलखैक पोटरी खोलबाक सूरसार करैत रहय । ओहि गाछसँ किछु दूर हटि कऽ एकटा पुरान गाछी छल । ओहिमे बानर सभक बसेरा छलैक । ओहिमेसँ एकटा गोढ़िलबा बानर गाछसँ थोड़ेक दूरपर आबि कऽ बैसि रहल । बानर सेहो सोमने जकाँ बूढ़ भऽ गेल छल प्रायः । ओ सोमन दिस टुकुर-टुकुर तकैत रहय । सोमनकेँ ओकरापर दया आबि गेलैक । ओ अपन आगूसँ दूटा गुलगुल्ला उठा ओकरा दिस फेकि देलकैक । बानर लपकि कऽ गुलगुल्ला उठा लेलक आ खा गेल ।

आब नित्य दिन दुपहरमे सोमनक अयलापर ओ बानर आबि कऽ बैसि रहय । सोमनो अपना लग जे खयबाक वस्तु रहैक ताहिमेसँ किछु ओकरा दिस फेकि दैक । बानर खा लेअय । खा कऽ गाछीमे जाय कोनो गाछपर छड़पि जाय । सोमन सेहो पानि पीबि कऽ पड़ि रहय ।

एक दिन सोमन आयल तँ ओ मन्हुआयल छल । ओकर एकोटा पंखा नहि बिकायल छलैक । पैसा छलैक नहि, तेँ खयबालेल किछु कीनि नहि सकल । ओमहर,

बानर सेहो आबि कऽ बैसि गेल छल। सोमन कऽलपर गेल आ छुच्छे पानि पीबि लेलक। गाछतर आबि पड़ि रहल। बानर ओकरा दिस टुकुर टुकुर तकैत रहल।

सोमन पड़ले पड़ल बानर दिस तकैत बाजल – हौ हनुमानजी ! आइ तँ पंखा नहि बिकयलह तेँ खाइलय किछु ने अनलियह। तोरा की दियह ? आइ तँ गामोपर लोक ठक दऽ उपासे पड़त। आइ तोहूँ सन्तोष करह।'

बानर ओहिना देखैत रहल, जेना कहैत होइक – की करबहक ? एहिना होइत छैक।'

सोमनकेँ भूख तँ खूब लागल छलैक। मुदा करितय की ? आँखि मूनि लेलक आ मन मारि कऽ पड़ि रहल। सिरमामे पंखाक मोटा राखल छलैक। बानरो दूरपर बैसले छल।

अचानक बानर उठल। कुदान मारलक आ पहुँचि गेल पंखाक मोटा लग। जाबत सोमन धड़फड़ा कऽ उठि कऽ बैसय, ताबत बानर दूटा पंखा घीचि लेलक। सोमन हे हे हे ! करैत रहि गेल आ बानर एक हाथमे पंखा लेने तीन टाङपर छड़पान दैत चल गेल।

सोमन ओकरा थोड़ेक दूरपर सड़क कातक डेरा दिस जाइत देखलक। ओकरा खेहारल पार नहि लगितैक। सोमन बड़ दुखी भेल। मने मन सोचलक–कहू, एक तँ आइ पंखा नहि बिकायल आ ताहिपरसँ ई बनरबो दूटा पंखा लऽ गेल। आब एकरो घाटा पुराबऽ पड़त। सोमन करितय की ? छगुनतामे पड़ल पड़ि रहल।

थोड़ेक काल बीतल होयतैक। ओ बानर पंखा लऽ कऽ जेम्हरे गेल छल ओम्हरेसँ अबैत देखि पड़ल। ओ तीन टाङपर छड़पान दैत आबि रहल छल। ओकरा हाथमे बेस नमहर डम्हायल एकटा अनरनेबा छलैक – आधा पीयर आ आधा हरियर।

बानर सोमनसँ कनेक हटिए कऽ ठाढ़ भेल आ अनरनेबा सोमन दिस गुड़का देलक।

सोमनकेँ ताबत आँखि लागि गेल छलैक। बानर सोमनकेँ निश्चिन्त देखि एके बेर खोँखियायल। एहिपर सोमनक आँखि फूजि गेलैक। ओ बानरकेँ अनरनेबा गुड़कबैत अझक्के देखलक। ओ उठि कऽ बैसैत बाजल– हौ हनुमानजी ! ई कतऽसँ लऽ अनलहक ?'

सोमन एक बेर बानर दिस देखलक, फेर अनरनेबा दिस देखलक। मुदा ओ अनरनेबाकेँ छुइलक नहि। बानर थोड़ेक काल ओहिना बैसल रहल। फेर सोमनपर खोँखिया कऽ दौड़ल। सोमन डेरा उठल। बानर खोँखियाइते आयल आ अनरनेबाकेँ सोमनक आओर लऽग कऽ गुड़का देलक आ अपन जगहपर जाकऽ बैसि गेल। ओ चंचल आँखिएँ सोमन दिस ताकऽ लागल।

सोमन डेराइत-डेराइत हाथ बढ़ा कऽ अनरनेबा उठा लेलक। सोमनकेँ अनरनेबा उठबैत देखि कऽ बानर जेना आश्वस्त भऽ गेल। बानरकेँ स्थिर देखि सोमन

डाँड़सँ चक्कू बहार कयलक । अनरनेबाकेँ छिललक । ओकरा चारि फाँकि कयलक । एकटा फाँक बानर दिस फेकलक । बानर लप दऽ अनरनेबाक फाँक लोकि कऽ खाय लागल । सोमन सेहो बाँकी अनरनेबा खयलक । अनरनेबा पैघ छलैक ततेक जे ओकरा पेट भरि गेलैक ।

सोमन सोचलक- चलू, बनरबा दूटा पंखा लऽ गेल तँ पेटो तँ भरि देलक । बूझब जे पंखाक दाम सधि गेल । ओ बिचारैत रहल जे बानर हमर उपकारक बदलामे आइ उपकार कयलक अछि, ने तँ आइ भरि दिन भुखले रहऽ पड़ैत । बानर अनरनेबा खा कऽ चल गेल गाछी दिस । ठंढ़ा भेलैक तँ सोमन सेहो पंखाक मोटा उठा कऽ विदा भेल फेर पंखा बेचबाकलेल ।

आगाँ, सड़क कातमे बेस नमहर डेरा छलैक । ओहि ठाम दऽ जाइत सोमन आने दिन जकाँ टाहि देलक-पंखा लियऽ पंखा ।'

-हौ पंखाबला !' डेरासँ केओ सोर कयलकैक ।

सोमन फाटक खोलि डेराक भीतरमे गेल । ओहि ठाम एकटा भद्रपुरुष ठाढ़ छलाह । ओ सोमनकेँ बरंडापर फेकल पंखा देखबैत पुछलथिन- ई दुनू तोहर पंखा थिकह हओ ?'

सोमन बाजल - जी सरकार ।'

भद्रपुरुष बजलाह - ई एकटा बानर फेकि गेलह अछि । लऽ जाह अपन पंखा ।'

सोमन चारूकात तकलक । एक दिस तीन-चारिटा अनरनेबाक गाछ देखलक । ओहिमे डम्हायल-डम्हायल फल सब गस्सल छलैक । सोमन पुछलकनि- सरकार, बानर अनरनेबा सेहो तोड़लक की ?'

भद्र पुरुष बजलाह - हँ हौ, पंखा एहि ठाम फेकिकऽ गाछपर छड़पि गेल आ एकटा अनरनेबा तोड़ने चल गेल ।'

सोमन बाजल- सरकार, तखन ई पंखा हम नहि लेब ।'

-किएक हौ ?' भद्रपुरुष पुछलथिन ।

-सरकार, ओ बानर पंखा दऽ कऽ बदलामे अनरनेबा लऽ गेल ।'

सोमन बाजल - ई अहाँ राखि लियऽ । हमरा एकर दाम भेटि गेल ।'

भद्रपुरुषकेँ बानरक क्रिया आ पंखाबलाक उत्तरपर बड़ आश्चर्य भेलनि । ओ विस्तारसँ बात बूझऽ चाहैत छलाह । तखन सोमन बानरक आन दिनक वृत्तान्त ओ आजुक घटना कहि सुनौलकनि ।

भद्रपुरुष औरो आश्चर्यित भेलाह । ओ बजलाह – हौ पंखाबला ! जखन बानर सन बनैया जन्तुकेँ एतेक विवेक भेलैक, तँ हम तँ मनुष्य छी । बानरक स्वभाव छैक गाछक फल खायब । तोहर पंखा हम कोना मङनीमे लेबह ? मुदा तोँ पंखा छोड़ि दहक । एकर दाम कतेक होयतह से कहह ।'

सोमन बाजल – सरकार, बिकाइत तँ छैक छओ रुपैये जोड़ा मुदा अहाँ जे दऽ देबै सैह हमरा बहूत ।'

भद्रपुरुष जेबीसँ एकटा पचटकही निकालि कऽ सोमनकेँ देलथिन । सोमन ओ टाका लऽ कऽ भद्रपुरुष दिस कृतज्ञ भावसँ तकैत विदा भऽ गेल ।

[प्रकाशन- प्रवासी, इलाहाबाद]



गुलंजर

विराजपुर गामक पण्डित मनमोहनझाक अपन इलाकामे बड़ नाम छलनि । ओ विद्वान छलाह, पूजा-पाठ करैत छलाह । गामक विद्यालयमे संस्कृत शिक्षक छलाह । एक दिन पण्डितजी विद्यालयसँ अयलाह तँ हुनकर पत्नी विशेखसुन्नरि पैर धोयबाकलेल लोटामे पानि दैत आश्चर्यसँ आँखि बिदोड़ने कहलथिन– ऐ ! आइ एकटा तँ अजगुते बात सुनलिऐक अछि !'

पण्डितजी अन्यमनस्के जकाँ उत्तर देलथिन– कोन एहन बात सुनलिऐक अछि ?'

पण्डितजीक अनुत्साहपूर्ण स्वरसँ विशेखसुन्नरिक मोनमे कनेक तामस उठलनि, तथापि ओ तकरा दबौने पुनः मेंही स्वरमे कहलथिन– चम्पादाइक सासुरमे एकटा इनारमे भरि इनार दूध भऽ गेलैक अछि ।'

चम्पादाइ विशेखसुन्नरिक सुखपुरवाली जेठ देयादनीक ममियौत बहिनिक जैधी छलथिन । पण्डितजीकेँ ने तँ चम्पादाइक संग अपन सम्बन्धे बुझल छलनि आ ने यैह बूझल छलनि जे चम्पादाइक सासुर कतऽ छनि ।

पण्डितजीकेँ पत्नीक एहि गप्पमे कोनो तत्त्व नहि बुझयलनि । ओ एकरा मौगियाही फूसि बूझि बस 'हँ-हूँ' करैत पैर धोइत रहलाह ।

विशेखसुन्नरिकेँ पण्डितजीक पनिमरू उत्तरसँ अन्धैर्य भऽ रहल छलनि । ओ तँ सोचने रहथि जे पण्डितजी एहि अद्‌भुत समाचारकेँ सूनि कऽ कूदि उठलाह मुदा एतऽ तँ सबटा सुनियो कऽ पण्डितजीक लेखे धनि सन ! तथापि विशेखसुन्नरियो तँ हारि मानऽवाली नहि छलीह । ओ अपन स्वरकेँ कने ऊँच करैत गप्प आगाँ बढ़ौलनि– आइ भोरे बहिनदाइक भातिज आयल छलथिन सैह बजैत छलथिन ।'

जलपानक आसनपर बैसल पण्डितजी अपन थारीमे फुलायल चूड़ापर मुँहठी काटल आम गाड़ैत कहलथिन– ई सब फूसि-फटक थिकै । इनारमे कतहु दूध होइक ? ओ कोनो गाय-महिंस थिकैक ?'

विशेखसुन्नरि हुनक बात कटैत कहलथिन– से नहि कहियौक, ई बात फूसि नहि थिकैक ।'

पण्डितजी हँसैत कहलथिन– अरे अहाँ बताहि भेलहुँ अछि ! केओ छिट्टा भरि चून इनारमे खसा देने होयतैक, लोकके भेल होयतैक जे दूधे छैक ।'

विशेखसुन्नरि अपन गप्पपर पुनः जोर दैत कहलथिन– से नहि कहियौक । चम्पादाइक सासुरमे भरि गामक लोक डोले-डोल इनारसँ दूध उपछि कऽ अनैत अछि आ तसमै आ रंग-बिरंगक वस्तु बना कऽ खाइत अछि । जहिना-जहिना ई बात पसरलैक तहिना-तहिना आनो-आन गामक लोक सब इनारसँ डाबा, चपै, घैल आदिमे दूध भरि कऽ लऽ जाइत अछि ।'

पण्डितजी कने खौंझाइत सन व्यंग्य करैत कहलथिन– अहूँ आनब ?'

मुदा विशेषसुन्नरि एहिपर कोनो ध्यान देने बिना कनेक आरो लऽग सहटैत कहलथिन– किए नहि ? ओहि पानिक एकेटा खूबी रहैक तखन ने ! कहाँदन कहैत छैक जे ओहिसँ सब बिमारी ठीक भऽ जाइत छैक । अहूँके तँ बेसी काल पेट गड़बड़े रहैत अछि । हमहूँ दुखितहि रहैत छी । कोन हर्ज जँ थोड़ेक लऽ अबितहुँ ।'

पण्डितजी चुड़ू लऽ कऽ जलपानपरसँ उठैत कहलथिन– सत्तेमे अहाँ बताहि भऽ गेलहुँ अछि । केओ दूध-दूध कहि कऽ गुलंजर उड़ा देने होयतैक, तकरा अहाँ चरखी औँटने छी । एहि देशक स्त्रीगण जातिके भगवान कहिया बुद्धि देथिन से नहि जाइनि !'

आब विशेखसुन्नरिके एहि बातपर नहि रहल गेलनि । ओ गोंहछैत कहलथिन– एतेक लोक जे कहैत छैक से फुसिए छैक ? सब अपना आँखिए देखि अयलैक अछि आ अहाँ छी जे... ।'

ऐँठारपर हाथ अँचबैत पण्डितजी कने तमतमाइत जकाँ कहलथिन– के देखलक अपना आँखिसँ ? बजाउ तँ ओकरा । अनेरें तखनसँ व्यर्थक गप्प लऽ कऽ बतकुट्टनि कयने छी ।'

लगले विशेखसुन्नरि पण्डितजीसँ मुँहामुँही करयबाक लेल अपन जेठ देयादिनीकेँ बजबितथिन कि तावत दलानपरसँ केओ सोर कयलकनि आ पण्डितजी खड़ाम खटखटबैत बाहर चल गेलाह । विशेखसुन्नरिक मोन अपरतिभा गेलनि । अपन पतिक बोल हुनका बड़ रोखावह लागल छलनि तेँ ओ मुँह फुला लेलनि ।

मास दू मास धरि घरक एहने वातावरण बनल रहल । पण्डितजी आ विशेखसुन्नरिक बीच टोकाचाली बन्दे जकाँ रहलनि । पण्डिजीक आगाँ चुप्पे ओ भोजनक थारी राखि देल करथिन । ओ किछु मङथिन तँ मुँह सीने विशेखसुन्नरि ओ वस्तु हुनका दिस बढ़ा देथिन । क्वचिते-कदाचित् दुनू गोटाक बीच कोनो गप्प होइनि । विशेखसुन्नरिके एना बिरुझल देखि पण्डित मनमोहनझा चिन्तामे पड़ि गेलाह ।

एक दिन सबेरे पण्डितजी दतमनि कऽ कऽ आङन अयलाह । हुनका हाथमे एकटा कौआक पाँखि छलनि । चिन्तित मुद्रा बनौने पण्डितजी हाथमे कौआक पाँखि लेने अङनामे एहि कातसँ ओहि कात करऽ लगलाह । भानसघरसँ विशेखसुन्नरि हुनका देखलथिन । अङनामे पण्डितजीकेँ एना चकभाउर दैत देखि अन्ततः हुनका रहल नहि गेलनि । ओ लऽगमे आबि कऽ पुछलथिन– ई की थिक हाथमे ?'

पण्डितजी अपन मुद्रामे बिना कोनो परिवर्त्तन अनने गम्भीर स्वरमे कहलथिन– कुरुड़ करैत काल ई कौआक पाँखि खसल भेटल ।'

ओ घैलचीपर पाँखि रखैत विशेखसुन्नरिकेँ कहलथिन– एकरा एतहि रहऽ दियौक । ककरो कहबैक नहि ।'

विशेखसुन्नरिकेँ पण्डितजीक एहि रहस्यमय गप्पक कोनो अर्थ नहि लगलनि । हुनका मोनमे खुदबुदी पैसि गेलनि ।

पण्डितजी गेलाह विद्यालय । एमहर पनिभरनी बिलटामाय पानि भरऽलय बड़बड़ाइते पहुँचलि– एह, सलमपुरवालीकेँ बात कते नुकबऽ अबैत छनि । पुतोहुकेँ पंचमीक भार पठौथिन से सबटा कीन–बेसाह भऽ गेलनि, मुदा केओ बूझल ने ताकओ । हम सबटा चीज वस्तु देखि लितयनि तँ खोंटि कऽ राखि ने लितियनि । एह दाइ गे दाइ ! परजुआरिवालीक पेटमे केहन बहत्तरि हाथक अँतड़ी छनि ! दुनू माय–बेटी बैसि कऽ सियाइ–कढ़ाइ करै छली से हमरा देखितहि देरी घरमे नुका रखलथिन, जेना हमरा देखने देखाइन भऽ जैतनि । ई ककरो जेना बुझले ने छै जे अगहनमे बुचियाक दुरागमन होयतै । अनका आङनक गप्प कोना हुनका पेटसँ निकालऽ अबै छनि ! जेबनि तँ मेंहिया–मेंहिया कऽ समाद–बारी पूछऽ लगतीह । आब हमरासँ किछु पुछिहथि आ हम तखन कहबनि...।'

विशेखसुन्नरि ओकरासँ किछु पुछितथिन तकर कोनो अवसर देने बिना बिलटामाय चरचराइत घैलची लग पहुँचल । घैल उठौलक तँ कौआक पाँखि देखलक । ओकरा जेना सब पहिलुका बात बिसरा गेलैक । ओ अकचकाइत विशेखसुन्नरिकेँ पुछलकनि– मर एतऽ ई की राखल अछि अय गिरहथनी ?'

बिलटामायक मुँहसँ टोल भरिक समाद–बारी सुनबालय विशेखसुन्नरिक मुँह ललायले रहि गेलनि । ओ मुँह बिधुऔने कहलथिन– अय, ई बात ककरो कहबैक नहि । आइ अपने भोरमे कुरुड़ करैत छलथिन तखने कौआक पाँखि मुँहेपर खसलनि ।'

–सैह कहू तऽ' –एतेक कहैत बिलटामाय घैल लऽ कऽ झटकारने बिदा भऽ गेलि ।

इनारपर आनो–आन आङनक परिभरनी सब पानि भरैत छलैक । किछु लोक नहा रहल छल । किछु स्त्रीगण सब बरतन–बासन मँजैत छलीह । पण्डितजीक पनिभरनी

एकटा दोसर पनिभरनीकेँ आस्तेसँ कहलकैक–एकटा अजगुत बात बूझै जाइ गेलहीए ? आइ भिनसरे पण्डितजीकेँ जिभिया करैत काल मुँहसँ भट् दऽ कऽ एकटा कौआक पाँखि खसलनि !'

आश्चर्यसँ भरल ओ दोसर पनिभरनी आन–आन आङनमे जाय बाजलि जे– गुरुजी पण्डितक मुँहसँ फर्र दऽ कौआ बहरयलनि अछि ।'

सहे–सहे सौंसे गाममे काने–कान बियाबान होइत चल गेल जे– पण्डितजीक मुँहसँ फर्र–फर्र कौआ सब बहरयलनि अछि ।

साँझ धरि सौंसे गाममे ई बात पसरि गेल जे पण्डितजीक मुँहसँ फर्र–फर्र कौआ सब बहरा रहल छनि । बेचारे बेदम भेल पड़ल छथि ।

राति भरिमे लगपासक गाममे बात पसरि गेल जे विराजपुरक गुरुजी पण्डित मनमोहनझाक मुँहसँ फर्र–फर्र कौआ बहरा रहल छनि । ओ आब अबतबमे छथि । विराजपुर गाममे सौंसे कौए–कौआ भरि गेलैक अछि । ओ कौआ सब ततेक उपद्रव करैत छैक जे गामक लोक टाटी–फड़की लगा कऽ घरे–घर बन्द अछि । गामसँ लोकक पड़ाहि लागल छैक ।

राति बीतल । भोर भेल । पण्डितजी आध पहर रातिए बाध दिस चल गेलाह । एमहर गामक लोक जिज्ञासामे पण्डितजीक ओतऽ पहुँचऽ लगलनि । आन गामक लोक सभ सेहो आबऽ लागल । किछु लोक आयल छल विराजपुरक अपन सऽर–सबन्धीक जिज्ञासामे । बेसी लोक आयल छल ई देखऽ जे कोना पण्डितजीक मुँहसँ हजारक हजार कौआ फर्र–फर्र कऽ बहराइत छनि से देखऽ ।

विशेखसुन्नरिक जिज्ञासामे स्त्रीगण लोकनि आङनमे पहुँचऽ लगलथिन । आङन दलान, खरिहान आ बाटपर थहाथही लोक भऽ गेल । कतहु सुइ ससरबाक जगह नहि ।

पण्डितजी ने अङनेमे छलाह आ ने दलानेपर । बात लगले पसरि गेल– रातिमे कौआ सब पण्डितजीकेँ खोधि–खोधि कऽ खा गेलनि आ हाड़ सब लऽ कऽ उड़ि गेलनि ।

बात आङन धरि पहुँचल । कन्नारोहट उठि गेल । विशेखसुन्नरि छाती पीटि–पीटि कऽ हकरोस करऽ लगलीह– मुदैया कौआ हमरा उजाड़ि देलक रौ दैव ! हमरा पण्डितजीकेँ नोंचि कऽ खा गेलनि । हमरा अनाथ बना देलऽ हौ भगवान !'

स्त्रीगण लोकनि विशेखसुन्नरिकेँ सम्हारऽ लगलथिन । बाहरमे लोकसब बाजऽ लागल– पण्डितजी बड़ नीक लोक छलाह । बड़ अन्हेर भऽ गेल । मुदा पण्डिजीक पेटमे एतेक कौआ अयलनि कतऽसँ ?

जतेक मुँह ततेक रंगक गप्प होअऽ लागल ।

तावत पण्डितजी बाध दिससँ आबि गेलाह । लोक हुनका देखि अकचका उठल । तमासा देखनिहार हुनका एँड़ी अलगा-अलगा कऽ देखऽ लागल जे आब कौआ हुनका मुँहसँ बहरयतनि । लोक सब पण्डितजीकेँ पूछऽ लगलनि जे- पण्डितजी सूनल जे कौआ...!'

पण्डितजी बजलाह नहि । आङन गेलाह । चैलची परसँ कौआक पाँखि उठा कऽ बाहर दलानपर लेने अयलाह । लोक सबकेँ देखबैत कहलथिन- यैह काल्हि भिनसरे दतमनि करैत काल हमरा खसल भेटल छल और कोनो तेहन विशेष बात तँ नहि ।

पण्डितजी प्रश्नवाचक मुद्रा बनाय सभक मुँह दिस ताकऽ लगलाह जे एहन कोन बात भेलैक जे एतेक गोटे ठाढ़ छी ?'

ककरो किछु नहि फुरयलैक जे आब पण्डितजीसँ एहिसँ आगाँ की पूछल जाइनि आ हुनका की उत्तर देल जाइनि । लोक सब अपन-अपन सन मुँह लेने चल गेल । आङनो खाली भऽ गेल । पण्डितजी आङन गेलाह । विशेखसुन्नरिकेँ मुस्कियाइत पुछलथिन- ई जतेक बात सुनलहुँ से सब सत्ये छल, की फूसि ?'

विशेखसुन्नरि की बजितथि ? पण्डितजी कहलथिन- एहिना इनारक दूधवला गुलंजर फूसि छल से आब बुझलिऐ ?'

विशेखसुन्नरि हँसैत भानसघरमे जा कऽ नुका गेलीह ।

[लेखन- 1994]



मुदा आब की ?

आइ-कालिह अतिशय विद्या उपार्जनक पराकाष्ठा थिक लन्दन यात्रा । पढ़ू वा नहि 'पढ़ू' मुदा लन्दनसँ भऽ आउ तँ भऽ गेलहुँ 'लन्दन-रिटर्न' । एहूमे केओ नाकर नूकर करत ?

भागिरथ पढ़ैत छलाह दसम वर्गमे, बड़े-बड़े मनसूबा अपना अन्तःकरणमे रखने । एना पढ़ब, ओना पढ़ब, आइ.ए., बी.ए., एम.ए. करब, आ अन्तमे देखऽ लगैत छलाह लन्दनक मधुर स्वप्न...।

मनुष्य जखन एक बेर नियतिक क्रूर चपेटमे पड़ि जाइछ तँ ओहिसँ निस्तार पौनाइ बड्ड कठिन भऽ जाइत छैक । मनुष्य जीवनक उभर-खाभर एकपेड़िया धयने चल जाइत रहैत अछि। ओ सौंसे बाटकेँ एके दृष्टिजे नहि देखि सकैत अछि, किएक तँ पृथ्वी गोल छैक । ओहि मनुष्यकेँ कोन पता रहैत छैक जे एहि बाटमे झाड़-झंखाड़ छैक वा ई प्रशस्त पथ अछि । के जाय ? एहि बाटक सभ बटोही तँ अनुभवहीन एवं अनभिज्ञे रहैत अछि । जे केओ ई बाट धऽ कऽ जाइत अछि से की पुनि घूमि कऽ अबैत अछि ? उँ हुँ ! प्रकृति अपन भेद फुजबाक डरेँ ओहि बाटेँ ककरो कि आबऽ दैत छैक ? बुद्धिमान लोक अपना पाछाँ किछु चेन्ह छोड़ने जाइत अछि, मुदा ओ चेन्ह कम्मे गोटेकेँ दृष्टिगोचर होइत छैक । ओहो दृष्टिगोचर होइत छैक तखन, जखन ओ चूकि जाइत अछि अथवा विनाश जखन माथपर चिल्होरि जकाँ मड़राइत रहैत छैक । जे केओ ओहि चेन्हक अनुसरण कऽ दूरदर्शिताक परिचय दैत अछि ओ किछु अंश धरि 'ओकर' भेद बूझऽ लगैत छैक, मुदा कालक गालमे चल जाइत अछि । ओहि बाटमे कतहु छैक उँच-उँच टिल्हकी आ कतहु छैक गहींर खाधि ।

जा रहल छी; ठेस लागल; खसि पड़लहुँ; नाक थकुचा गेल । मुँह भऽ गेल सिलपट्ट ।

पैर उठौलहुँ ...आ, ...अनचोकेमे... चभ्भ दऽ खसि पड़लहुँ सय हाथ निच्चाँ ।

हदास उड़ि गेल... हड्डी-पजरी टूटि गेल । आब पड़ल रहू ओहिमे अनन्त काल धरि । जँ उठबाक चेष्टा कयलहुँ तँ भाग्यक चमेटा तैयार अछि । जँ अविरल साधनाक बाद भाग्यपर विजय पाबि बहार भऽ सकलहुँ तँ रूप रहित, आन्हर, लुल्ह, बहीर, नाङर ।

ओहि पथपर पैर रखबासँ पूर्व ओकर कल्पना मात्र रहैछ । ओहिमे दुःख-दैन्यक लेशो-मात्र नहि रहैत छैक । मुदा प्रत्यक्ष आ परोक्षमे बहुत अन्तर होइत छैक ।

भागिरथ छलाह मैट्रिक पास, छोटसन बैंकक एक सामान्य लिपिक । ओकर कतहु हस्ती नहि, किछु महत्त्व नहि ।

विद्यार्थी जीवनमे लोक जखन रहैत अछि तँ ओ कल्पनालोकमे बिहरैत रहैत अछि। किन्तु प्रवेशिकाक बाद जखन ओ जीवन क्षेत्रमे प्रवेशपत्र भरैत अछि, तखन ओकरा हृदयमे यथार्थताक प्रवेश होइत छैक । साधारणतः मध्यम वर्गीयलोकक परिभाषा यैह थिकैक।

टेस्टक तीन मास बाँकी रहैक कि भागिरथक वालुकामय भीत ढहि गेलनि । पिताजी अनचोकेमे चलि देलथिन । दू बेरक हिचुकीमे ।

भागिरथक पिताजी छलथिन वैद्य, जकर आइ-काल्हिक 'आला' बलाक आगाँमे किछु महत्त्व नहि । लेबुल लागल शीशीक आगाँमे पुड़ियाक कोनो मोल नहि । 'सोडी-बाइ-कार्ब'क आगाँमे 'लवण-भास्कर'क कोन महत्त्व ? कोट-पैन्टक आगाँमे पाग-डोपटाक कोन गनती ?

हुनका कोनो तरहक चल-अचल सम्पत्ति नहि छलनि । बस, लूटि लाउ कूटि खाउ ।

हँ ! भागिरथक मायकेँ छलनि किछु कोसल आ पत्नीकेँ छलनि दू-चारिटा गहना। बस !

भागिरथ पड़ि गेलाह सम्पूर्ण बालुकामयी मरुभूमिमे, जाहिमे एकटा बबूरोक गाछ सहजे नहि देखना जाइत छैक । ओ पड़ि गेलाह फटकफन्दमे । कोना कऽ देताह 'टेस्ट' आ 'फाइनल' । जेहो किछु धयल-धरोहर छलनि से खर्च भऽ गेलनि पिताक श्राद्धमे ।

कहाँ तँ बी.ए., एम.ए. आ कहाँ टेस्टोमे घिच्चातीरी !

लोक जखन कठोर भूमिसँ गुलगुलपर जाइत अछि तँ देह तलमलाइत छैक आ जँ गुलगुलसँ कठोर भूमिपर अबैत अछि तँ पयरे छिला जाइत छैक । मुदा शनैः शनैः अभ्यास भेलापर तँ ओकरा रेहल-खेहल भऽ जाइत छैक ।

भागिरथ पत्नीक गहना गुड़िया बेचि-बिकीनि कऽ मैट्रिक पास कयलनि । ट्यूशन कऽ आगाँ पढ़बाक हेतु विचारलनि । मुदा घरमे दूटा निरीह प्राणीक की करताह ? मुँह बान्हि कऽ तँ मारि नहि देथिन ?

अन्तमे हारि-थाकि कऽ हुनका कोनहुना कऽ एक लिपिकक कार्य भेटलनि एकटा छोट छीन बैंकमे । सेहो बड़ कठिनतासँ । मनोनुकूल काज जँ होइत जैतैक तँ संसारमे एतेक निराशा नहि रहितैक । निराशाक जन्मे ने होइतैक ।

दस बर्षक बाद ।

बैंकक मनेजर नवे बदलि कऽ आयल छल ।

भागिरथक हाथ टाइपपर पड़ि रहल छलनि निश्चित रूपेण खट्...खट्...खट्...

ओहि दिन हुनक मन उद्विग्न छलनि । ओ पाँच बजबाक प्रतीक्षामे छलाह । एक एक पल युग-युग भरिक बुझाइन । वास्तवमे प्रतीक्षाक क्षण बड़ नमहर होइत छैक ।

पाँच बजलैक आ ओ छत्ता लऽ कऽ विदा भेलाह घर दिस । तखनहि पाछाँसँ रोबगर शब्द सूनि पड़लनि । ओ मनेजर छल जे कहि रहल छलनि कोनो बिल्टीकेँ ठीक कऽ जयबाकलेल । हुनका देहपर बूझू तँ वज्रपात भऽ गेलनि । भागिरथ ओकरा दिश ताकि रहल छलाह कसाइ हाथक गाय जकाँ । ओ कहलथिन– देखू ! छुट्टीक आवेदन पत्र देलहुँ मुदा छुट्टी नहि भेटल । आब समयोपर तँ जाय दिअऽ ।'

–हम किछु नहि सूनब ।' मनेजरक कर्कश स्वर छल ।

–हमर ननकिरबी आ ओकरा मायकेँ मिआदी ज्वर लागल छैक ।' किछु दीन स्वरेँ बाजि रहल छलाह– हमरा मायक आँखि कमजोर छनि । एकटा हमहीं छी । तखन अहाँकेँ जे नीक लागय से करू, हम की कहि सकैत छी ?' ई कहि ओ मनेजर दिश ताकऽ लगलाह ।

मनेजर बाजल– पहिने एहि ठामक काज कऽ दिऔक तखन कतहु जायब ।'

भागिरथक आँखि तँ क्रोधसँ रक्तिम भऽ गेलनि मुदा करताह की ? छथि परवश । –जे किछु करबाक हो से करू ।' ई कहि ओ घर कऽ विदा भऽ गेलाह ।

अधिकारसँ आन्हर व्यक्ति अपन आज्ञाक अवहेलना कोना सहि सकैत अछि ! ओ 'हूँ' कहैत तड़पि कऽ डिशमिशक परवाना लीखि चपरासी द्वारा भागिरथकेँ पठा देलकनि । चपरासी तखनहि दौड़ि कऽ बाटेमे हुनका हाथमे परवाना धरा देलकनि ।

भागिरथ परवाना देखितहिं धक्... दऽ रहि गेलाह । तैओ हुनका एहिसँ आश्चर्य नहि भेलनि । हुनकर हृदय विद्रोह कऽ उठलनि । ओ विचारऽ लगलाह– हम ओकर की बिगाड़ने छलिऐक ? यैह ने जे ओकर कहल नहि कयलिऐक । ओकरा ड्यूटीक अलावा आज्ञा देबाक कोने अधिकार छैक ? कतेक दिन नौ बजे राति तक काज करैत छलियैक तकर सोह ओकरा किएक नहि रहलैक ? जाहि ठाम ककरो जीवनक प्रश्न होइक, ताहि ठाम की ओकर यैह कर्त्तव्य थिकैक ? ओकरा ककरो जीवनक संग खेलौड़ि करबाक कोन अधिकार छैक ?' ई विचारैत-विचारैत हुनक दुहू मुट्ठी जोरसँ बन्हा गेलन्हि ।

मुदा फेर हुनका मनमे, जीविकाक प्रश्न गोहारि कऽ उठलनि जे 'चलि कऽ क्षमा माङि ली' किन्तु हुनक स्वाभिमान विरोध कऽ देलकनि– 'एहन क्रूरसँ क्षमा माङब अनेरे मुँह खोलब होयत । एहिसँ बढ़िञा होयत जे घरेमे अन्न-अन्न कऽ मरि जाइ । जान रहत तँ जहान अछि ।' आ हुनक हृदय मनेजरक प्रति घृणासँ भरि गेलनि ।

विचारबाक तँ विचारि गेलाह मुदा आगाँ की होयत ? ई विचारितहिं हुनकर आँखि भरि गेलनि । ओ उन्मन भऽ आकाश दिशि तकैत चलऽ लगलाह आ तखनहिं ठेस लगलनि, खसैत-खसैत बचलाह । देखैत छथि तँ घर आबि गेल छलनि ।

मास दिनक बाद ।

मनेजर आफिस चल अबैत रहय । बाटमे देखलकैक शव-यात्रा । एके चचरीपर चारिटा शव छलैक जे शिवक 'इ'कार छोड़ि चुकल छल ।

ओ छल भागिरथक परिवार जे मास दिनसँ अन्न-पानि बिना अहुरिया काटि कऽ एक चुटकी अन्नलेल काहि काटि कऽ अपन प्राण विसर्जन कऽ देलक । मनेजरक अन्तरसँ केओ कहलकैक 'एकर कारण तोँही छही ।' ओकरा हृदयमे अन्तर्द्वन्द्व होअऽ लगलैक । ओ विचारऽ लागल– की एहि मृत्युक कारण हमही छी ?... हमरे कारण ई सभ प्राण त्यागलक अछि ?... ऊँह ! हमरा कारणेँ ई सभ किएक प्राण त्यागत ? यैह ने जे हम नोकरीसँ हटा देलियैक । किन्तु जे काज नहि करतैक तकर नोकरी तँ छुटबेक चाही । ओ आज्ञाक उल्लंघन कयलक, टेढ़ भऽ गप्प कयलक, तखन जँ हम नोकरीसँ हटा देलिऐक तँ कोन अन्याय कयलहुँ ?'

किन्तु ओकर आत्मा एहि तर्ककेँ मानबाक हेतु प्रस्तुत नहि छलैक । ओकर आत्मा एहि तर्ककेँ स्वीकार नहि कयलकैक । ओकर आत्मा ओकरा धिक्कारऽ लगलैक– की, ओ यदि निर्धारित समयपर घर जाय चाहलक तँ ई नियमक उल्लंघन भेलैक ? जाहि दिन नौ बजे राति धरि काज करैत छल ताहि दिन की होइत छलैक ? ओकर छुट्टीक आवेदन पत्र किएक नहि स्वीकृत भेलैक ? ओ भागिरथक प्रति एतेक क्रूर किएक भऽ उठल ? डिशमिश करैत काल ओ भागिरथक जीविकाक प्रति किएक नहि बिचारलक ? की मानवताक प्रति ओकर किछु कर्त्तव्य नहि छैक ? अधिकारक यैह उपयोग थिकैक ? निरीह मानवक हत्या ? मानवता ओकरा कहिओ क्षमा कऽ सकैत छैक ? एहि शव-यात्राक आयोजन कयनिहार की वैह नहि थीक ? भागिरथ भाग्य द्वारा नहि प्रत्युत मनुष्यक क्रूर हाथेँ ममोड़ि देल गेल अछि ।' ई विचारितहिं मनेजरक आगाँमे भागिरथक आर्द्र आँखि नाचि गेलैक । ओकरा अपना प्रति घृणा होअऽ लगलैक । ओ शव दिश देखलक । कदाचित् ओ क्षमा कऽ दैक, मुदा ओ तँ निर्जीव छल ।

मनेजरक हृदय आत्मग्लानिसँ भरि गेलैक । ओकरा आँखिसँ पश्चात्तापक नोर बहऽ लगलैक । ओ प्रायश्चित्तक हेतु अपन कान्ह ओहि चचरीसँ भिड़ा देलक । मुदा आब की ?

[मिथिला मिहिर, 25 जुलाइ, 1953]



दू ठोप नोर

कान्तिनाथक द्वितीया पत्नी माहेश्वरी आइ हुनकासँ आग्रह कऽ रहलि छलथिन जे ओ गिरीशकुमारकेँ मातृकसँ आनि देथि ।

कान्तिनाथक प्रथम पत्नी राधा अत्यन्त सुशीला विदुषी महिला छलीह । हुनका मुँह पर हरदम मृदु हास्य केलि करैत रहैत छलनि । कान्तिबाबू जखन थाकल–मारल कचहरीसँ अबैत छलाह तँ हुनका राधा शीघ्र हँसा कऽ प्रसन्न कऽ लैत छलीह । किछु दिनक बाद हुनका एकटा बेटा भेलनि । ओहि नेनाक लालन–पालन होइत छल बड़ ठाठसँ । दूहू रहैत छलाह विभोर । मुदा विधाताकेँ ई सुख नहि देखल गेलनि । ओ राधा सन अनुपम नारीसँ अपने लोककेँ सुशोभित करबाक लेल तरसि उठलाह ।

मरैत काल राधा कान्तिनाथकेँ कहने छलथिन जे– हमर स्मृतिकेँ जोगा कऽ राखब ।' आ ई कहि ओ गिरीशक हाथ धरा देलथिन । कान्ति अधीर भऽ गेलाह । ओ गिरीशक माथ हँसोथि कऽ छातीमे सटा लेलथिन । फेर राधा कहलथिन– हमरा धरोहरकेँ सुरक्षित राखब, यैह हमर कामना अछि ।' ई कहि हुनक प्राण पिजरासँ बाहर भऽ गेलनि । कान्तिनाथ पछाड़ खा, खसि पड़लाह । अर्राहटि मारि कऽ कानऽ लगलाह । ओहि कालमे गिरीश छल दुइ वर्षक । ओ बकर–बकर मुँह तकैत रहल छल ।

लोक सभ हुनका फेर बिआह करऽ कहलकनि मुदा ओ 'हुँ'कारी नहि दैत छलथिन । ई नहि बूझू जे हुनक अवस्था बीति गेल छलनि, से तँ हुनक एखन सताइसे–अठाइसम वर्ष छलनि प्रत्युत ओ गिरीशक मुँह देखि कऽ बिआह नहि करैत छलाह ।

कहैत छैक जे बिनु घरनीएँ घर नहि, आ बिनु हरबाहे हर नहि । अतः हुनका लाचारी विवाह करऽ पड़लनि, माहेश्वरीसँ । ओ बुझैत छलाह जे ओ गिरीशक लेल काँट रोपि रहल छथि । किएक तँ सौतिनिआ डाह नामी छैक । मुदा करताह की ? अन्तमे ओ तत्कालकलेल गिरीशके ँ मातृक पठा देलथिन ।

माहेश्वरी छलीह साढ़े पन्द्रह वर्षक कन्या । अबितहि ओ गृहिणीक कार्यमे संलग्न भऽ गेलीह । एखन धरि हुनक शील, स्वभाव, आचार, व्यवहार आक्षेप करबा योग्य नहि छल । सासु नहिओ रहला उत्तर हुनका आइ धरि केओ नहि देखने छलनि । किन्तु के जानय ? लोकक धारणा छैक जे नारीक स्वभावकेँ देखिए कऽ परीछि लेब असम्भव थीक । ओ गिरगिट जकाँ रंग बदलैत रहैत अछि ।

साढ़े पाँच वर्ष बीति गेल । माहेश्वरीकेँ एको सन्तान नहि भेलनि । जहिआ ओ सुनलनि जे हुनक 'सुपारी' केँ चारि पाँच मासक बेटा छनि तहिआसँ हुनक मातृभावना छटपटा उठलनि । किन्तु हुनका सन्तोष छलनि जे अपना नहि तँ सतौत तँ अछि ।

ओ विवाह दिनसँ आइ धरि कतेको बेर कान्तिनाथसँ कहने होयथिन जे गिरीशकेँ आनि दिअऽ मुदा कान्तिनाथ हँसि कऽ टारि देथिन– अच्छा, अयबे करतैक की !'

पाँच वर्षक भीतर ओ एकोबेर गिरीशकेँ गाम नहि अनलथिन । कहिओ-कहिओ कऽ अपनहिँ देखि अबैत छलथिन । हुनका डर छलनि सौतिनिकाँटक ।

आइ ओ जिद्द धयने छलीह गिरीशकेँ अनबाकलेल । एतेक धरि जे ओ खयनाइ-पिउनाइ सेहो छोड़ने छलीह ।

सत्याग्रहक आगाँ कान्तिनाथकेँ झूकऽ पड़लनि । ओ गिरीशकेँ लऽ अयलाह । एह ! माहेश्वरीकेँ बूझू तँ भुतिआयल निधि भेटि गेलनि ।

गिरीश आयल, मुदा ओ स्थान तँ ओकरालेल नवीने छलैक । ओ कान्तिक सङ्गे खा लैत छल, आ फेर हुनके कोठलीमे जा कऽ सूति रहैत छल । एम्हर माहेश्वरीकेँ मन छटपटाइत रहैत छलनि ओकरा कोरमे लेबाक हेतु । मुदा भरि दिन तँ गिरीश कतहु देखाइये ने दैत छल । ई दिन एहिना बीति गेल । माहेश्वरी चारू दिशि ताकि आबथि कतहु गिरीशक पते नहि । खाली कान्तिनाथवला कोठली बन्द रहैत छल ।

ओ बुझैत छलीह जे 'वैह' बन्द कऽ गेल होयताह । गिरीशो हुनके सङ्ग गेल होयत । हुनक नजरि जँ जिंजिरपर जैतनि तँ सभ भेद फूजि जाइत, मुदा से नहि भेल ।

तेसर दिन गिरीशकेर भेदक पता लागि गेलनि माहेश्वरीकेँ । किन्तु गिरीश तँ हुनका देखितहिं पड़ा जाइत छल ।

कान्तिनाथकेँ एखन आफिसक एतेक काज भऽ गेल छलनि जे ओ एहि सभक विषयमे किछु पुछबे बिसरि गेलथिन ।

पाँचम-छट्ठम दिन माहेश्वरी फेर गिरीशकेँ तकबाकलेल बिदा भेलीह । देखैत छथि जे कान्तिबला कोठली फूजल छल । गिरीश आइ केबाड़ लगायबे बिसरि गेल छल । ओ निमग्न भऽ कल्याणक विशेषांक देखि रहल छल, जाहिमे बड़े आकर्षक चित्र सभ छलैक ।

माहेश्वरी पैर दबने मोख लग गेलीह जे ओ कत्तहु फेर ने पड़ा जाय । ओ माहेश्वरीकेँ देखितहिं पड़ाय लागल मुदा माहेश्वरी झट डेन पकड़ि लेलथिन । ओकरा कोरमे बैसा कऽ चूमि लेलथिन । गिरीश आफन तोड़ैत रहल पड़यबाकलेल ।

–हमरा छोड़ि दिअऽ ।' ओ देह मचोड़ैत बाजल ।

—बौआ ! अहाँ मायकेँ नहि चिन्हलहुँ ?' बड़े प्रेमसँ चुमकारैत कहलथिन— हम अहाँक माय छी ।'

—माय !' आश्चर्यित होइत गिरीश बाजल आ हुनक मुँह ताकऽ लागल जेना ओकरा विश्वासे ने होइक । विश्वासो कोना होउक ? ओ तँ चिरकालहिं सँ 'माय' शब्द एवं ओकर वात्सल्य आ प्रेमसँ अपरिचित छल ।

—हँ, हँ ! हमहीं छी अहाँक माय ।' कनेक थम्हि कऽ— अयनामे देखा दिअऽ ।' ई कहि माहेश्वरी अयना उठा अनलनि । गिरीश उत्सुक छल । माहेश्वरी आगाँमे अयना राखि देलथिन ।

—आब मिलाउ तँ अपन मुँह आ हमर मुँह !

गिरीश की जानऽ गेल दूटा मुँहमे सामञ्जस्य स्थापित करब । ओ पुलकित होइत बाजल— अच्छा, कहू तँ, अहाँ एतेक दिन धरि किएक पड़ा गेल छलहुँ ?' ओ ठुनकैत माहेश्वरीक छातीपर माथ राखि देलक आ पैर झुलाबऽ लागल । ओकरा मुँहपर अलौकिक आभा छलैक ।

—अहाँक बाबूजी, हमरा बइला देने छलाह । तकरा बाद आइये अहाँसँ भेंट भेल अछि ।' उत्तर देलथिन माहेश्वरी आ पुचकारैत पुछलथिन— अहाँकेँ मन नहि अछि ? मोन पाड़ू तँ— अहाँक बाबूजी जे हमरापर तमसायल रहथि से ?'

आठ साढ़े-आठ वर्षक भेलो उत्तर, स्मृतिक एक क्षीण रेखा शेष छलैक एकदम धूमिल, गिरीश जकरा बुझबासँ असमर्थ छल— अच्छा आब तँ ने पड़ायब ?' माहेश्वरीक आँचर ऐंठैत ओ बाजल ।

—अहाँ तँ ने मातृक पड़ायब ?' हँसि कऽ ओकरा चूमैत कहलथिन माहेश्वरी ।

—नहि ।' लजा कऽ आँचरसँ मुँह नुकबैत बाजल गिरीश । माहेश्वरीक आँखिसँ हर्षक नोर खसि पड़लनि । माहेश्वरी अपन मातृत्व उझीलि देलनि गिरीशक ऊपर । गिरीश नेहाल भऽ गेल माय पाबि कऽ । थोड़बे कालमे एहि तरहेँ हिलि-मिलि गेल जे बुझाइत छल जेना ई सम्बन्ध युग-युगक हो ।

दोसर दिन कान्ति गिरीशकेँ अपना लगमे बजौलथिन, ओकर नव परिचिता मायक विषयमे पुछबाक हेतु । किन्तु ओ अबितहि दाबी दऽ देलकनि जे— अहाँ हमरा मायकेँ किएक बइला देलहुँ ? ओ काल्हि कनैत छलीह ।' ई कहि ओ विजयी जकाँ ताकऽ लागल पिताक दिश । जहिना ओ हाथ बढ़ौलथिन ओकरा पड़कबाक लेल, गिरीश पड़ा गेल माहेश्वरी लग । माहेश्वरी केबाड़क दोगमे ठाढ़ि भेलि हँसैत छलीह । हर्षसँ कान्तिनाथक आँखिसँ दू ठोप नोर खसि पड़लनि ।

पता नहि कथीक छल ओ नोर ।

[मिथिला मिहिर, 15 अगस्त, 1953]



माय भूख लागल

चल अबैत छल बिचारैत– चारि आनामे पाँच प्राणीक एको साँझ भोजन भऽ सकैछ ? एको गोटेकें नहि भऽ सकैत छैक तँ पाँच गोटेकें कोना कऽ हेतैक ? ऊँटक मुँहमे जीरक फोड़न हेतैक । जाहि ठाम दू रुपैया खर्च, ताहि ठाम चारि आनासँ की ? तखनहिं फेकनाकें ठेस लगलैक । ओ सचेत भऽ-चलऽ लागल, किन्तु फेर ओही विचारमे तल्लीन भऽ गेल । डेग बढ़ितहिं जाइत छलैक ।

फेकना काज करैत छल गोल भट्ठापर । ईंटा पथैत छल । किन्तु काल्हि ईंटा पाथब बन्द भऽ गेलैक, किएक तँ गोल भरि चुकल छलैक आ मेघक डर छलैक ।

ठिकेदार छलैक सिन्धी । ओ अजुके नाम कहने छलैक फेकनाकें हिसाब लऽ जयबाक लेल । फेकना ओतऽ गेल छल । हिसाब कयला उत्तर ओकर भेलैक पच्चीस रुपैया, बीस दिन काज कयने छल ओ ।

फेकना आसा–आसीमे छल जे आइ तँ रुपैया भेटबे करत । जा कऽ पहिने भरि छाँक ताड़ी पीबनि । तखन एम्हरेसँ सेर भरि माछ लऽ लेबनि । दू दिनसँ सहैत छी तकरा बदलामे आइ भरि पोख खयबनि ।' किन्तु ओकर आशा तखने झन–झना कऽ सीसाक माली जकाँ टूटि गेलैक जखन, ओ सिन्धी घरसँ बाहर भऽ कहलकैक– ए साब ! आठवें रोज मिलेगा ।'

ई सुनितहिं ओकर आँखि जे एक–एक आङुर धसल छलैक... चाहलकैक जे एके बेर बाहर भऽ जाइ । ओ विस्फारित आँखिजे सिन्धीकें देखऽ लागल । ओकर आशाक महलपर अनभ्र बज्रपात जेना भऽ गेल छलैक । ओकरा मस्तिष्कमे वैह बात नाचऽ लगलैक जे आठ दिनक प्रतीक्षा ! आठ दिन आठ मासक बरोबरि । घरमे एकटा दाना नहि ।' ओकरा बुझयलैक जेना चाउन्हि लागि जयतैक । किन्तु ओ सम्हरि गेल । एक बेर अपन करुण स्वरकें अजमौलक– बाबू किछु देल जाओ ।'

सिन्धी मुँह घुमबैत कहलकैक– अभी कुछ नहीं ।'

–बाबू दया कयल जाओ...'

–बदतमीज कहीं का ! तंग मत करो । अभी नहीं है ।' फेकना दोसर बेर साहस

करैत बाजल– कमायले पाइ तँ मङैत छी ।'

सिन्धी 'कमीना' कहि फेकनाकेँ एक बेंत कसि कऽ मारलकैक । फेकना लोहछि गेल ।

सिन्धी जेबीसँ चौअन्नी फेकैत कहलकै– 'ल्यौ, नमक हराम कही का ! कपार खाने लगता है ।' ई कहि ओ भीतर चल गेल ।

फेकना डेराइत डेराइत चौअन्नी उठा लेलक आ वेदनासँ त्रस्त भऽ बिदा भऽ गेल घर दिश ।

दुःखकेँ बिसरबाक हेतु किछु उपाय चाही । निसाँमे लोक किछु कालक हेतु दुःख बिसरि जाइत अछि आ एहि वर्गक हेतु साधन छैक ताड़ी । फेकना विचारऽ लागल जे जाकऽ एकर ताड़ी पीबि ली । घरक ध्यान अयलैक तँ विचारलक जे नहि पीबी ।

एही छौ–पाँचमे छल कि पसीखाना आबि गेलैक । ओ अमलपर अधिकार करबाक हेतु दोसर दिश मुँह घुमा कऽ झटकि कऽ चलऽ लागल ।

किन्तु तखनहि ताड़ीवालीकेँ ओकर नाम धऽ कऽ सोर पाड़ैत सुनलकैक । ओ आरो जोरसँ चलऽ लागल । तैओ ताड़ीवाली ओकरा आगाँमे आबि गेलैक आ कहलकैक– को हौ पाइ देबाक नेत नहि होइत छह ? हऽहऽ मास दिन हो गेलै । पियैत कालमे हपसि कऽ पीताह आ दैत कालमे कान्हू लगैत छनि !'

फेकना डेरा गेल । ओकर दू आना पाइ फेकना ओतऽ बाँकी छलैक । ओ डेरा कऽ पाछाँ हटि गेल । किन्तु ओ फेकनाक गोल गलावला गंजीक जेबीमे हाथ दऽ देने छलैक । फेकना जा धरि ओकरा रोकैक–रोकैक ता धरि तँ ओ चौअन्नी निकालि कऽ बिदा भऽ गेल छलि । फेकना ओकरा सोर पाड़लकैक– गे सून गे ! गे सून गे !'

किन्तु के सुनैत अछि ? ओ तँ चल गेल अपन दोकानपर ।

फेकना विदा भऽ गेल हृदयक द्वन्द्व लेने । ओकरा हँसी लागि गेलैक जे अगहनमे मूसोकेँ दूटा बहु होइत छैक, किन्तु एतऽ तँ ठीक–ठीक अगहन मासमे एकोगोटाक पेट भरब कठिन अछि ।

साँझ भऽ गेल छलैक, मुनहारि साँझ । लोक खेतसँ घूमि रहल छल । जन सभक माथपर धानक बोझ छलैक ओहिसँ झन–झन ध्वनि बहार भऽ रहल छलैक ।

फेकना घर पहुँचल । देखलक आगि–काठीक कतहु पते नहि । धीआ–पुता हल्ला करैत छलैक– 'माय खाइलय दे ने, भूख लागल अछि ।'

फेकनाक हृदय ई स्वर सुनितहिं बैसि गेलैक । कोना कऽ ओकरा सभकेँ चुप करितैक ओ !

ओ छाती कठोर कऽ कहुना कऽ सोर पाड़लकैक– खखना माय !'

खखना माय ओकर स्वर सूनि कऽ आशासँ पूरित भऽ फेकना दिश दौड़ि कऽ अयलैक– की सभ अनलकैक अछि ? भानस चढ़बियै गऽ ?'

किन्तु ओकर स्वर मन्द पड़ि गेलैक जखन फेकनाक हाथमे किछु नहि देखलकैक। ओ पुछलकैक– की भेलैक ?

–आठम दिनक नाँव कहलकैए ।' ई कहि ओ बिनु पैर धोने ओछौनपर जा कऽ पड़ि रहल । खखना मायकेँ पुछलकैक– 'तोरो बोनि भेटलौक कि नहि ?'

–नहि ।' व्यथित स्वरेँ खखना माय कहलकैक– गिरहथ कहलथिन की जे एखन चोरहो बेसी होइत छैक आ जन नहि भेटैत रहैत छैक बेसी । से जखन हमर सभ धान कटि जायत तखन एके बेर बोनि चुका देबौक ।'

–कतेक दिन लगतैक ?'

–आठ दिन ।'

फेकना जेना आकाशसँ खसल । कहलकैक– दोसर ठाम धान नहि काटि सकैत छेँ ?'

–कोना छोड़ि देबैक ? पाँच दिनुक काटल धान अछि । कमसँ कम आधो मोन धान झड़बै करतैक । आ सन्तोखो करितहुँ मुदा गिरहथकेँ चीन्है नहि छहुन । मारबामे निदरदी छथिन ।' ई कहि ओ चार दिश ताकऽ लागलि ।

तखन ? हम दुनू गोटे तँ सहिओ जायब, मुदा खखना, मखना आ छितनीकेँ की करबीही ?' फेकना कम्पित स्वरेँ पुछलकैक ।

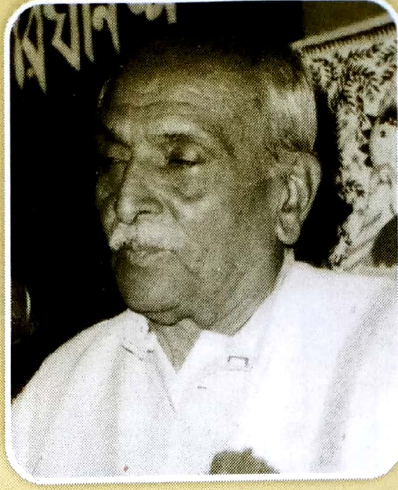
–जे भगवान करबथिन्ह ।' एतेक कहि ओ खेन्हड़ीसँ मुँह झाँपि लेलक ।

–हा विधाता...!' कहैत जहिना ओ केत्थासँ मुँह झाँपऽ लागल कि तीनू छौंड़ा-छौंड़ी एके बेर झौहरि कऽ उठलैक, –बाबू खाइलय' ।

'माय भूख लागल...।'

[निर्माण, 4 सितम्बर, 1954]





श्रीरामदेवझा

जन्म : 3 मइ 1936 इ.

अपन मातृक सहोरा (दरभंगा)मे

मैथिलीमे सन्धियुग (1950-60)सँ कथायात्रा प्रारम्भ कऽ अद्यपर्यन्त अविराम गतिएँ कथा लेखन करैत रहनिहार कथाकार रामदेवझाक कथाक अपन एकटा पृथक संसार छनि। कोनो वाद, गुट आ गठजोड़सँ फराक रहि अपन पथ स्वयं बनबैत, मैथिली कथाक देशज संस्कार ओ परिचितिकेँ अक्षुण्ण रखैत, अपन नैसर्गिक चिन्तन, अपन स्वस्थ ओ रचनात्मक दृष्टिबोध, मिथिलाक शस्य-श्यामला माटि-पानिक सोन्ह सुगन्धिकेँ समेटने, मिथिलाक ठेँठ ग्राम्य शब्दावली, लोकोक्ति ओ भाखाकेँ अकुंठ भावसँ साहित्यिक मर्यादा प्रदान करैत, समाजक उपेक्षित-अवहेलित समुदायकेँ साहित्यक मुख्यधारामे प्रतिष्ठापित करैत हिनक कथा-कर्म पाठककेँ 'तिले-तिले नूतन होय' सन आस्वादन दैत रहल अछि। पछिला छओ दशकसँ सर्जनरत रहि मैथिली कथा-यात्राकेँ एकैसम शताब्दीमे पहुँचौनिहार रामदेवझाक कथाक नवीनतम संग्रह थिकनि- आजी माँ।



मिथिला रिसर्च सोसाइटी

दरभंगा